CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री विश्वेश्वरः शरणम्
वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

श्रीवल्लभराम शालिग्राम साङ्गवेद विद्यालय

एवं

औषधालय

नं० ३१

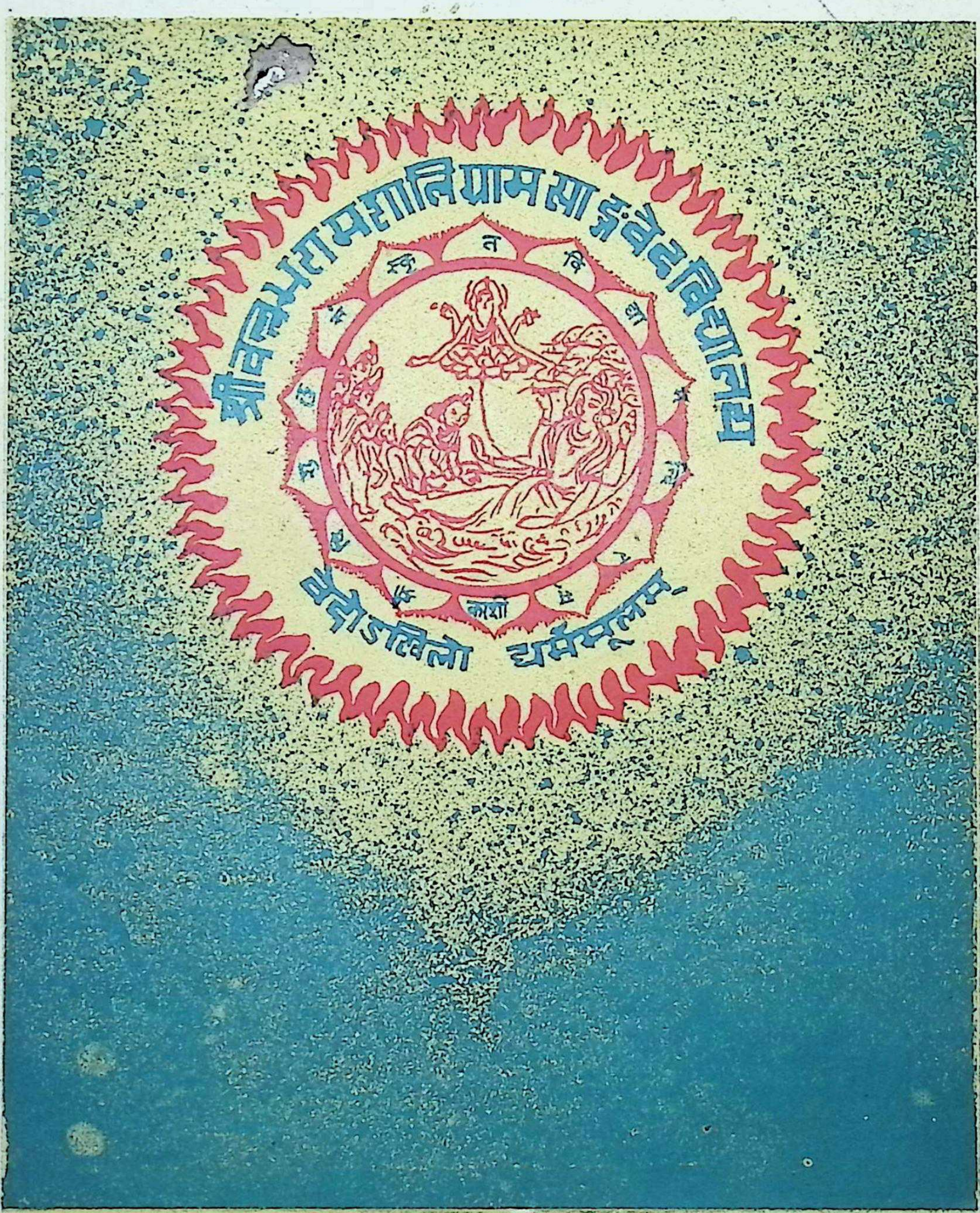

रामघाट, काशी

संवत् २०१५

१८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नं० ३९

श्री विश्वेश्वरः शरणम्

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

श्रीवल्लभ[illegible]लिग्राम सांगवेद विद्यालय

औषधालय

का

३८ वाँ कार्यविवरण

अध्यक्ष

श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़

संवत् २०१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मङ्गलाचरणम्

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् । यत्कृपा तमहं वन्दे प[illegible] १ ॥

—भगवान् वेदव्यास ।

व्यवस्थितार्यमर्यादः कृतवर्णाश्रमस्थितिः । त्रय्या हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति ॥ [illegible] ॥

—अर्थशास्त्र ।

नाध्यापयिष्यन् निगमान् श्रमेणोपाध्यायलोका यदि शिष्यवर्गान् ।
निर्वेदवादं किल निर्वितानमुर्वीतलं हन्त ! तदाभविष्यत् ॥ ३ ॥

—विश्वगुणादर्श ।

उच्चैर्गतिर्जगति सिद्धयति धर्मतश्चेत्तस्य प्रमा च वचनैः कृतकेतरैश्चेत् ।
तेषां प्रकाशनदशा च महीसुरैश्चेत् तानन्तरेण निपतेत् क्व नु मत्प्रणामः ? ॥ ४ ॥

—भोजराज ।

१—मूक होइ वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन ।
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलिमलदहन ॥

२—वेदों के द्वारा ही जगत् में आर्यों की सत्य आदि मर्यादा की प्रतिष्ठा है। वर्णाश्रम-धर्म की स्थिति भी वेदों से ही है। अतः वेदों से ही लोकरक्षा है, उन्हींके रक्षण से जनता अनार्यता से शून्य हो जाती है।

३—यदि अध्यापक गुरुजन श्रमपूर्वक शिष्यों को वेदाध्ययन न कराये होते तो संसार वेदशून्य तथा यज्ञ-मर्यादा, ज्ञान आदि से शून्य हो जाता।

४—संसार में धर्म ही से—उच्च गति, उन्नति प्राप्त होती है। धर्म की यथार्थ शिक्षा मनुष्य से अनिर्मित वेदों से ही है। उनका प्रकाशन करने का अधिकार सामर्थ्य ब्राह्मणों को ही है इसलिये हम कहते हैं कि उन ब्राह्मणों को छोड़ हमारा प्रणाम और किसको पहुँचे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नं० ३९

श्रीगुरुः शरणम्

माननीय श्री महाराज ! उपस्थित विद्वज्जन एवं सभ्यवृन्द !

विद्यादेवतासमेत भगवा[illegible]णेश, धर्मनारायण एवं आप लोगों की कृपा से पूर्व में विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय रूप से परन्तु अब विशुद्ध संस्कृत विद्या-मन्दिर के पवित्रतम रूप में परिगृहीत यह श्री वल्लभराम शालिग्राम साङ्गवेद विद्यालय आज [illegible] वर्षात्मक जीवन का अनुभव कर ३९वें वर्ष में अग्रसर हो रहा है। वर्णाश्रमधर्मियों के विद्या-विभागसेवाकार्य करने के लिये विद्यालय के द्वारा सम्पादित गतवर्षीय कार्यों का संक्षिप्त विवरण उपस्थापित करना इस प्रसङ्ग में प्राप्त कर्त्तव्य है।

योग्य अधिकारियों में औषध, अन्न एवं विद्यादान के रूप में विद्यालय के द्वारा शास्त्रप्रसिद्ध दृष्टोपकारक की जानेवाली सेवा आप लोगों को विदित ही है।

तदनुसार गत वर्ष आयुर्वेद विभाग, ७२३७ एलोपैथी विभाग, १२३०५ होमिओपैथी विभाग, १०१३१ एवं मातृ-सेवा-सदन विभाग २६९४ में सब मिलाकर ३२३६७ रोगियों की चिकित्सा-शुश्रूषा की गयी एवं ४४३ प्रसव कराये गये।

आरोग्य नास्तिक हो या आस्तिक, दोनों के लिये सर्वसाधारण विषय है। इस विषय में चिकित्सा विभाग द्वारा विद्यालय सर्वसाधारण की सेवा कर रहा है। यथासमय शीघ्र ही श्री वल्लभराम शालिग्राम सांगवेद विद्यालयीय-चिकित्सालय रूप में विशाल रूप से सेवाकार्य प्रकट करने का अवसर प्राप्त हो ऐसी परमेश्वर से प्रार्थना है। वर्णाश्रमियों को सर्वविदित ही है कि विद्यालय वेद एवं तदनुयायिशास्त्रों के संरक्षण के लिये सदा प्रयत्न कर रहा है। गतवर्ष सर्वोच्च वैदिक परीक्षा में १ विक्रमवर्षाशन परीक्षा में ७ तथा वार्षिक परीक्षा में ४६ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं यह परिशिष्ट को देखने से प्रतीत होगा।

आयुर्वेद विभाग द्वारा आविष्कृत अमृत तैल

आयुर्वेद विभाग में अमृततैल वितरण के द्वारा विचर्चिकारोगग्रस्त अनेक रोगियों की चिकित्सा की गयी है। इस औषधि के वितरण करनेवाले रसायन-विशारद पं० दुर्गादत्त वैद्य महोदय का मत है कि इस रोग का पुनरुद्भव रोकने के लिये रक्तशुद्धिकर कषाय अथवा अर्क का सेवन करना भी आवश्यक है जो कि वैद्यजी के मतानुसार निर्दिष्ट किया जायगा। ऐसा करने से इस व्याधि का पुनरुद्भव न होना निश्चयेन देखा गया है।

आयुर्वेद से वेदप्रामाण्य

वेदप्रामाण्य व्यवस्थापन के लिये आयुर्वेदप्रामाण्य हृदयङ्गम होना अत्यावश्यक है इस कारण आयुर्वेद का महत्त्व विद्यालय के द्वारा प्रतिवर्ष उपस्थापित किया जाता है। "मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्" इस न्यायसूत्र में आयुर्वेद के दृष्टान्त से ही वेद का प्रामाण्य व्यवस्थापित किया गया है। विद्यालय के द्वारा उपासना के समय प्रतिदिन पूर्वोक्तन्यायशास्त्रप्रतिपादित वेदप्रामाण्य निम्ननिर्दिष्ट वाक्यों के द्वारा स्मृत किया जाता है।

"स्वाध्यायोऽध्येतव्य इत्यध्ययनविधिवाक्यप्रयोज्यशाब्दभावनाहेतुकेष्टसाधनत्वानुमितिरद्ययावद्धर्मानुष्ठातृनिष्ठा स्वसजातीयोच्चारणसापेक्षोच्चारणकानुपूर्वीकशब्दवृत्तिशाब्दभावनाहेतुका प्रभुशक्तिसमृद्धपुरुषसमवेतशाब्दभावनाहेतुज्ञाना-जन्यत्वे सति शब्दाजन्ययथार्थज्ञानवत्पुरुषसमवेतप्रकृतेष्टसाधनताविषयकज्ञानजन्यशब्दवृत्तिशाब्दभावनाहेतुज्ञानाजन्यत्वे सति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शाब्दभावनाहेतुज्ञानजन्यत्वात्। आयुर्वेदीयरसायनाद्यनुष्ठानगतप्रायश्चित्ताधीनपापनाशे इष्टसाधनत्वानुमितिरेतावत्कालपर्यन्तं बौद्धादिष्वपि समवेता शाब्दभावनाज्ञानमात्रजन्या न स्वविषयकयथार्थज्ञानवत्पुरुषसमवेतयथार्थज्ञानजन्यशाब्दभावनाज्ञान-जन्या अलौकिकार्थत्वे सति यथार्थप्रवृत्तिजनकत्वात्, न प्रभुशक्तिसमृद्धनिष्ठशाब्दभावनाज्ञानजन्या स्वेच्छाधीनप्रवृत्ति-जनकत्वात्। एतेन एतावत्कालपर्यन्तं पूर्वं जायमानायामनुमितौ स्वसजातीया [illegible] पेक्षोच्चारणकानुपूर्वीकशब्दवृत्ति-शाब्दभावनाज्ञानजन्यत्वं सिद्धम्। इदानीन्तनानामनुमित्यभावेपि न क्षतिः, इदा[illegible]च्चारणस्य स्वसजातीयोच्चारण-सापेक्षतायाः प्रत्यक्षसिद्धत्वादिति निष्कर्षः।

उपर्युक्त अनुमानवाक्य तार्किक परिभाषा प्रचुर होने से सामान्य जनता को दुर्बोध होने पर भी विद्वानों को मनस्तोषकर होने से वेदप्रामाण्य एवं वेदापौरुषेयत्व पर प्रकाश डालने में समर्थ हैं ऐसा इस अनुमान को प्रकाशित करनेवाली गीर्वाणवाग्वर्धिनी सभा का मत है। इसका विस्तृत विवेचन तार्किकों की सहायता से स्फुट हो सकेगा अतः विस्तार यहाँ नहीं किया गया है।

विशुद्धतर्क एवं भारतीय राजनीति की दृष्टि से भी वेदों की अपौरुषेयता

इस वर्ष सर्व साधारण को उपर्युक्त तर्क की झलक प्राप्त हो इस उद्देश्य से एक लेख विशुद्ध तर्क एवं राजनीति की दृष्टि से संस्कृत में प्रस्तुत किया है। जिसका हिन्दी में अनुवाद परिशिष्ट में दिया गया है। इस अनुवाद को करने में श्री पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल अटल महोदय ने तथा श्री पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार ने बड़ा श्रम किया है अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

मन्त्रशास्त्र का भी उपयोग

अमृततैल का उद्भावन गणेशसहस्रनाम के अनुष्ठान का फल होने से वेदप्रामाण्य का साधक मन्त्रप्रामाण्य भी इससे दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार आयुर्वेद एवं मन्त्र का प्रामाण्य वेदप्रामाण्य के पोषक देखे जाते हैं।

वेद से भारतीय राजनीति में विशेषता

विद्यालयीय राजनीति विभाग के द्वारा भारतीय राजनीति पर अच्छा प्रकाश डाला जा रहा है। यहाँ की गीर्वाणवाग्वर्धिनी सभा का सुवर्णजयन्त्युत्सव सं० २०१३ भाद्रपद शुद्ध में गणेशोत्सव के अवसर पर सम्पन्न हुआ। तब इस विभाग के द्वारा "शान्ति का अग्रदूत" "भारतीय राजनीति का दिग्दर्शन" नामक हिन्दी भाषा का निबन्ध प्रस्तुत किया गया। इसका प्रकाशन विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय संरक्षक कोष के द्वारा श्रीगणेशसहस्रनाम स्तोत्र के साथ किया गया है। इस पुस्तक के सम्बन्ध में प्राप्त हुए अभिप्राय परिशिष्ट में मुद्रित हैं। इस राजनीतिक पुस्तक का सम्यक् आलोचन करने से राजनीतिशास्त्र की दृष्टि से स्पष्ट हो सकता है कि शान्तिस्थापन के लिये वैदिक समाज-व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः यहाँ पर उसका विस्तत विवेचन नहीं किया जा रहा है।

विश्व की वर्तमान चिन्ताजनक स्थिति में पूर्वोक्त सेवा का उपयोग

देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति विदेशीय राज्यों के साथ मैत्री-सम्बन्ध के दृढ़ करने से ही सुरक्षित हो सकती है। पड़ोसी राज्य शस्त्रबल से सम्पन्न होकर भारतवर्ष की भयावह स्थिति को उत्पन्न कर रहा है। यह विषय गत कई वर्षों में उपस्थापित किया जा रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरणयुगलमम्बायाः ।
तत्स्मरणं किं कुरुते ब्रह्मादीनपि च किंकरीकुरुते ॥

इस न्याय से ––तथा "विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः"। सांख्यं पातंजलं योगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः। (गणेशसहस्रनाम) इन वचनों [illegible] राजनीतिप्रधान विद्यादेवताओं की उपासना ही वर्तमान आपत्ति के समय में शरण है, दूसरा उपाय नहीं, यही वस्तुस्थिति "शान्ति के अग्रदूत" पुस्तक देखने से स्पष्ट होनेवाली है। अतः वेद का रक्षण जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है तथा वेदोपवृंहित राजनीति विद्या एवं इनके विचार में सहायक होनेवाले शास्त्रों का उद्धार करने के लिये विद्यालय के द्वारा किया जानेवाला प्रयत्न देश एवं विश्व का सहायक है यह वात आप लोगों को अवगत हो सकती है ।

भारतीय संस्कृति का वेद एवं तदन्तर्गत विद्याओं से सम्बन्ध

संस्कृति शब्द, जो कि साहित्य-शास्त्र में प्रयुक्त हुआ है, च्युतसंस्कृति, दोषघटक संस्कृति पद का पर्याय ही है, और वह शब्दात्मक भाषा की तरह चेष्टाद्यात्मक भाषा में भी स्थित हुआ "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः," इस उक्ति के अनुसार अनुद्वेजक सदाचार रूप ही है, ऐसी स्थिति में चेष्टात्मक भाषा के सदाचार ही उस भाषा के संस्कारक होने से जैसे अनादि सदाचारमूलक व्याकरणशास्त्र का संस्कार ही शब्दात्मक भाषा में साधुत्व को वतानेवाला है वैसे ही चेष्टात्मक भाषा में भी अनादि सदाचारमूलक साहित्यशास्त्र का संस्कार ही उस भाषा का साधुत्व निर्णायक होता है। इस कारण से साहित्य से मार्जित वेषभूषादि चेष्टात्मक भाषा में अनुद्वेजकता आती है, "वागनुद्वेगजननी सामेति परिकीर्त्यते" इस नीतिसार के वचनानुसार राजनीति-प्रोक्त सामादि चार उपायों में सामोपाय रूपता ही संस्कृति पदार्थ की सिद्ध होती है। "अलसं विक्रमे श्रान्तं विहतोपायचेष्टितम्, क्षयव्ययप्रवासैश्च श्रमेण विपरिद्रुतम्, भीरुं मूर्खं स्त्रियं बालं धार्मिकं दुर्जनं पशुम्, मैत्रीप्रधानं कल्याणवुद्धिं सान्त्वेन साधयेत्," इस नीति-शास्त्रोक्त मानवसमाज में प्राप्त साम प्रयोग के १६ विषयों में से पंद्रहवें मैत्रीप्रधान का समावर्जन वर्तमान भारतीय राजनैतिक परिस्थिति में अत्यावश्यक हो गया है।

उसी प्रकार राजनैतिक दृष्टि से यह ध्रुव सत्य है कि मैत्री प्रधानों का सामोपाय से ही आवर्जन या संग्रह हो सकता है, अनुद्वेजक सदाचार रूप संस्कृति संरक्षण की अर्थात् सामप्रयोग की भारतीय राजनैतिक परिस्थिति में अत्यावश्यकता का अनुसन्धान कर प्रकाशन किया जाता है।

परराष्ट्रीय व्यवहारों में भारतीय सदाचार की विशेषता वेद एवं तदनुयायि स्मृति आदि समस्त विद्या-मूलक अनादि सदाचारकृत ही है, जो नीतिशास्त्र की दृष्टि से प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणों से तथा साहित्यशास्त्र के समन्वय से परिष्कृत हुई अनुद्वेजक सदाचार रूप लेती हुई सामोपायरूपता में बदल जावेगी।

ज्ञानेश्वरीसहित गीता की पुष्टि

सन्तशिरोमणि श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने भी अपने 'ज्ञानेश्वरी' ग्रन्थ में "धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे" श्लोक की व्याख्या में लिखा है कि––

'धर्माशी नीतिशी शेज भरी...............'

अर्थात् इस उपदेश का तात्पर्य––

"राजनीतिर्महालक्ष्मीर्धर्मो नारायणः स्वयम्"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के अनुसार राजनीति और धर्मरूपी लक्ष्मीनारायण का वैमुख्य दूर कर उपर्युक्त समन्वय स्थापित करना ही एक-शय्योपवेशन है। अतः साङ्गवेद विद्यालय के कार्य लोककल्याणकर हैं। श्री ज्ञानेश्वर महाराज के उपदिष्ट इन लोक-कल्याणकारी कार्यों को विवेचकजन एवं सर्व देश ही पसन्द करेंगे।

इस विषय में राजकीय महानुभावों की स[illegible]ति

अभी दिल्ली में सम्पन्न हुई विज्ञान परिषद् में प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू महोदय ने धर्म की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। ता० २७-१-५९ के केसरी आदि पत्रों के अग्रलेखादि द्वारा मालूम होता है कि अभी तक के उनके जीवन में यह प्राथमिक घटना है, हम लोग इस विचार का स्वागत करते हैं। एवं उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री महोदय की प्रेरणा से वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना इसी वर्ष हुई है। इसके द्वारा आपने संस्कृत विद्या को पुरस्कृत करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। ब्राह्मण महासम्मेलन द्वारा प्रस्तुत विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय का कार्य सरकार ने संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में अग्रेसर कर दिया अतः अब विशुद्ध संस्कृत विद्याओं की उपासना कार्य कर्तव्य होने से "विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय" को "विशुद्ध विद्यामन्दिर" रूप में परिणत कराकर तद्वारा विद्यादेवता की सेवा करना निश्चित किया गया एवं "विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय संरक्षण कोष" अब "विशुद्ध संस्कृत विद्यामन्दिर संरक्षण कोष" रूप में परिणत किया जा रहा है।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।

के न्याय से दिवंगत विख्यात कीर्ति विद्वानों का चित्रस्थापन भी प्रतिवर्ष इसी दृष्टि से सम्पन्न किया जाता है। तदनुसार महाराज इन दो चित्रों का आवरणोन्मोचन अपने कर-कमलों से करें, ऐसी प्रार्थना है।

प्रथमचित्र

प० प० श्री १०८ जगद्गुरु सङ्केश्वर पीठाधीश आचार्य चरण का है। आपके सम्बन्ध में अधिक कहने की आवश्यकता ही नहीं। काशी के ऐतिहासिक ब्राह्मण सम्मेलन विचार सभा की अध्यक्षता स्वीकार करने से उस सभा की सफलता हो सकी थी। विद्यालय के विषय में महाराज की कृपादृष्टि सर्वदा थी। विद्यालय के रजत-जयन्त्युत्सव के अवसर में शीतकाल एवं वृद्धावस्था का किसी प्रकार विचार न करते हुए हम लोगों की प्रार्थना को स्वीकार कर विद्यालय में स्वयं उपस्थित हुए। महाराज के सान्निध्य से उत्सव बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सङ्केश्वर शंकराचार्य पाठशाला भी महाराज के आशीर्वाद से इस विद्यालय की अङ्गभूत संस्था के रूप में अपना कार्य कर रही है। आचार्य चरण धर्म-पक्षपात एवं मठ-मर्यादा के संरक्षण के लिये सर्वदा जागरूक रहते थे। इस कार्य में कैसा भी विघ्न उपस्थित होने पर कुछ भी परवाह न करते हुए दृढ़ता से कार्य करते थे। आप इसी वर्ष पौष शुक्ल १४ शुक्रवार, सं० २०१५ को ८५ वर्ष की अवस्था में समाधिस्थ हो गये।

द्वितीयचित्र

पूना विद्वत्परिषद् में उपस्थित विद्वत्समूह का है। जिसमें देश-देशान्तर से आये हुए अनेक विद्वान् सम्मिलित थे। बम्बई हाईकोर्ट के तत्कालीन न्यायाधीश श्री दिवेटिया महोदय एवं न्यायमूर्ति श्री लोकुर महोदय निरीक्षक रूप से उपस्थित थे। इसमें दिवंगत विद्वानों में विद्यालय सम्वद्ध श्री १०८ स्वामी श्री देवनायक आचार्य महोदय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

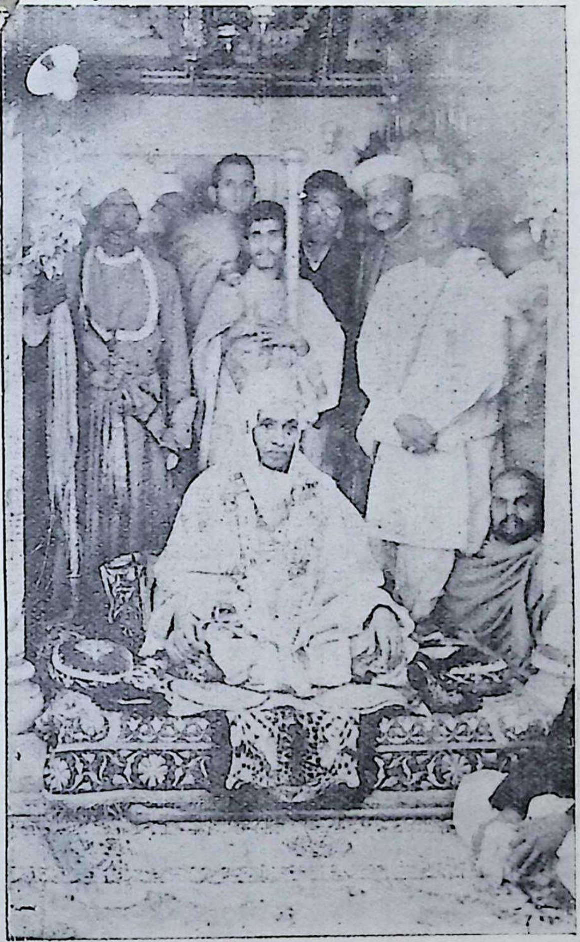

प० प० श्री १००८ विद्यानृसिंह भारती
स्वामी सङ्केश्वर शङ्कराचार्य महाराज
समाधि सं० २०१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्-अधिवेशन, पूना ता० ४ ते. ८ जून १९४५ ई०

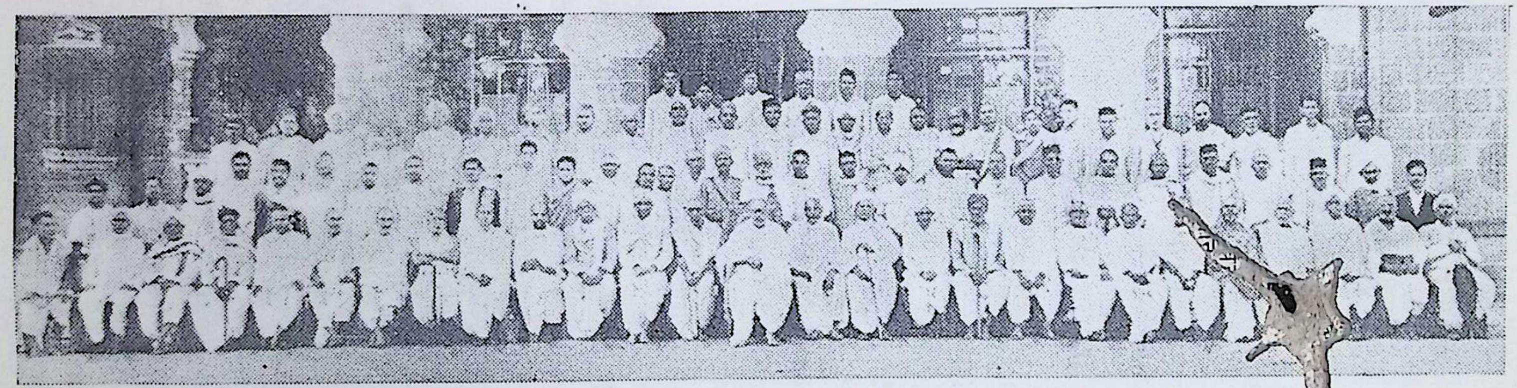

खुर्ची पर बैठे हुए—बायें से दाहिने-१ पं० अमर चन्द्र सांख्यवेदान्त तीर्थ तारकेश्वर मठ, २ पं० भार्गव शास्त्री जोशी मुंबई, ३ पं० लक्ष्मण शास्त्री मुरगुडकर ईचलकरंजी, ४ पं० कृष्णशास्त्री धुले नागपूर, ५ पं० पद्मप्रसाद जी न्यायाचार्य नेपाल, ६ पं० ताराचरण भट्टाचार्य काशी, ७ पं० शरत्कान्त न्यायतीर्थ तारकेश्वरमठ, ८ पं० वामाचरण भट्टाचार्य काशी, ९ पं० श्री जीवजी न्यायतीर्थ एम० ए० कलकत्ता, १० श्री १०८ स्वामी देवनायक आचार्य काशी, ११ श्री० रा० ब० स० भा० पराण्डे नागपूर, १२ न्यायमूर्ति ना० स्वा० लोकूर हाईकोर्ट जज बंबई, १३ पण्डितराज श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड काशी, १४ अध्यक्ष श्री १०८ गोकुल नाथ जी महाराज मुंबई, १५ महाम० राघवाचार्य सिंवडा मठ पोरबन्दर, १६ राव साहेब नटेश अय्यर ॲडवोकेट मदुरा, १७पं० सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर आग्रा (ग्वालियर), १८ पं० नारायण शास्त्री वाडीकर अहमदाबाद, १९पं० ब्रह्म श्री पोलकम् रामाशास्त्री मद्रास, २० पं० म० म० चिन्न स्वामी शास्त्री काशी, २१ पं० शास्त्ररत्नाकर रामचन्द्र दीक्षित वेदान्त विशारद काशी, २२ पं० जगदीश्वर शास्त्री गल कुम्भकोण, २३ पं० सोमदेव शर्मा मद्रास, २४ पं० बबुनन्दन झा मुंबई, २५ श्री केशव दत्त महाराज सोनगीरकर (सोनगीर), २६ पं० काशीनाथ शास्त्री उम्बरकर पण्ढरपूर, २७ पं० श्रीधर शास्त्री वारे नाशिक। खुर्ची के पीछे खड़ी पंक्ति बायें से दाहिने—१ पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार नेपाल, २ पं० रामनाथ जी ज्योतिषी काशी, ३ पं० विनायक शास्त्री टिल्लू इन्दूर, ४ पं० रामचन्द्र शास्त्री मण्डलीकर काशी, ५ पं गणपति शास्त्री हेब्बार काशी, ६ पं० रामचन्द्र शास्त्री खनङ्ग काशी, ७ पं० हरिराम शास्त्री शुक्ल काशी, ८ पं० गोपीनाथ शास्त्री मण्डलीकर काशी, ९ श्री बालाजी राव पालणे काशी, १० श्रीनिवास बनारसवाला काशी, ११ पं० सनक नन्दन पाठक काशी, १२ पं० कल्पनाथ शर्मा अयोध्या, १३ पं० गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर आग्रा, १४ पं० रामचन्द्र शास्त्री वझे काशी, १५ पं० विनायक शास्त्री फडके पुणे, १६ अध्यक्ष का पट्टेवाला बंबई, १७ अध्यक्ष का चोपदार बंबई, १८ पं० रामप्रपन्नाचार्य सिंवडामठ पोरबन्दर १९ पं० गोविन्द शास्त्री वैजापुरकर काशी, २० श्री गोविन्द बुवा उपासनी धरणगांव, २१ पं० जयराम शास्त्री शुक्ल काशी, २२ पं० दुर्गादत्त त्रिपाठी काशी, २३ श्री राजेश्वर मनोहर काटे नागपुर, २४ पं० वेङ्कट सुब्रह्मण्य शास्त्री मद्रास, २८ श्री चिंचवडकर पण्ढरपुर, २९ श्री पं० महादेव शास्त्री मुले अहमदनगर। खड़ी दूसरी पंक्ति—१ पं० बलवन्त रामशास्त्री खाम्वेटे इन्दूर, ४ पं० सदाशिव शास्त्री लवाटे नाशिक, ५ पं० वेंकटाचलम् अय्यर मदुरा, ६ पं० शंकर सुब्रह्मण्य अय्यर मदुरा, ७ श्री राजाकृष्ण मदुरा, १० पं० दुर्गादत्त वैद्य काशी, ११ श्री शेट ब्रिजलाल जीवनदास होरा पुणे, १३ श्रीमन्त सरदार गं० ना० मुजुमदार प्रधान मंत्री पुणे, १४ पं० अमृत लाल शास्त्री मुंबई, १५ प्रो० विनायक विष्णु देशपाण्डे मंत्री काशी, १६ पं० रामचन्द्र शास्त्री जोशी काशी, १७ श्री अनन्तराव क्षीरे धुले, १८ पं० अण्णा शास्त्री उपाध्ये पण्ढरपूर, २१ श्री० वि० त्रिं० शेटे पुणे, २२ श्री० कृ० गो० राक्षे पुणे, २४ श्री पुणताम्बेकर अहमदनगर २५ आचार्य स्वयं सेवक पुणे, २६ रा० परांजपे स्वयं सेवक पुणे।

खड़ी तीसरी पंक्ति—१ श्री के० पां० जोशी मन्त्री पुणे, २ रा० ब० गं० वा० काले कोषाध्यक्ष पुणे, ३ श्री० नी० पु० जोशी काशी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(साङ्गवेद विद्यालयीय प्रबन्ध-कारिणी समिति के सदस्य, एवं विद्यालय के व्याकरणाध्यापक, अध्यक्ष श्री गीर्वाण-वाग्वर्धिनी सभा एवं अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय वर्णाश्रम स्वराज्य संघ)।

श्री प० प्र० दुर्गादत्तजी त्रिपाठी महोदय (भूतपूर्व साङ्गवेद विद्यालयाध्यक्ष स्व० श्री रणवीरदत्त त्रिपाठी महोदय के सुपुत्र एवं सिद्ध[illegible]पादक)।

श्री० प० प्र० गोपीन[illegible]ा मण्डलीकर महोदय (साङ्गवेद विद्यालयीय प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्य, विद्यालय के लेखाध्यक्ष एवं [illegible]म कक्षाध्यापक, प्रधान मन्त्री श्रीगीर्वाणवाग्वर्धिनी सभा, एवं काशी प्रान्तीय वर्णाश्रम स्वराज्य संघ)।

श्री० ह० भ० [illegible]० सोनगीर संस्थानाधीश केशवदत्त महाराज सोनगीरकर महोदय, आदि विद्वान् हैं। इस ऐतिहासिक विद्वत् परिषद् के निर्णय एवं न्यायमूर्तियों के अभिप्राय उद्धृत किये जा रहे हैं, जिससे इसका महत्त्व अखण्ड बना रहेगा।

न्यायमूर्त्योरभिप्रायः

पुण्यपत्तने सम्पन्नायामखिलभारतवर्षीय विद्वत्परिषदि तदीयस्वागतसमित्या निरीक्षकरूपेण निमन्त्रितावावां प्रत्यक्षं समुपातिष्ठाव। आवयोः प्रथमस्तु (दिवेटिया-न्यायमूर्तिः) अपरिहार्यकार्यवशाद्वादस्यान्तिमदिवसे नोपस्थातुमशक्नोत्। आवयोर्द्वितीयः (लोकूर-न्यायमूर्तिः) आदित आन्तं स्वयमुपस्थित आसीत्। प्रथमयोर्द्वयोः प्रश्नयोर्विषये कृतां चर्चां तत्र मध्यस्थैर्दत्तं निर्णयं चाधिकृत्य निरीक्षकत्वेनावामुभौ मिलित्वैव तत्समय एव सन्तोषाभिव्यक्तिप्रकटनमकरवाव। परिषदोऽन्तिमदिने इतर-सप्तप्रश्नानां विषये जातायाश्चर्चायास्तत्र मध्यस्थैर्दत्तानां निर्णयानां च विषये आवयोर्द्वितीयः (लोकूर-न्यायमूर्तिः) निरीक्षकाधिकारेण सन्तोषाभिव्यक्तिं सविस्तरं व्याख्यानद्वारैव प्रकटीकृतवान्।

परिषदः संयोजनकालादारभ्य स्वागतसमितिद्वारा आवयोः परामर्शः वारंवारं गृहीत एव, "हिन्दूकोड" विधान-वशादुत्पन्नानामनेकप्रश्नानां धर्मशास्त्रदृष्ट्या साङ्गोपाङ्गविचारार्थं विद्वज्जनानामेका परिषन्निमन्त्रणीयेति कल्पना आवयोः प्रथमस्य (दिवेटिया-न्यायमूर्तेः) पुरतो मुम्बापुरीनिवासिनां कतिपयसद्गृहस्थानां पुरतश्च प्रथमं सूचिता। तां सूचनामनुसृत्यैव सेयं परिषदायोजिता आसीत्। विशेषतः परिषदि विचारार्थं प्रस्तोतव्याः प्रश्नाः, तेषां पौर्वापर्यं, शास्त्रार्थ विचारपद्धतिः, मध्यस्थवरणपद्धतिः, निरीक्षकमध्यस्थयोरधिकारः, नियामकस्य चाधिकारः इत्यादिसर्वविषयेषु स्वागतसमितिरावयोः परामर्शं गृहीतवती।

परिषदि केचन वक्तारोऽवयवपद्धतिमवलम्ब्य स्वपक्षं निरूपितवन्तः। ये तु तया पद्धत्या स्वपक्षप्रतिपादनेऽसौकर्यमनुभवन्ति स्म तेषां कृते स्वाभिमत पद्धत्यैव यथेष्टं स्वपक्षोपन्यासाय सम्पूर्णोऽवसरो दीयते स्म। अपि च तदीयवक्तव्यं नियामकमहोदयेन योग्यरीत्याऽवयवरूपेण विभज्यते स्म। मध्यस्थानामितरसदस्यानां सौकर्यार्थं स्वेच्छानुसारं गीर्वाणभाषायां हिन्दीभाषायां महाराष्ट्रभाषायां वा स्वपक्षोपन्यासायानुमतिर्दत्ताऽऽसीत्।

आद्येषु षट्सु प्रश्नेषु कल्पनाऽपेक्षयाऽधिककालपर्यन्तं चर्चायाः प्रवृत्तेर्दायभाग विवाहदत्तकविषयकसर्वप्रश्नानां विचारोऽशक्य आसीत्। अतोऽस्मत्सूचनानुसारेणैव ११, १२, २९, प्रश्नान् विचारार्थमुपादातुं नियामकमहोदयेन निरणायि। तावत्सु प्रश्नेषु पुनस्तर्कपद्धत्या चर्चापि समजनि।

एवं रीत्या परिषदि वादार्थं नियमितेषु त्रिषु दिवसेषु द्वयोरपि दिनार्धयोरधिवेशनेषु प्रश्नत्रिंशन्मध्ये केवलं नव प्रश्ना एव चर्चिता आसन्। चर्चायां च वादिप्रतिवादितया प्रविवक्षुषु प्रत्येकं वक्तुः स्वस्वपक्षप्रतिपादनार्थं पूर्णोऽवसरः प्रदत्त आसीत्। चर्चापि तर्कपद्धत्या प्रवर्तिता, मध्यस्था अपि पक्षद्वयप्रतिपादितं सम्यग्विचार्य नवानामपि प्रश्नानां निर्णयं प्रादुरित्यावयोर्मतम्। इत्थं परिषदः कार्यपद्धतिः सर्वदृष्ट्या दोषरहिता सन्तोषप्रदा चेत्यावयोराभिप्रायो वरीवर्ति।

हरसिद्ध भाई दिवेटिया,

लोकूरकुलोत्पन्नः स्वामिरावसूनुर्नारायणः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिषन्निर्णयाः

प्रश्नः—धर्मस्य ज्ञापकहेतवः के ? श्रुतिस्मृतिसदाचारात्मतुष्टयतिरिक्तानां धर्मे प्रमाणत्वं कथम् ?

निर्णयः—धर्मज्ञापकहेतवस्तावत् श्रुतिस्मृतिसदाचारास्तदविरुद्धा आत्मतुष्टिः।

प्रश्नः—श्रुत्यादीनां समानबलत्वाङ्गीकारे को हेतुः ?

निर्णयः—श्रुतिस्मृतिसदाचाराणां बलाबलत्वं पूर्वमीमांसाशास्त्रानुसारेण विज्ञेयम्।

प्रश्नः—देशाचारकुलाचारजात्याचारादीनां स्मृतिविरोधे सति प्रामाण्यमस्ति नवा।

निर्णयः—देशाचारादीनां सत्यपि स्मृतिविरोधे दीपोच्छिष्टभक्षणाद्याचाराणां मीमांसाकौस्तुभोक्तन्यायेन प्रामाण्यम्। तत्तद्देश-प्रसिद्धशिष्टपरिगृहीतनिबन्धास्तु तत्तद्देशाचारानुसारिस्मृत्यर्थनिर्णायकतया प्रमाणम्।

प्रश्नः—भारतसम्राजोऽन्यस्य वा मिताक्षरादायभागादिशिष्टपरिगृहीतनिबन्धनिरासेन एवं विध धर्मसम्बन्धि "कोड"-विधानेऽधिकारोऽस्ति नवा ?

निर्णयः—राजसत्तायास्तन्नियोजितशासनपरिषदो वा प्रभुशक्तिसम्पत्तावपि धर्मशास्त्रमतिक्रम्य धर्मसम्बन्धि "कोड"विधाने धार्मिकशिष्टपरिपालन दुष्टनियमनफलस्वाम्यरूपाधिकारो नास्ति।

प्रश्नः—मिताक्षरादायभागादि संस्कृत निबन्धाननादृत्य आङ्ग्लाभाषामय स्वतन्त्र "कोड"विधानं युक्तं वा ?

निर्णयः—मिताक्षरादि संस्कृत निबन्धाननादृत्य कोडविधानमयुक्तम्। अतस्तदर्थकशब्दानां व्याख्यान रहितमाङ्ग्लभाषा-मयकोडविधानमयुक्तम्।

प्रश्नः—"हिन्दुला" इत्यत्र हिन्दुशब्दार्थः कीदृशो युक्तः ?

निर्णयः—"हिन्दुला" इत्यत्र हिन्दुपदस्य मुख्यार्थस्तावत् वेदबोधितकर्तव्यताकत्वमनुमाय धर्मप्रवृत्तिमान् समाजः, तदधीन-परम्परासन्ततिश्च। उभयं चैतन्म्लेच्छभिन्नमेवाभिमतम्। तदतिरिक्तेषु हिन्दुसदाचारसदृशाचारसम्पन्नेषु म्लेच्छ-भिन्नसमाजेषु हिन्दुपदप्रयोगो गौणः।

प्रश्नः—पुत्रसद्भावेऽपि मातृणां दायाधिकारः परिस्थितिविशेषेऽस्ति नवा ?

निर्णयः—अपतितैकपुत्रस्थले मातुर्दायांशो नास्ति। पतितैकपुत्रसत्त्वे अपुत्रायाः पत्न्या इव दायाधिकारित्वं युक्तम्। बहुपुत्रस्थले विभागे जाते माता पुत्रसमांशभागिनी। स्त्रीधनसत्त्वे तदर्धांशहारिणी।

प्रश्नः—भ्रातृसत्त्वे कन्याया दायाधिकारोऽस्ति नवा ?

निर्णयः—भ्रातृसत्त्वे कन्याया दायाधिकारो नास्ति।

प्रश्नः—सगोत्रसप्रवरसपिण्डविवाहः सिद्धयति नवा ?

निर्णयः—इमे सर्वे विवाहा असिद्धाः। एतेषु भार्यात्वं नोत्पद्यते। सर्वत्र तत्तद्देशमतकुलाचारा अनुसर्तव्या इति।

निर्णायकाः—श्री देवनायकाचार्यः, श्री जीवन्यायतीर्थशर्मा, पोलकं श्रीरामशास्त्री, श्री नारायणशास्त्री वाडीकर,
श्री सदाशिवशास्त्री मुसलगांवकरः,

८-६-४५, ज्ये० कृ० १३ भृगुवासरे २००२,

वेद शास्त्र संरक्षक मेहता महोदय का उत्साह

औषध वितरण विद्या प्रदान अनेक वर्षाशन प्रदान अन्नसत्र प्रवर्तन तथा अन्यान्य विविध उपायों से वेदशास्त्र संरक्षक मेहता परिवार अन्न दानादि करते हैं यह सबको विदित ही है अतः ये तीनों विद्यालय के कार्य आपको सन्तोषप्रद होंगे ऐसा विश्वास है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समारोप

विद्वानों के आदर्श प्रतिष्ठापनादि कीर्तिकर पूर्वोक्त सब कार्य विद्यालय में विद्यादेवतासमेत श्रीगणेश एवं नारायण की कृपा से प्रवर्तम[illegible] कार्यकर्ता अध्यापकवर्ग, छात्रगण, एवं श्रीलालाबाबू दामोदरदास खन्ना, श्री डा० कोशलपति त्रिपा[illegible] उदयकृष्णनागर, श्री हरिरामशुक्ल, प्रभृति परामर्श समिति के सदस्य, तथा इतर सहयोगियों के उत्साह[illegible] प्रचा[illegible]त है।

चिकित्सा विभा[illegible]के कार्यकर्तागण तत्रापि अवैतनिक कार्य करनेवाले सभी सम्मान के साथ स्मरणीय हैं। अन्त में श्री विद्यादेवताओं के प्रसाद से सभापति श्री महाराज, विद्यालय के सञ्चालक मेहता महोदय, एवं अन्य सहयोगियों के मङ्गलाशासन को भगवच्चरण में निवेदन कर वक्तव्य का विराम करता हूँ। इति।

निवेदक—

श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड

परिशिष्ट

विशुद्धसंस्कृत विद्यामन्दिरसंरक्षण कोष

जो कि विशुद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय संरक्षण कोष का परिवर्तित रूप है।

उक्त संस्था की स्थापना सं० २०१२ ज्येष्ठ कृष्ण ४ बुधवार (ता० ११-५-५५) को तुलालग्न में की गयी। इसके संचालक (ट्रस्ट्री) श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़ (अध्यक्ष), वेदशास्त्रसंरक्षक पं० मुरारीलालजी मेहता महोदय एवं श्री दामोदरदास खन्ना महोदय हैं। इसकी परामर्शदात्री समिति भी नियमानुसार संघटित की गयी है। जिसके सदस्य पंडित प्रवर ताराचरण भट्टाचार्य, श्री मैलारय्या महोदय सेक्रेटरी इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट वाराणसी, श्री पं० हरिराम शास्त्री शुक्ल, रसायन-विशारद पं० दुर्गादत्त वैद्य तथा पं० उदयकृष्णजी नागर महोदय हैं। सम्प्रति इसका स्थापन १६०००) सोलह हजार रुपये मूलधन से हुआ है। इन रुपयों में तलोदा (पश्चिम खानदेश) निवासी स्व० श्री ओंकारदास किशोरदास चौधरी महोदय ने सं० २००८ में प्रदत्त ५,३२६) पाँच हजार तीन सौ छब्बीस रुपये तथा अहमदाबाद निवासी श्री रतिलाल मनसुखराम पटेल महोदय द्वारा श्री स्व० नगीनदास पुरुषोत्तमदास संघवीजी की धर्मपत्नी श्री हरि-मङ्गला के स्मारक में दिये हुए १०००) एक हजार रुपये सम्मिलित किये गये ह। इन रुपयों के व्याज के रुपये गतवर्ष के समान इस वर्ष भी योग्य विद्यार्थियों को दिये गये। इस संस्था को लगा हुआ आय कर इस वर्ष प्राप्त होगया है। इसमें श्री सत्यमित्रजी अग्रवाल एम. काम. एल. एल. बी. इन्कमटैक्स और इस्टेट ड्यूटी स्पेशलिस्ट (इंग्लैण्ड) महोदय का प्रयत्न विशेष सराहनीय है। आपने इस संस्था की सेवा निस्वार्थ भाव से की है। संस्था की ओर से आपको विशेष धन्यवाद दिया जाता है।

विद्यालय में विद्यार्थियों के द्वारा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रति शुक्ल प्रतिपदा को विद्याव्रत का अनुष्ठान किया जाता है। इस वर्ष हमारे षष्ट्यब्द्युत्सव के अवसर में यहाँ के विद्यार्थियों ने एवं पूना आदि में स्थित अनेक सज्जनों ने भारतीय विद्या की सेवा करने का व्रत ग्रहण किया है। यह कार्य अत्यन्त सन्तोषप्रद हुआ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस वर्ष विद्यालय के आद्य प्रवर्तक धर्मप्राण स्वर्गीय पितृचरण, कैलासवासी गुरुवर वामाचरण भट्टाचार्य, पं० गोविन्दराव पण्डित, वे० बालंभट गोडबोले महोदय एवं विद्यालय चित्र स्थित सन्यस्त लोगों के स्मृति रूप में प्रतिवर्ष कार्यक्रम करने के निमित्त २,०००) दो हजार रुपये के शेयर इस कोष में श्री पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री द्राविड महोदय एवं "वेदशास्त्र संरक्षक" मेहता मुरारीलालजी मह[illegible]तः इस कोष का मूलधन अब १८,०००) अठारह हजार रुपये हो गये हैं।

दान प्राप्ति

२५) श्री शंकराचार्य प० प० राघवेन्द्र भारती स्वामी महाराज द्वारा प्रतिवर्षानुसार गणेशोत्सव में प्राप्त।

६००) श्रीमान् काशी नरेश श्री विभूतिनारायणसिंह वहादुर के द्वारा प्रतिवर्षानुसार प्रदान किये गये।

श्रीमान् तेजपाल जमनादास महोदय, मीरघाट ने विद्यार्थियों को अन्नदान किया।

विद्यालय सेवाकार्य विवरण

स्वराज्य-प्राप्ति के अनन्तर भारतवर्ष में अनेक नूतन समस्यायें उपस्थित हुई हैं। उनमें संस्कृत विद्या का पुनरुज्जीवन किस प्रकार हो? यह प्रश्न प्रमुख रूप से राष्ट्रपति महोदय के द्वारा विश्वसंस्कृतपरिषद् में उपस्थापित किया गया था जो कि आप लोगों को विदित समाचार ही है। इधर से मिताक्षरा-विशेषज्ञ प्रो० वि० वि० देशपाण्डे महोदय, पं० देवनायक आचार्य, पं० म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदीजी के साथ मुझे भी दिल्ली नगर में श्री माननीय राष्ट्रपति महोदय के समीप संस्कृत विद्या के संरक्षण के विषय में विचार-विमर्श करने के निमित्त जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। मुझे वड़ा हर्ष है कि श्री राष्ट्रपति महोदय संस्कृत विद्या के उन्नत्यर्थ उत्साह के साथ प्रयत्न कर रहे हैं।

संस्कृत विद्या का अनादर आंग्ल विद्या के माहात्म्य से जो हमारे देश में व्याप्त हुआ है इसका कारण भारतीय राजनीति की दृष्टि से हिन्दूसंघटन का अभाव ही प्रतीत होता है। अतः २६वें वार्षिक विवरण में हिन्दू-संघटन के विषय में जो विचार मैंने आप लोगों के सामने रखा था, उसको पुनः विशद रूप से सामने रखना मुझे इस समय उचित प्रतीत होता है। इतर राजनीतिज्ञों के प्रदर्शित संघटनोपायों की अपेक्षा हमारे नीतिसार-कार के प्रदर्शित संघटन के अनुसार गुरुवर्ग एवं मित्रवर्ग आदि के आराधन की आवश्यकता विशेष स्पष्ट हो जाती है जो कि आज कलिमाहात्म्य से विलुप्तप्राय हो गयी है।

लोकसंग्रह के उद्देश्य से संघटनात्मक सदाचार का विवेचन नीतिसार से निम्नलिखित दस वर्ग के विभाजन के साथ मिलते हैं* देशी राज्य एवं इस समय जमींदारी प्रथा के समूल उन्मूलन की व्यवस्था प्रायः सम्पन्न हो गयी

---

* यथा—शुचिरास्तिक्यपूतात्मा पूजयेद्देवताः सदा। देवतावद्गुरुजनं आत्मवच्च सुहृज्जनम् ॥
प्रणिपातेन हि गुरून् सतोनूचानचेष्टितैः। कुर्वीताभिमुखान्भूत्यै देवान्सुकृतकर्मणा ॥
सद्भावेन हरेन्मित्रं सम्भ्रमेण च बान्धवान्। स्त्रीभृत्यान्प्रेमदानाभ्यां दाक्षिण्येनेतरं जनम् ॥
अनिन्दा परकृत्येषु स्वधर्मपरिपालनम्। कृपणेषु दयालुत्वं सर्वत्र मधुरा गिरः ॥
प्राणैरप्युपकारित्वं मित्रायाव्यभिचारिणे। गृहागते परिष्वङ्गः शक्त्या दानं सहिष्णुता ॥
स्वसमृद्धिष्वनुत्सेकः परवृद्धिष्वमत्सरः। नान्योपतापि वचनं मौनव्रतचरिष्णुता ॥
बन्धुभिर्बद्धसंयोगः सुजने चतुरस्रता। तच्चित्तानुविधायित्वमितिवृत्तं महात्मनाम् ॥
सनातने वर्त्मनि साधु तिष्ठताम्। अयं हि पन्था गृहमेधिनां मतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, इसका कारण भी नीतिसारकार की दृष्टि में दशविध वर्ग विभागों के संग्राहक संघटन सदाचारों का अभाव ही प्रतीत होता है। यह बात निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जायगी।

१—देवतावर्ग	शुचिरास्तिक्यपूतात्मा पूजयेद्देवताः सदा। 'देवान्सुकृतकर्मणा' (यागादिकर्मणा पूजोपहारादिना च।)
२—गुरुवर्ग	'देवतावद्गुरुजनं' 'प्रणिपातेन हि गुरून्'।
३—सुहृद्वर्ग	'आत्मवच्च सुहृज्जनम्'सद्भावेन हरेन्मित्रम्,प्राणैरप्युपकारित्वं मित्रायाव्यभिचारिणे।
४—विद्यावृद्धवर्ग	'सतोनूचानचेष्टितैः, सुजने चतुरस्रता। तच्चित्तानुविधायित्वम्'।
५—बन्धुवर्ग	'सम्भ्रमेण च वान्धवान्, बन्धुभिर्वद्धसंयोगः'
६—स्त्रीवर्ग } ७—भृत्यवर्ग }	'स्त्रीभृत्यान् प्रेमदानाभ्यां'।
८—इतरवर्ग	'दाक्षिण्येनेतरं जनम्'।
९—अतिथिवर्ग	'गृहागते परिष्वङ्गः शक्त्या दानं सहिष्णुता'।
१०—सर्वसाधारणवर्ग	'अनिन्दा परकृत्येषु स्वधर्मपरिपालनम्। कृपणेषु दयालुत्वं सर्वत्र मधुरा गिरः॥ स्वसमृद्धिष्वनुत्सेकः परवृद्धिष्वमत्सरः। नान्योपतापि वचनं मौनव्रतचरिष्णुता॥'

उपर्युक्त तालिका से अवगत होगा कि लोक-संग्राहक सदाचारों में उन-वर्गों के आराधन के लिये अपेक्षित सदाचारों का निरूपण सम्यक् प्रकार से विशद किया गया है। देशी राज्य आदि संस्थाओं का विलयन किस वर्ग के विरोध से हुआ है इसका आलोचन करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि राष्ट्र में आंग्ल शिक्षा के कारण आस्तिक्य का लोप होने लगा। आस्तिक्य के लोप से उपर्युक्त 'शुचिरास्तिक्यपूतात्मा पूजयेद्देवताः सदा' में कही हुई देवता-पूजा का भाव लुप्त हो जाने से घट-घट में रहनेवाले यथार्थ मनोदेवता वर्ग का प्रसाद, गुरुभक्ति एवं सुहृत्सम्पत्ति का अभाव हो गया, जिसका परिणाम सर्वसाधारण के स्थायी अनुरञ्जन के अभाव में प्रत्यक्ष प्रकट हुआ।

'स्वानि कर्माणि कुर्वाणा दूरे सन्तोऽपि मानवाः।
प्रिया भवन्ति लोकस्य'।

के न्याय से सर्वसाधारण विभाग का अनुरञ्जन उपर्युक्त स्थायी विश्वास से ही हो सकता है। पाश्चात्य संस्कृति की कृपा से यह कर्तव्यानुष्ठान शास्त्रों पर अविश्वास से हम लोगों में लुप्तप्राय हो गया है। पाश्चात्य संस्कृति से अविश्वास का वीज किस प्रकार रोपित हुआ है यह बात अब उपस्थित करता हूँ।

सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव समाश्रय नामक षाड्गुण्य में सन्धि सम्पादन करने में ही विग्रह आदि पाँच उपायों का उपयोग नीतिशास्त्र में कहा है। अर्थशास्त्र में सन्धि का लक्षण निम्नलिखित प्रकार से वर्णित है। 'राज्ञां विश्वासोपगमः सन्धिः' अर्थात् परस्पर का विश्वास प्राप्त करना ही सन्धि पदार्थ है। पणबन्ध आदिक तो विश्वास में हेतु होते हैं, अतः सन्धि शब्द से उनका गौण व्यवहार है। सन्धि के विषय में निम्नलिखित कौटिल्यसूत्र में और भी कहा गया है कि 'सत्यं शपथो वा चलसन्धिः, प्रतिभूः परिग्रहो वा स्थावर इत्याचार्याः, नेति कौटिल्यः' 'सत्यं शपथो वा परत्रेह च स्थावरस्सन्धिः, इहार्थ एव प्रतिभूः प्रतिग्रहो वा बलापेक्षः' 'संहिताःस्म इति सत्यसन्धाः पूर्वे राजानः सत्येन सन्दधिरे।' (अधिकरण ७ अध्याय १७) इन कौटिल्य-सूत्रों से स्पष्ट है कि सत्य एवं शपथ के साथ प्रतिभू और निक्षेप को लेकर की हुई सन्धि ही स्थिर है, ऐसा आचार्य कौटिल्य का सिद्धान्त है। यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्धि दोनों के दीर्घदर्शित्व की अपेक्षा करती है। यह टीका * से स्पष्ट है। इसी प्रकार नीतिसारकार ने भी स्वामिप्रकृति के गुणों में दीघदर्शिता गिनाई है। दीर्घदर्शित्व गुण की व्याख्या करते हुए जयमङ्गलाकार कहते हैं कि 'पूर्वोत्पन्न-कार्यविभागज्ञानेन दीर्घकालभाव्यर्थानुमानात् दीर्घदर्शी, स ह्यनागतवस्त्वपेक्षया प्रवर्तते न सहसा प्रवर्तते' इति। अर्थात् अतिपूर्व भूतकाल के कार्य-विभाग-ज्ञान से सुदीर्घ भविष्य का अ[illegible] दीर्घद[illegible]ता है। इससे पूर्वोत्तर जन्म की भी अवगति होती है। यहाँ तक शास्त्रीय दीर्घदर्शिता है, ऐसा दीघदर्शी [illegible]हस की प्रवृत्ति नहीं करता। किन्तु परिणाम अन्त तक समझकर प्रवृत्त होता है।

इससे यह मानना पड़ता है कि नेतृवर्ग में परलोक-भय का सुपरीक्षित अनुमान[illegible]क बुद्धि का होना आवश्यक है। न केवल अन्धश्रद्धाप्राप्त परलोक विश्वास पर्याप्त है। यह अनुमानात्मक बुद्धि वे[illegible]मूलक शास्त्रग्रहण ही से होना सम्भव है न कि आँग्लविद्या के ग्रहण से। वह वेदमूलक शास्त्रग्रहण भी यथाकथञ्चित् नहीं। अतः यथावत् अध्ययन से यहाँ पर विवक्षित ग्रहण किस स्वरूप का होना चाहिये स्पष्ट होना आवश्यक है।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा। ऊहोपोहोर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानञ्च धीगुणाः॥

इस प्रकार बुद्धि के गुण नीतिशास्त्र में प्रतिपादित हैं। उनमें श्रवणार्ह की श्रवणेच्छा शुश्रूषा है, जिसके रहने पर ही श्रवण होता है। तदनन्तर ग्रहण की "श्रुतानामर्थानामवधारणं ग्रहणं" ऐसी व्याख्या जयमङ्गलाकार करते हैं। इससे ग्रहण अवधारणात्मक निश्चय सिद्ध होता है। न्यायशास्त्र प्रामाण्यवाद गादाधरी में अवधारण बतलाया है "इदमित्थमेव" ऐसे स्थिर निश्चय को, ऐसी दशा में एक विकट समस्या अवश्य उपस्थित होती है कि 'न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि।' इत्यादि शास्त्रार्थों में इस प्रकार अवधारणात्मक निश्चय इस समय धार्मिकों में या ब्राह्मणों में कितनों को है? हम लोग विद्योपजीवी वैदिक शास्त्रि वर्गों में भी ऐसे भाग्यवान् कितने हैं जो कि अपने पुत्रों को आँग्लविद्या से परावृत्त कर वेदशास्त्राध्ययन में लगाते हुए दीखते हैं? यह एक गम्भीर आलोचनीय समस्या है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त अवधारणात्मक शास्त्रार्थज्ञान का लोप जोर से हो रहा है। अतः दीर्घदर्शित्व के जयमङ्ग-लोक्त व्याख्यानुसार परलोकभय से सुपरीक्षित अनुमान के अभाव से प्रजाओं में केवल अन्धविश्वासात्मक श्रद्धा मात्र रह गयी है। इस कारण सनातनधर्मानुयायियों की भी देशीराज्यसंस्था आदि का अपहरण हो गया है।

प्रजावर्ग के समान मित्रवर्ग का सद्भाव भी इन्हीं कारणों से नहीं रहा।

मित्रं स्वच्छतया रिपुं नयबलैः लुब्धं धनेनेश्वरम्। कार्येण द्विजमादरेण युवतिं प्रेम्णा शमैर्बान्धवान्॥
अत्युग्रं स्तुतिभिर्गुरुं प्रणतिभिः मूर्खं कथाभिः। बुधं विद्याभीरसिकं रसेन सकलं शीलेन कुर्याद्वशम्॥

इत्यादि नीतिवाक्य में स्पष्ट कहा गया है कि मित्रवर्ग स्वच्छता ही से वश होता है। स्वच्छता कहते हैं विश्वास को अतएव "सद्भावेन हरेन्मित्रं" की टीका "सद्भावो विश्वासः" की गई है। वश होने का अर्थ है

---

* विश्वासोपगमस्य कारणभेदात् सन्धिभेदमाचार्यमतेन तावदाह। सत्यमित्यादिना। सत्यमिति—सत्यमिदमित्यर्थकथनम्। शपथ इति स्वर्णादिस्पर्शनार्थकथनम्। आभ्यां कृतः सन्धिश्चलः अव्यवस्थितः, अविश्वसनीय इत्यर्थः।

प्रतिभूरिति। प्रमाणीकृतः मुख्यादिकृतः। प्रतिग्रहः, अनतिक्रमणार्थमर्पितः पुत्रादिः, आभ्यां कृतः स्थावरो विश्वास्य इत्यर्थः। आचार्योक्तिविपरीतं युक्तिगर्भं स्वमतमाह। सत्यमित्यादि। सत्यादयश्चत्वारोपि स्थावरा एव। किञ्च दीर्घदर्शितया पारलौकिकैहिकयोरनर्थयोः प्रत्यवेक्षणात् पूर्वपूर्वातिक्रमे सत्युत्तरापेक्षा सत्यशपथयोरतिक्रमे परलोकभयं तावदधिकम्। इह चासत्यश्चैहिकश्चेत्यविश्वास्यता। इत्युभयतो भयं सत्यशपथयोरतिक्रमे। प्रतिभूप्रतिग्रहयोस्तु दृष्टभयमेव, तदपि बलापेक्षम्। बलाभावे हि बलवता अवध्यतिक्रमे दुर्बलः प्रतिभूः किं कुर्यात्। एवं सन्ध्यर्थमर्पितो मत्पुत्रो मुच्यतामिति बलवतोक्ते दुर्बलस्य तन्मोचनमेव कार्यमिति व्यवस्थितिरित्याशयः। (नयचंद्रिका, अधि० ७ अ० १७)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथाज्ञाकारिता। क्योंकि "पितृपैतामहो वश्यः" में "वश्यः" की जयमङ्गला टीका "यथाज्ञाकारी" है। अतः इसका अभाव मित्रसंग्रह के अभाव द्वारा देशी राज्य आदि संस्थाओं के लोप का कारण हुआ। यह अवश्य कहना पड़ता है। इस प्रकार की दुर्दशा केवल प्राच्यपद्धति की संस्थाओं की नहीं है किन्तु पाश्चात्यनीति के अनुयायी राज्यसंस्था, विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं [illegible]। केवल दृष्ट लौकिक भय से कार्य करनेवालों की सन्धि आचार्य कौटिल्य के कथनानुसार स्थि[illegible]र्न से चल सन्धि ही से ये लोग सब कार्य करते हैं। परिणाम में महाभय जो वृत्तपत्र से देखने में आते [illegible] स्पष्ट है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सर्वविध आपत्ति का मूलकारण पूर्वोक्त आस्तिक्य, गुरुभक्ति सद्भाव सत्स[illegible]ति प्रभृति अवश्य अनुष्ठेयसदाचारों के अनुष्ठान न करने से उत्पन्न सर्वसाधारण यथार्थ-मनोदेवता रूपी भगवान् का प्रकोप ही है।

इस प्रकार के कराल-काल में भी नागरकुलभूषण मेहता महोदयों के द्वारा प्रवर्तित यह विद्यालय न्याय-मीमांसा आदि शास्त्रों के आलोचनपूर्वक "प्रत्यक्षपरोक्षानुमानलक्षणप्रमाणत्रयनिर्णीतायां फलसिद्धौ देशकालानुकूल्ये सति यथासाध्यमुपायानुष्ठानलक्षणा क्रिया नीतिर्नयः" इत्यादि लक्षणोक्त भारतीय राजनीति को अपने राजनीतिवर्ग के द्वारा व्यवस्थित करते हुए वेदशास्त्रों के विषय में कथञ्चित् शुश्रूषा, श्रवण, एवं ग्रहण को उज्जीवित कर रहा है, यह बात महाअन्धकार समय में खद्योतप्रकाश के समान यद्यपि नगण्य है तथापि दिग्दर्शनकारी हो सकती है, यह पूर्वोक्त बात स्पष्ट हो गयी।

विद्यालय के अध्यापक

१ श्री पं० श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड	अध्यक्षः
२ ,, ,, हरिराम शास्त्री शुक्ल	उपाध्यक्षः
३ ,, ,, नीलकण्ठ ज्यौतिषी	ज्योतिषाध्यापक
४ ,, ,, अनन्तरामभट पटवर्धन	ऋग्वेदाध्यापक
५ ,, ,, गणेशदीक्षित जावजीभट	शुक्ल यजुर्वेदाध्यापक
६ ,, ,, रामचन्द्र शर्मा घनपाठी	कृष्ण यजुर्वेदाध्यापक
७ ,, ,, रामाचार्य पुराणिक	काण्व वेदाध्यापक
८ ,, ,, रामचन्द्र शास्त्री मण्डळीकर	लेखाध्यक्ष
९ ,, ,, मुकुन्द शास्त्री पायगुण्डे	पुस्तकालयाध्यक्ष
१० ,, ,, राजाराम अटाले	व्यायाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्री वल्लभराम शालिग्राम दातव्य औषधालय, वाराणसी वार्षिक विवरण सं० २०१५

(१९५८–५९)

श्री वल्लभराम शालिग्राम सांगवेद विद्यालयीय औषधालय की स्था[illegible]र्ष पूर्व की गयी थी। आरंभ में विचार यही था कि विद्यालय के छात्रों—अध्यापकों को चिकित्सा सम्ब[illegible]विधा प्रदान करने के लिए औषधालय की स्थापना की जाय परन्तु पश्चात् अनुभव किया गया कि इसकी स्थाप[illegible] विस्तृत रूप से ही की जाय जिससे सर्वसाधारण को भी औषधी-निदान आदि का लाभ प्राप्त हो सके। इस स[illegible]ल्प का ही प्रभाव था कि यह चिकित्सालय आधुनिकतम यंत्रों से सुसज्ज एक जनोपयोगी अस्पताल के रूप में परिणत हो सका। आयुर्वेद औषधालय के अतिरिक्त अपनी रुचि और विश्वास के अनुसार प्रायः सभी प्रचलित-मान्य चिकित्सा प्रणाली के द्वारा (यथा ऐलोपेथिक, होमियोपेथिक) लाभ उठाने की यहाँ सुविधा प्राप्त है। काशी में पक्के महाल की वस्ती में अपने ढंग का यह निराला चिकित्सालय है। हमें यह सूचित करते हुए प्रसन्नता होती है कि सरकारी तथा अर्ध-सरकारी अनेक अस्पतालों को रहते हुए भी दूर मुहल्लों के रोगी हमारे यहाँ चिकित्सा कराना श्रेयस्कर समझते हैं क्योंकि औषधी आदि की सुव्यवस्थित सुविधा के साथ ही उन्हें चिकित्सकों के सौजन्यपूर्ण सत्परामर्श से नीरुज होने का अवसर प्राप्त होता है। प्रस्तुत वर्ष में यहाँ सभी विभागों में मिलकर ३५,५०३ रोगियों की चिकित्सा की गयी। और उन्हें १,२७,३३४ बार औषधी प्रदान की गयी। तत्तद् विभागों की सेवा का संक्षिप्त वृत्त इस प्रकार है :—

(१) मातृसेवासदन विभाग :—औषधालय की स्थापना के वाद यह अनुभव किया गया कि वाराणसी में विशेष कर पक्के महाल में सुविधाजनक एक भी निःशुल्क प्रसूतिगृह नहीं है। इस अभाव की पूर्त्ति के लिए सं० २००८ (१९५२ ई०) में मातृ सेवासदन की स्थापना हुई जिसमें तव केवल १० प्रसूताओं के लिए प्रसव की व्यवस्था थी। स्थान की संकीर्णता होने पर भी अब २० प्रसूताओं के लिए व्यवस्था कर दी गयी है। औषधि, पथ्य आदि भी निःशुल्क दिया जाता है। क्लिष्ट प्रसव तथा गर्भ-संबंधी आपरेशन के लिए यंत्र आदि यथेष्ट साधन उपलब्ध हैं परन्तु पर्याप्त स्थान की कमी से अभी उसे स्थगित रखा गया है। प्रस्तुत वर्ष (१९५८) में यहाँ ४४३ प्रसव कराये गये। ११ प्रसव ऐसे हुए जिसमें शिशु अविकसित, या गर्भगत विकार से मृत हुए अथवा पैदा होते ही मर गये। गर्भिणियों के लिए चिकित्सा कराने की विधिवत् व्यवस्था भी है जिसके अन्तर्गत १२०० रोगियों ने लाभ उठाया।

मातृसेवासदन में गत वर्ष से स्त्री रोगिणियों की सुविधा के लिए (गाइनिक) चिकित्सा की विशेष व्यवस्था की गयी है। इस विभाग में १४९७ स्त्री रोगिणियों की चिकित्सा की गयी। गर्भ के सामान्य आपरेशन के भी शीघ्र आरंभ किये जाने की आशा है।

मातृसेवासदन से संबद्ध प्रयोगशाला के द्वारा अस्पताल के रोगियों के लिए निःशुल्क मल, मूत्र, कफ, रक्त आदि के जाँच की व्यवस्था है। इस विभाग द्वारा ८५५ रोगियों का परीक्षणात्मक निदान किया गया।

(२) ऐलोपैथिक विभाग—ऐलोपैथिक विभाग की लोकप्रियता का प्रमाण इस विभाग से लाभ उठानेवाली रोगियों की संख्या से प्रकट होता है। प्रस्तुत वर्ष में ९,६३८ रोगियों की चिकित्सा की गयी जिन्हें २६२६३ बार औषधि दी गयी। नेत्र, मुख, नासिका विभाग के अन्तर्गत २६६७ व्यक्तियों को ८५४१ बार औषधि दी गयी। हमें संतोष है कि जन-स्वास्थ्य के कार्य में सीमित साधनों के रहते हुए भी सभी प्रकार के कार्य कताओं ने वड़े उत्साह और सौजन्य से कार्य किया। राजयक्ष्मा निरोधक औषधियों के वितरण के साथ-साथ इस विभाग के अन्तर्गत २५५७ व्यक्तियों को निःशुल्क इंजेक्शन लगाये गये और ५५० छोटे-मोटे आपरेशन के अतिरिक्त प्लास्टर चिकित्सा भी की गयी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१९५२ में एक्सरे विभाग खोला गया था। फिल्म तथा अन्य सामानों के दाम बढ़ जाने और सुविधानुसार उसके उपलब्ध न होने पर भी लागत मूल्य पर ही एक्सरे चित्र लेने की व्यवस्था है। इस वर्ष में ३४७ व्यक्तियों के एक्सरे चित्र लिये गये तथा ६९ व्यक्तियों का स्क्रीनिंग परीक्षण किया गया। कार्डियोग्राम यंत्र द्वारा हृद्रोग परीक्षण की व्यवस्था [illegible] आरंभ की गयी है। वाराणसी में कार्डियोग्राम परीक्षण की सुविधा अन्यत्र कहीं नहीं है। इस व[illegible] व्यक्तियों का लागत दाम पर कार्डियोग्राम यत्रं से परीक्षण किया गया। अब तक कार्डियोग्राम यंत्र से ल[illegible] उठानेवालों की संख्या १९६ है।

(३) **होमियोपैथिक विभाग**—इस विभाग के द्वारा निराश और जीर्ण रोगी अधिक संख्या में लाभ उठाते हैं। इस वर्ष में कुल १०१३१ व्यक्तियों ने इस विभाग की चिकित्सा से लाभ उठाया जिन्हें ५६६६१ बार औषधि दी गयी। पशुओं के अनेक रोगों का भी इलाज किया गया।

(४) **आयुर्वेद विभाग**—इस विभाग द्वारा ७२३७ व्यक्तियों की चिकित्सा की गयी और ३५८६९ बार औषधि प्रदान की गयी। विशेष रूप से यक्ष्मा, जीर्णज्वर-वातश्लेष्म ज्वर (इनफ्ल्युएंजा), संग्रहणी, अर्श, पाण्डु-कामला, मधुमेह, प्रदर, यकृत्प्लीहोदर, कण्ठमाला, वातरक्त, कुष्ठ, वातरोग, प्रसूतिज्वर, जिह्वा, मुख नेत्र रोगों की सफल चिकित्सा की गयी। अमृत तैल के निःशुल्क वितरण से सैकड़ों चर्म रोगियों ने लाभ उठाया है। औषधि निर्माण की भी पृथक् व्यवस्था है। वितरणार्थ सामान्य काष्ठौषधि एवं रस, भस्म का निर्माण भी यहीं होता है।

चिकित्सालय के कार्यकर्ता गण

प्रबन्ध विभाग

१—श्री उदयकृष्ण नागर व्यवस्थापक—मंत्री
२— ,, पं० गोपालराम जानी कोषाध्यक्ष

ऐलोपैथिक विभाग

१—डा० कोशलपति तिवारी एम० बी० बी० एस० (प्रधान चिकित्सक)
२— ,, मनोरंजन गांगुली रेडियोलोजिस्ट,
३— ,, रामजी जेतली, ए० एम० एस०,
४— ,, हरषद राय जन्मशंकर मंकोड़ी बी० ए०, ए० एम० एस०,
५— ,, आनन्दकुमार सेठ एम० डी० बी० एस०,(कार्डियोलाजिस्ट)
६— ,, डॉ० गुणवन्तराय मुन्सिफ (पेथोलाजिस्ट),
७— ,, लेडी डा० ह्वी० टप्पर, एल० एस० एम० एफ०,
८— ,, ,, डा० सुवीणा मुन्सिफ एम० बी० बी० एस०

होमियोपैथिक विभाग

१—डाक्टर वासुदेव चटर्जी
२— ,, देवीप्रसाद अग्रवाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयुर्वेद विभाग

१—श्री पं० विश्वनाथ पाण्डेय वैद्य आयुर्वेदाचार्य
२— „ „ दुर्गादत्त वैद्य, रसायन विशा
३— „ „ विश्वनाथ जोशी वैद्य

अन्य कार्यकर्त्तागण

एलोपैथिक विभाग

१—हीरेन्द्रनारायणसिंह
२—अमूल्यकुमार मुखर्जी „
३—के० शिवदास वारियर „
४—गुलाव दुवे

मातृ सेवासदन

१—श्रीमती मीनादेवी (मेट्रन)
२—मिसेज सोना० ई० सेमुएल नर्स
३—सरजू बालादेवी „
४—मिसेज नोरा स्मिथ „
५—सखुबाई कालेकर „
६—जवारानी देवी „
७—मनोरमा बाई (पथ्य विभाग)

आयुर्वेद विभाग

१—श्री काशीनाथ पांडेय
२—श्री रणछोड़जी नागर

होमियोपैथिक विभाग

१—सुनीलकुमार चक्रवर्त्ती
२—काशीनाथ भट्ट

विद्यालय परीक्षा में उत्तीर्णों की नामावली

सर्वोच्च परीक्षा

आपस्तम्ब वेद

१ कृष्णमूर्त्ति शर्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशुद्ध संस्कृत विद्यामन्दिर परीक्षा

	ऋग्वेद		
१ गणपति ऐताल	मध्यमा	१	खण्ड
२ रामचन्द्र शर्मा	,,	१	,,
	यजुर्वेद		
३ धुण्डिराज पर्वतीय	उत्तमा	३	खण्ड
४ लक्ष्मीकान्त दीक्षित	,,	१	,,
	आपस्तम्ब वेद		
५ देवेन्द्रभट	मध्यमा	३	खण्ड
	काण्ववेद		
६ श्रीधर घुशे	मध्यमा	२	खण्ड
७ वासुदेव घुशे	,,	२	,,

विद्यालयीय वार्षिक परीक्षा

उत्तम

यजुर्वेद

१ मनोहर जोशी

२ लक्ष्मीकान्त दीक्षित

३ सोमनाथ शर्मा

४ हिम्मतलाल शुक्ल

५ बद्रीनारायण

६ काशीराज सुवेदी

७ ढुण्डिराज पर्वतीय

आपस्तंब

८ देवेन्द्र भट

काण्व

९ लक्ष्मीकान्त खनङ्ग

१० वामन पेठकर

११ रामचन्द्र पेठकर

१२ रामचन्द्र राजहंस

१३ गोपाल देव

व्याकरण

१४ लोकनाथ शर्मा

काण्व

१५ वासुदेव घुशे

ज्यौतिष

१६ कमलाकर जोशी

१७ खेमराज शर्मा

१८ रामचन्द्र जोशी

न्याय

१९ रामचन्द्र होसमने

२० गणपति ऐताळ

२१ बळिराम शुक्ल

२२ चन्द्रशेखर शुक्ल

२३ दुर्गादत्त शर्मा

प्रथम

२४ बद्रीनाथ शर्मा

२५ गजराज शर्मा

२६ चिरंजीवी शर्मा

२७ लक्ष्मीकान्त आग्रे

कोशे

२८ अमोद उत्तरेश्वरी

२९ मोहनाथ शर्मा

३० भालचन्द्र आग्रे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यम

यजुर्वेद

१ विनायक बादल

ज्यौतिष

२ चूडामणि त्रिपाठी

न्याय

३ रामचन्द्र शर्मा

व्याकरण

४ श्रीधर घुशे

प्रथम

५ गंगाराम शर्मा

६ कलाधर शर्मा

७ [illegible]ङ्ग

८ श्याम[illegible] शर्मा

९ पुरुषोत्तम द्राविड

१० बाळकृष्ण सालवडकर

तृतीय

न्याय

१ देवेन्द्र भट

ज्यौतिष

२ मोहनप्रसाद

संकेश्वर शङ्कराचार्य पाठशाला

अध्यापक पं० जयराम शास्त्री शुक्ल

उत्तम

१ केदारनाथ शर्मा

कै० पं० सीतारामशास्त्री केळकर महोदय के स्मारकरूप में स्थापित

सिद्धेश्वर पाठशाला

अध्यापक पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार

उत्तम

१ राममणि शर्मा

शंकर पाठशाला

"साङ्गवेदोद्यान" राहुलपूर रामनगर

अध्यापक पं० गोपाल कृष्ण मूर्ति शास्त्री

उत्तम

१ वीरेश्वर द्राविड

२ विश्वेश्वर द्राविड

बालपाठशाला

कक्षा ५

३ प्रथम	७ द्वितीय	३ तृतीय

कक्षा ४

३ प्रथम	७ द्वितीय	४ तृतीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

	कक्षा ३	
२ प्रथम	१ द्वितीय	७ तृतीय
	कक्षा २	
१८ प्रथम	[illegible] द्वितीय	३ तृतीय
	कक्षा १	
११ प्रथम	९ द्वितीय	१ तृतीय
	कक्षा शिशु वर्ग	
१८ प्रथम	४ द्वितीय	५ तृतीय

उपासना विभाग

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को पाठशालीय सम्पूर्ण छात्र एवं अध्यापकों ने विद्यादेवताओं की उपासना कर विष्णु-धर्मोत्तरोक्त एवं गरुडपुराणोक्त विद्याव्रत को ग्रहण किया है।

विद्यालयाध्यक्षमहोदय ने निम्निलिखित गरुडपुराणोक्त शास्त्रवाक्य सुना कर व्रत ग्रहण कराया
विद्याव्रतप्रदं नित्यं गुरुं दैवतमित्यपि । तन्मुखाद्धि तदा तस्य निःश्रेयससमागमः ॥
सदा तदुक्तकारी स्यान्न स्यात्तच्छासनातिगः । तिष्ठेत्तिष्ठत्सु गुरुषु न चासीत तदग्रतः ॥
न शयीत तदासीने कुर्वीत वचनान्यपि । न लंघयीत वचनं गुरोः कृत्ये यतेत च ॥
निवेद्य गुरवे सर्वं कुर्यादादौ हिताहितम् । यशश्च विपुलं लब्ध्वा सदाचारप्रवर्तनम् ॥
पुत्रपौत्रश्रिया जुष्टः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् ।

शंकर जयन्ती

श्री १००८ आद्यशंकराचार्य जयन्त्युत्सव प्रतिवर्षानुसार वैशाख शुक्ल १ एवं ५ को मनाया गया। प्रातःकाल पूजन एवं वेदपाठ आदि कार्य हुए। अपराह्ण में श्री पं० प्र० पूर्णानन्द शास्त्री जोशी महोदय की अध्यक्षता में विद्यार्थियों का शास्त्रार्थ, भगवान् आद्य शंकराचार्य महाराज के अवतार-कार्य पर सारगर्भित भाषण एवं हरिकीर्तन हुआ।

सं० २०१५ वैशाख शुक्ल १ रविवासरे तथा ५ गुरुवासरे श्री मदाद्यशंकराचार्य जयन्त्युत्सव सभायां

उपस्थितविदुषां नामानि—

१ श्री प० प्र० राजेश्वर शास्त्री द्राविड
२ ,, पूर्णानन्द शास्त्री जोशी
३ ,, गणपति देव शास्त्री
४ ,, शालिग्रामजी ज्यौतिषी
५ ,, जयराम शास्त्री शुक्ल
६ ,, गणपति शास्त्री हेब्बार
७ ,, रामचन्द्र शास्त्री होसमने
८ ,, राम शास्त्री कुसुम्बेकर
९ ,, हरिराम शास्त्री
१० ,, रामचन्द्र मण्डळीकर
११ ,, कृष्ण शास्त्री
१२ ,, रामचन्द्र शास्त्री खनङ्ग
१३ ,, बलिराम शास्त्री सराफ
१४ ,, विष्णु शास्त्री चितले
१५ ,, गणपति शास्त्री वज्रटङ्क
१६ ,, रामप्रसाद जी त्रिपाठी
१७ ,, सुरेन्द्रनाथ शास्त्री
१८ ,, जागेश्वर जी पाठक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१९ श्री अनन्त शास्त्री फडके
२० ,, मुकुन्द शास्त्री खिस्ते
२१ ,, रामनाथ जी ज्यौतिषी
२२ ,, रामदत्त जी पर्वतीय
२३ ,, रामशंकर भट
२४ ,, प० प्र० दुर्गादत्त वैद्य
२५ ,, गोविन्द वोवा गोसावी
२६ ,, नीलकण्ठ राव जोशी
२७ ,, कृष्णाजी जोशी
२८ ,, नीलकण्ठजी ज्यौतिषी
२९ ,, नारायणराव कालेकर
३० ,, विश्वनाथजी पाण्डेय
३१ ,, श्रीगणेश दीक्षित
३२ ,, जगन्नाथ शास्त्री होशिंग
३३ ,, वैकुण्ठराम झा
३४ श्री कीर्त्यानन्द झा
३५ ,, कृष्ण शास्त्री मोकाटे
३६ ,, विश्वनाथ शास्त्री दातार
३७ ,, गोवि[illegible] शास्त्री वैजापुरकर
३८ ,, दि[illegible]शास्त्री जोशी
३९ ,, तार[illegible]नाथ [illegible]ट्टाचार्य
४० ,, हरिपद स्मृति[illegible]र्थ
४१ ,, वीरेश्वर शास्त्री [illegible]
४२ ,, रामरतन सांख्यतीर्थ
४३ ,, गंगाधर भट्टाचार्य
४४ ,, जनार्दन शास्त्री खुण्टे
४५ ,, डॉ० जयन्त मोदी
४६ ,, श्री रघुनाथ लक्ष्मण काले
४७ ,, विष्णु विनायक काले

श्री शङ्कराचार्य जयन्त्युत्सवावसरे शास्त्रार्थविचारे प्रश्नः—अनैकान्तिकत्वादित्यत्र आत्मनः अभावाप्रतियोगित्व-साधकाः के तर्का विवक्षिताः—

उ० वादी—गोपालकृष्ण मूर्ति

१ आत्मनः ध्वंसप्रागभावप्रतियोगित्वं न सम्भवति स्वेन स्वप्रागभावध्वंसादेर्ग्रहीतुमशक्यत्वात्। अन्यस्य जडत्वात् तेन ग्रहीतुं न शक्यते अन्येनापि आत्मना ग्रहीतुं न शक्यते अन्यस्याभावात्। सर्वत्र सदिति प्रतीतेः सत्त्वादात्मनः अत्यन्ताभावो न सम्भवति। सर्वस्य आत्मनि अध्यस्तत्वात् आधिष्ठानतादात्म्यस्य आरोपिते स्वीकारेण अत्मनः भेदोपि न सम्भवति।

२ अत्र साध्यपक्षहेतुभावः कीदृशः।

१ भूम्यादौ आत्मभेदः साध्यः अनैकान्तिकत्वं हेतुः।

२ परस्परतादात्म्याभावः यदि साध्यः तर्हि आत्मनि भूम्यादिभेदसाधने को हेतुः।

१ तुल्यवित्तिवेद्यतया सिद्धयति।

२ आत्मभेदप्रतियोगित्वं आत्मनि वर्तते इति व्यभिचारः।

१ आत्ममात्रविषयकज्ञानविषयत्वाभावः साध्यः।

२ तर्हि तर्कस्य कः आकारः।

१ भूम्यादिः यदि आत्ममात्रविषयकधीविषयः स्यात् तर्हि परिच्छिन्नत्वाभाववान् स्यात् इति तर्कः।

२ तत्परिच्छिन्नानां घटादिवदनात्मत्वात् इति ग्रन्थेन किमुक्तम्।

१ आत्मत्वव्यापकं अपरिच्छिन्नत्वं न भवेत् घटादीनां अपरिच्छिन्नत्वे,

२ घटादीनां अपरिच्छिन्नत्वेपि आत्मत्वव्यापकत्वे का क्षतिः अपरिच्छिन्नत्वस्य।

१ घटादिषु आत्ममात्रविषयक ज्ञान विषयत्वेत्यादि तर्के आपाद्यव्यतिरेकस्य निश्चयः अपेक्षितः इति कृत्वा स अनेन ग्रन्थेनोक्तः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ ध्वंसप्रागभावप्रतियोगित्वाभावादि प्रतिपादक तर्काणां क उपयोगः स्यात् ।

१ आत्मा यदि अपरिच्छिन्नत्ववान् न स्यात् तर्हि ध्वंस प्रागभावादि प्रतियोगित्वाद्यन्यतमवान् स्यात् ।
आत्मा यदि ध्वंस प्रतियोगी स्यात् तर्हि आत्मान्येन गृहीतःस्यात् ।
ध्वंसः यदि आत्मप्रतियोगिकः स्यात् तर्हि ध्वंसत्वाभाववान् स्यात् ।

२ अत्यन्ताभावप्रति[illegible] साधनीयः ।

१ सर्वस्यैव आत्मनि[illegible]त्वेन जगति सत्तादात्म्यस्य सत्वात् न ब्रह्मणः अत्यन्ताभावप्रतियोगित्वम् ।

२ सत्तादात्म्यस्य [illegible]विद्यिकत्वेन तस्य अभावः सर्वत्रैव आगतः तथा च कथं न अत्यन्ताभावप्रतियोगित्वम् ।

१ सत्यस्य स[illegible]मिति श्रुत्या ब्रह्मणः सत्वं पारमार्थिकं उक्तम् तन्न स्यात् ।

२ सत्यस्य सत्यमिति श्रुतेः कोऽर्थः । कथं च तत्पीडा भवेत् । एवं भेदः कथं नाङ्गीक्रियते । घटः सन् इत्यादि प्रतीत्या भेदः अङ्गीकर्तव्य एव ।

१ तत्र भेदः प्रातिभासिकः अङ्गीक्रियते । अभेदस्तु व्यावहारिकः ।

२ तथापि भेदप्रतियोगित्वं आगतमेव ।

१ व्यावहारिकभेदप्रतियोगित्वाभाव एव उच्यते ।

२ प्रागभावध्वंसयोः प्रतियोगिनः सूक्ष्मरूपमेव भवतीति कृत्वा प्रागभावाः ध्वंसाः प्रतियोगिनश्च ब्रह्म ज्ञानात्पूर्वं वर्तन्त एव तथाच ध्वंसकाले प्रतियोगी नास्तीति कथमुच्यते ।

गोपालकृष्ण मूर्त्ति

सम्पृष्टांशे श्री गोपालकृष्ण मूर्तिना साधु अभिहितं अतः पारितोषिक मर्हति स एव ।

दिवाकर जोशी
गो० न० वैजापुरकर
जयराम शास्त्री
वि० रा० शा० दातार
कीर्त्यानन्द झा
रामचन्द्र होसमने
गणपति हेब्बार
रामचन्द्र मण्डलीकर
रघुनाथ लक्ष्मण काले
विष्णु विनायक काले
हरिराम शुक्लः
रा० ना० ज्यौ०

रा० शा० द्रा०
अ० शा० फडके
श्री हरिपद भट्टाचार्यः
श्री रामरतन भट्टाचार्यः
तारकनाथ भट्टाचार्य
वीरेश्वर भट्टाचार्य
पूर्णानन्द शास्त्री जोशी
गंगाधर भट्टाचार्य
जयंत मोदी
जनार्दन शास्त्री खुण्टे
शालिग्राम
कृ० शा० मोकाटे

पूजनीय धर्मप्राण लक्ष्मण शास्त्री द्राविड स्मृतिसभा

सौर ज्येष्ठ मास के कृष्ण ४ (आषाढ़ कृ० ४ गुरुवार) को सांगवेद विद्यालय में रात्रौ ७ बजे श्री पं० नीलकण्ठजी ज्यौतिषी महोदय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

इसमें "वर्तमान परिस्थितौ भारतीयराजनीत्यनुष्ठाने देशकालानुकूल्यं भवितुमर्हति न वा" इस विषय पर तथा शास्त्रिचरण के गुणवर्णन पर पं० हरिराम शास्त्री, पं० गणपति शास्त्री, जयराम शास्त्री प्रभृति वक्ताओं के भाषण हुए । अनन्तर श्री शास्त्रीजी की भृगु संहिता का फल सुनाया गया जो निम्नप्रकार का है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवत् १९३३, चैत्र शु० १२,

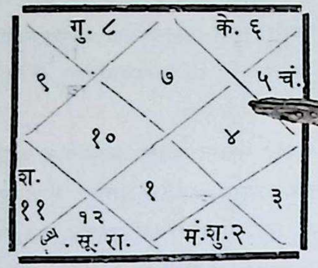

शुक्र उवाच—

भवेदेतादृशी पत्री यज्जीवस्य महामते ! तत्किं फलमवाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो !

भृगुरुवाच—

तुलालग्नोदये जन्म तदीशो निधनभावगः । भूमिपुत्रोऽपि तत्रैव द्वितीये तु गुरुस्तथा ॥
पञ्चमे तु शनिश्चैव तमो वै शत्रुभावगः । दिवानाथेन संयुक्तश्चन्द्रपुत्रोऽपि तत्र च ॥
निशानाथो लाभगेहे शिखी वै व्ययगेहगः । एतत्खेटानुसारेण विप्रवंशे तु बालकः ॥
सर्व सौख्येन संयुक्तः सर्वशास्त्र विशारदः । विद्याहर्षो विशेषेण धनधान्य सुखान्वितः ॥
निज जीवने महाप्राज्ञ ! ख्यातियुक्तो विशेषतः । सम्मान युक्तो विशेषेण ख्यातिस्तस्य दिगन्तरे ॥
पुत्रकन्या सुखं वाच्यं भृगुमन्त्राद्विशेषतः । अन्यथा मुनिशार्दूल ! चिन्तायुक्तोऽपि वै सुतः ॥
वेद भ्रातृकः प्रजायते जीवने हि महामते ! एक भ्रातृमृतिः सत्यं जीवने यौवने भवेत् ॥
विंशवर्षेऽथवा योगिन् ! भ्रातृशोकोऽपि जीवने । मातापितृसुखे चापि विघ्नबाधा भविष्यति ॥
तीव्र बुद्धिः सुशीलश्च परदुःखेन दुःखितः । पूर्णविद्याऽपि जायेत विद्या तस्य प्रकाशदा ॥
कुशाग्र बुद्धिर्भवेत्सत्यं धर्मकृत्ये रुचिर्बहुः । सभायां विजयी चैव वरदा तु सरस्वती ॥
सम्मान वृद्धिर्धनवृद्धिर्विद्यया जीवने भवेत् । एक पुत्र सुखं वाच्यं पुत्रोऽपि ख्यातिमान् भवेत् ॥
सरस्वत्या महाप्राज्ञ ! वरदपुत्रोऽपि तत्सुतः । पूर्वपापप्रभावेण पुत्र चिन्तायुतो भवेत् ॥
पुत्रवध्वाः सुखे चापि विघ्नबाधा बहुतरा । परिवारसौख्ये विघ्नबाधा जीवने हि त्वमन्त्रतः ॥
यावज्जीवति भूभागे परिवार चिन्तायुतो भवेत् । चन्द्रदारमृतिर्वाच्या तत्सुतस्य च यौवने ॥
चन्द्रभार्यया महाप्राज्ञ ! पुत्र सौख्यं न जायते । नेत्र भार्यया तथा तात ! पुत्रोऽपि दुःखितो बहु ॥
परिवारे कलहश्चैव सर्वसौख्ययुतेऽपिवै । पुत्रवधूर्भवेत्तस्य क्रोधयुक्ता विशेषतः ॥
चञ्चला प्रकृतिश्चैव पुत्रवध्वा महामुने ! भृगुमन्त्रे कृते योगिन् ! पौत्र सौख्यं सुनिश्चितम् ॥
शत्रुतो रोगतश्चैव परिवार चिन्तायुतः सुतः । आयुर्मध्ये भयं वाच्यं पराभिचार प्रभावतः ॥
वेदबाणं ५४ समारभ्य बाणबाण ५५ तरावधि । दशा श्रेयस्करी नैव देहकष्टी भविष्यति ॥
मनसि चिन्तायुतो वाच्यः शत्रु चिन्तापि जायते । शनैः शनै रोगवृद्धिः गुप्तरूपेण वै कवे !
विष्णु भक्तिप्रभावेण मारकेशोऽपि खण्डितः । रसबाणं समारभ्य नगबाणतरावधि ॥
अकस्माद्देहकष्टी च वङ्गदेशे भविष्यति । वङ्गदेशे रोगवृद्धिः सत्यं वै मुनिपुङ्गव !
औषधिर्विरसा चैव रोगवृद्धिर्विशेषतः । "श्रीकृष्ण! गोविन्द! हरे! मुरारे! हे नाथ! नारायण! वासुदेव !
इति मन्त्र प्रभावेण तीर्थमृत्युर्भविष्यति । यात्रायां रोगवृद्धिः सम्भविष्यति त्वमन्त्रतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समायाते तीर्थभूमौ जीवने संशयो महान् । किञ्चित्कालान्तरे तात ! तीर्थभूमौ मृतिर्भवेत् ॥
मृत्युकाले महाप्राज्ञ ! पुत्रस्नेहेन वै कवे ! पूर्णं शान्तिर्नतु तस्य चित्ते वै मुनिपुङ्गव !
तद्दोषस्य प्रभावेण नात्मा शान्तिं लभेत च । नगवाणे तीर्थमृत्युः सत्यं वै मुनिपुङ्गव !
दीर्घायुश्च न जायेत जीवने पूर्वपापतः । पूर्वजन्मकृतात्पापात्पूर्णायुर्नैव जायते ॥
[illegible]न्महाप्राज्ञ ! तत्पुत्रो दुःखितो वहु ।

शुक्रउवाच—

पूर्वजन्मनि [illegible] कर्म कृतं तद्घोररूपकम् । तन्मे वद महायोगिन् ! सर्वज्ञोऽसि यतः प्रभो !

भृगुउवाच—

पूर्वजन्मनि वालोऽयं विप्रवंशे धनी महान् । न्यायाधीशोऽपि वै योगिन् ! नृपतुल्यसुखी तथा ॥
एकदा समये योगिन् ! धनलोभप्रभावतः । विश्वासघातं कृतवान् मित्रेण सह वै कवे !
तेन पापप्रभावेण धनचिन्ता स्वगेहके । पुत्रवध्वादिके सौख्ये विघ्नवाधा भविष्यति ॥
नगवाणे तीर्थमृत्युर्मोक्षप्राप्तौ च बाधकम् । मृत्योः पश्चात्तथा तात ! पूर्णशान्तिर्गृहे न तु ॥
दारहेतोः सुताहेतोस्तत्पुत्रो दुःखितो वहु । मृतपितुस्तथा तात ! श्रवणं तु करिष्यति ॥
भृगुश रस्त्रस्य श्रवणं जीवने मुनिपुङ्गव ! चित्ते शान्ति स्तथा नैव दम्पत्योः स्नेहवाधकम् ॥
पौत्र सौख्ये विलम्बश्च पौत्र सौख्यं तु मन्त्रतः । सुताविवाहे विघ्नबाधा विरक्तोऽपि सुतो भवेत् ॥
परसाहाय्यं सम्प्राप्य कन्योद्वाहो भविष्यति । कन्याहेतोस्तथा तात ! सम्मानवाधापि सम्भवेत् ॥
मृतपत्रिका महाप्राज्ञ ! तस्माद्यत्नो न जायते । तत्पुत्रोऽपि महायोगिन् ! गृहतश्च पृथग्भवेत् ॥
विरक्त बुद्धि प्रभावेण सुतो वै धार्मिको वहु । परमां शान्ति तथा तात ! नाप्नोति पितृदोषतः ॥
कुलदोषेण वै योगिन् ! चित्ते शान्तिर्न जायते । तद्दोष परिहारार्थं तीर्थभूमौ महामते !
श्रीमद्भागवतस्य विधिवच्छ्रवणं चरेत् । परादेव्याहि सूक्तस्य पाठं तात ! तथा चरेत् ॥
इति यत्ने कृते योगिन् ! चित्ते शान्तिः सुतस्य च । परिवारे सौख्यवृद्धिश्च पुत्रपौत्रभयं न तु ॥
अकस्माद्धनवृद्धिश्च पुत्रभाग्योदयो बहुः । कापि चिन्ता न जायेत परिवारे सौख्यदा दशा ॥
धनधान्यसुखं पूर्णं चात्मशान्तिर्भविष्यति । आयुर्मध्ये भयं नैव पुत्रस्य मुनिपुङ्गव !
वायुजन्यविकारेण पुत्रकष्टी न जीवने । दीर्घायुष्यं लभेत्सत्यं तत्पुत्रोऽपि महामते !
शक्तिमन्त्रजपेनापि श्रवणेन भागवतस्य च । पुत्रोऽपि सौख्यसम्पन्नः परमां शान्ति पितुर्लभेत् ॥
मृतोऽपि मोक्षमाप्नोति तुलालग्नफलन्त्विदम् ॥

इति श्रीभृगुसंहितायां भृगुशुक्रसंवादे कुण्डल्यध्याये मृतजन्तोस्तुलालग्नफलं समाप्तम् ।

श्रीगणेशोपासना

श्रीवल्लभराम–शालिग्राम–साङ्गवेद विद्यालय में सं० २०१५ भाद्रपद शुक्ल तृतीया मङ्गलवार से दशमी सोमवार तक श्रीविद्यादेवतासहित भगवान् गणेशजी का उत्सव हुआ। जिसमें श्री भगवान् गणेशजी की सहस्रनामद्वारा उपासना, हवन, वेद एवं शास्त्रों में प्रतियोगिता परीक्षायें, कविसम्मेलन, व्याख्यान प्रतियोगिता, वैदिकों की वसन्तपूजा, गीर्वाणवाग्वर्धिनी सभा विद्वत्परिषद् भगवान् धर्मनारायण समेत गणेश भगवान् की शोभा यात्रा संगीत आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतियोगिता परीक्षा में निम्नलिखित विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए

ऋग्वेद में—रामचन्द्र शर्मा, एवं गणपति ऐताळ, साङ्गवेद विद्यालय।
यजुर्वेद में—लक्ष्मीकान्त दीक्षित एवं मनोहर जोशी साङ्गवेद विद्यालय।
आपस्तम्ब में—वीरेश्वर द्राविड शंकर पाठशाला, सांगवेदोद्यान राहुलपु[illegible]गर।
काण्व में—श्रीधर घुशे एवं वासुदेव घुशे सांगवेद विद्यालय।
ज्यौतिष में—कमलाकर जोशी। ,,
व्याकरण में—रामयत्न शुक्ल, लोकनाथ शर्मा एवं सियाराम शर्मा।
संस्कृत कवि सम्मेलन में—शिवदत्त चतुर्वेदी।
न्याय में—गणपति ऐताळ, बळिराम शुक्ल एवं गोपालकृष्ण मूर्ति।

द्वितीयदिने

ऋग्वेद संहितायां ७ अष्टके प्रश्नः (आदितः)

पाठक—रामचन्द्र शर्मा — प्रतिपाठक—गणपति ऐताळ

उभाभ्यां सम्पृष्टांशे निर्णीतसमयान्तं पठितमत उभावपि समौ पारितोषिकार्हाविति निश्चिनुमः।

श्री बालकृष्ण पञ्चोली	श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविडः
,, शम्भुपाध्ये	,, अनन्तराम भट पटवर्धन
,, गणेश दीक्षित	,, हरिभाऊ पेंढारकर
,, ब्र० गंगाप्रकाश	,, नारायण दीक्षित जोशी
,, दुर्गादत्त वैद्य	,, शंकरदत्त पण्ड्या
,, नी० शा० ज्यौ०	,, वामन जोशी
,, लक्ष्मीकान्त रामाचार्य पुराणिक	,, मुकुन्द पायगुण्डे
,, जयराम शुक्ल	,, रामचन्द्र शास्त्री पणशीकर
,, पूर्णानन्द शास्त्री जोशी	,, सीताराम पुराणिक
,, रामचन्द्र गोपीनाथ शास्त्री मण्डळीकर	,, मुरारीलाल मेहता (अध्यक्षः)

शुक्लयजुर्वेद पदे (आदितः) १९ अध्याये प्रश्नः—

(स्वाद्वींत्वा)

पाठक—लक्ष्मीकान्त दीक्षित — प्रतिपाठकः—मनोहर जोशी

आभ्यामुभाभ्यामपि सम्पृष्टांशे आन्तं सम्यक् पाठः कृतोऽत उभावपि पारितोषिकार्हाविति निश्चिनुमः। इति।

श्री गणेश दीक्षित	श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविडः
बालकृष्ण पंचोली	जगदीश शुक्लः
लक्ष्मीकान्त रामाचार्य पुराणिक	दत्तात्रेय मण्डलीकरः
दामोदर भट्टराई	बद्रीनाथ गणोरकर
काशीनाथ भट्ट	मांगीलाल वेदपाठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महादेव भट्ट औंढेकर
रघुनाथ भट जी अगस्ति
हरिराम भट्ट घोडेकर
गोविन्द मार्तण्डशास्त्री घोडेकर
पं० बालकृष्ण जेतली
मङ्गलेश्वर धुण्डिराज बादल
रा० गो० मण्डलीकर

सोमनाथ भट्ट चान्देकर
लक्ष्मीनारायण
नित्यानन्द मिश्र गौड़
कृष्णं भट्ट राशिकर
तारानाथ मोहले
पूर्णानन्द शास्त्री जोशी
काशीनाथ तिवारी
पं० नी० शा० ज्यौ०
मुरारीलाल मेहता (अध्यक्षः)

कृष्णयजुर्वेद ब्राह्मणे २ अष्टके प्रश्नः–

ब्रह्मवादिनो वदन्ति.

पाठकः—वीरेश्वर द्राविडः

आन्तं अनेन सम्यक् पाठः कृत इति पारितोषिकमर्हति स एव।

वालकृष्ण पंचोली
कल्पनाथ शर्मा
रा० ना० ज्यौ०
गणपतिदेव शास्त्री
दुर्गादत्त वैद्य
शालिग्राम ज्यौतिषी
गोविन्द शास्त्री पाठक

रामचन्द्र घनपाठी
रामजी शास्त्री द्राविड
रामचन्द्र शा० वर्कले
श्रीगणेश दीक्षित
गोपालकृष्ण मूर्ति
रा० गो० मण्डलीकर
मुरारीलाल मेहता (अध्यक्षः)

पीयूषधारासहित मुहूर्तचिन्तामणौ प्रश्नः–

चौलमुहूर्तं व्याख्यायताम्।

प्र० वादी—कमलाकर जोशी—

चूडावर्षादिति पद्यं व्याख्यातम्

अत्र मध्यस्थानां प्रश्नः—चन्द्रशुद्धौ ताराशुद्धिर्भवतिनवा जन्मनक्षत्रात् इष्टदिननक्षत्रे नवभिर्भक्ते तृतीय सप्त पञ्च संख्या अवशिष्यते चेन्नताराशुद्धिः अन्यथा ताराशुद्धिर्भवति।

कमलाकरः—रविशुद्धौ गृहकरणमित्यादिना कर्म विशेषे कुत्रचित् चन्द्रमसः शुद्धिर्ग्राह्या कुत्रचित्तारायाः प्राधान्यम्।

मध्य०—चतुर्थाष्टमचन्द्रमसि ताराशुद्धौ क्षौरं कार्यं न वा।

कमला०—तारादौष्टचेब्जे त्रिकोणोच्चगे वा। इति पद्येन चन्द्रमसः शुद्धौ ताराशुद्धिर्भवति।

मध्य०—चौलाप्रकरणे त्याज्यत्वं प्रतिपाद्यताम्।

उ०—पुनः पूर्वश्लोको व्याख्यातः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ च पंचमासाधिके मातुर्गर्भे ....

शिशोः चौलं न सत् भवति । इत्यादि श्लोकार्थो व्याख्यातः द्वितीये पञ्चमेऽब्दे वा ....इत्यादि- वसिष्ठ वाक्येन स्वकुलाचारतो व्यवस्था कार्या। येषां वेदोक्त वि[illegible]संस्कारः क्रियते तत्रैव मुहूर्त्तव्यवस्था नान्यत्र ।

मध्य०—कुलाचारस्यैव प्रामाण्यं चेत् तदा मुहूर्त्तग्रन्थेषु प्रतिपादितमुहूर्त्तानां का व्यवस्था[illegible]

उ०—येषां कुले प्रथमेब्दे द्वितीयेब्देवा चौलं भवति तैः स्वाचार प्रामाण्यात् तेष्वेव वर्षेषु चौल[illegible] कर्तव्यम् ।

कमलाकर जोशी

उत्तर प्रदात्रा चौलमुहूर्त्ते सम्यग्विचारितमतः स पारितोपिकार्हः । इति ।

बालकृष्ण पंचोली
कल्पनाथ शर्मा
सुरेन्द्रनाथ शास्त्री
रामदत्त शास्त्री पर्वतीय
पूर्णानन्द शास्त्री जोशी
केदारनाथ बुटौलिया

मीठालाल ओझा
गणपतिदेव शास्त्री
श्री रामनाथ शास्त्री ज्यौतिपाचार्यः
दुर्गादत्त वैद्य
शालिग्राम ज्यौतिषी
पं० नीलकण्ठ शा० ज्यौतिपी
गोविन्द पाठक

कामन्दकीय नीतिसारे प्रश्नः–

वेदापौरुषेयत्वानुमानं व्याख्यायताम् ।

१ बलिराम शुक्ल

२ गणपति ऐताल

उभयोरपि सम्यगुपस्थितिर्नास्ति । इति मध्यस्थनिर्णयः ।

बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते
रा० ना० ज्यौ०
दुर्गादत्त वैद्य
उपेन्द्र राजहंसः

जगन्नाथ शास्त्री होशिंग
रा० शा० द्राविड
केदारनाथ बु०
पं० नी० शा० ज्यौ०
रा० गो० मण्डलीकर

कविसम्मेलने प्रश्नः

१ मदभर पुञ्जित मधुकर गुञ्जित विनिमिलितेक्षणं किमपि ।
शिखरिण्या परिवर्णय मङ्गलमूलं मदः शिवयोः ॥

२ हंसावतंस ! जलदागम संभृतेऽस्मिन्
काले विलम्बित मिदं कुरुते न मोदम् ।
को वा ऽधिष्ठति सुधीर्वचने सुधार्द्रे
विद्वज्जनेष्वपि च मौनविनोदमुद्राम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोषानुद्भासितानत्र नामग्राहं विनिर्दिशन् ।
निर्दुष्टपदविन्यासैः पद्यं विपरिवर्तय ॥

३ "संदेहिनो देहिनः"

नूतनार्थसमुल्ला[illegible] चम[illegible]ारि पदक्रमाम् ।
[illegible]मस्यामुपरिन्यस्तां परिपूरय सत्वरम् ॥

---

१ "गणपतिः"

गणानां सर्वेषां विबुधनिचयानामधिपतिं
नमामि त्वां सद्यः सफलमिह यस्यास्ति नमनम् ।
विना नत्वा देवं न खलु परिपूर्णं किमपि यत्
ततः कार्यारम्भे स्मरति जनता तं गणपतिम् ॥

३ १ "संदेहिनो देहिनः"

कालेस्मिन्कलिरेष दीप्यतितमामासाद्य राज्यं निजं
संसारे नितरामणोः प्रवलता राष्ट्राणि संवाधते ।
बुद्धिर्याति रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधोगच्छति
जीवामोत्र कथं विविच्य मनसा "सन्देहिनो देहिनः" ॥

२ किं न्यायाम्बुधिमन्दरोऽयमथवा साहित्य चिन्तामणिः
किंवेदान्त विचार सार निपुणो राजेश्वरो मूर्त्तिमान् ।
किंत्स्विद्धर्म विनिर्णयैकधिषणः किं वेदविद्या विधुः
इत्थं नैव विनिर्णयं जगदिरे "सन्देहिनो देहिनः" ॥

२ चतुर्थपादे "विद्वज्जनेष्वपिच" इत्यत्र अधिकपदत्वं दोषः। "विद्वज्जनेष्विह हि' इति न्याय्यम् । हंसस्य वर्षाकाले आह्वाने तदागमनविलम्बे मोदाकरण कथने "कविसमयख्यात विरुद्धता" दोषः 'जलधर समये मानसं यान्ति हंसाः" इति कविनां समयात् । उत्तरार्धे अभवन्मतसम्बन्धो नाम दोषः, अर्थान्तरञ्च कवेरभिमतः सतु नोपपद्यते । "विद्वज्जने" अत्र श्रुतिकटुत्वम् ।

शिवदत्त चतुर्वेदः

कविसम्मेलने सकलप्रश्नानां यथा सम्भवं समुचितया पूर्त्या श्री शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः पुरस्कारमर्हतीति विदुषां निर्णयः ।

केदारनाथ बुटौलिया
उपेन्द्र राजहंस
वि० रा० शा० दातार
जयराम शुक्लः
रा० गो० मण्डलीकरः
केशव शास्त्री लोकरे
जगन्नाथ शास्त्री होशिङ्गः
वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते
श्री रामनाथ शास्त्री ज्यौतिषाचार्यः
दुर्गादत्त वैद्य
पं० नी० शा० ज्यौ०
रा० शा० द्रा०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्याकरणे सिद्धान्तकौमुद्यां रामशब्दपर्यन्तग्रन्थे प्रश्नः--

"अतो दीर्घो यञि" इत्यत्र सार्वधातुकपदमननुवर्त्य तेनैव "रामाभ्याम्" इत्यादौ दीर्घे सिद्धे "सुपि च" इति सूत्रं व्यर्थं न वेति विविच्यताम्।

१ पू० वासुदेव घुशे
२ उ० रामयत्न शुक्लः
२ रामाभ्यामित्यादिसिद्ध्यर्थं सुपि चेति आवश्यकम्।
१ अतोदीर्घ........इत्यनेन सिद्ध्यति।
२ सार्वधातुकपदाननुवृत्तौ कोऽर्थः।
१ अदन्ताङ्गस्य दीर्घो यञि इति।
२ केशाद्वः इति केशव इत्यत्र दीर्घः स्यात्।
१ केशादव इति क्रियते।
२ अवे सति कथं वारणम्।
१ यस्येति चेति सूत्रेण शकारस्याकारलोपेन।
२ कोऽर्थः।
१ भस्य इवर्णावर्णयोर्लोपस्तद्धिते इति।
२ हिरण्यादीनामित्यन्तः पाति अन्येभ्योपीति विधिना मणिशब्दात्तस्मिन्नेव प्रत्यये कृते मणि अव इत्यत्र यस्येति लोपे मणव इति स्यात् न मणिवः इति।
१ लोकनाथः—

न अवेति विवक्षणीयम्। किन्तु व इत्येव, दीर्घवारणं तु शृंगभृंगवृन्देत्यादि सूत्रे आकारग्रहणं व्यर्थं सत् ज्ञापयति तद्धिते प्रत्यये न दीर्घ इति।

२ पयधातोर्वनिपि यकार लोपे पवा न स्यात् पावा इति स्यात्।
१ इतितु कृदन्तेऽपि न भवति ज्ञापकात् अन्यथा विड्वन्तेरित्याद्विधानेन अन्तवेति रूपसाधने आत्वं कर्तव्यम्। ओ अवन् अव अन् इत्यवस्थायां अतोदीर्घ इत्यनेनैव सिद्धेः, आत् विधानेन कृदन्तेऽपि न दीर्घ इति ज्ञाप्यते। तथा च पावा इति नानिष्टसिद्धिः।
२ तर्हि पचध्वमित्यत्र एत्वापत्तिः।
१ अध्वमितिप्रत्ययः कार्यः।
२ तर्हि ऐधिषध्वमित्यनिष्टं स्यात्।
१ तर्हि अध्वमिति त्यज्यते। वहुवचने स्म्येत् इति न्यासः क्रियते तेनैव पचध्वमित्यत्र नापत्तिः।
२ कोऽर्थः।
१ यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे इति परिभाषया सादौ भादौ वहुवचने एत्वं इत्यादिरर्थः।
२ समोगम्पृच्छिभ्यां इति सम् गम् लिङि, सम्ग सीयुट लिङ अत्र सादिः सीयुट विशिष्टः तत्र एत्वं स्यात्।
१ साहचर्यपरिभाषया सुबेवसादि प्रत्ययः। भादेस्तत्र सुप्प्रत्ययत्वात्।
२ पटुशब्दात् ओतोगुणवचनादिति ङीप्रत्यये कृते सति गुणः स्यात्।
१ ऋन्नेभ्यः टीवितिन्यासः क्रियते। तेन न गुणप्रसक्तिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ तर्हि क्रोष्ट्रीत्यत्र दोषः।

१ एवं तर्हि ङ्याप्रातिपदिकात् इत्यस्य स्थानेटचाप् प्रातिपदिकादिति न्यासः तेन न दोषः।

२ ऊङुतः इति सूत्रेण ऊङङित्वात् तल्लक्ष्येषु गुणापत्तिः।

१ ऊङुत इत्येव न्यासस्तत्रापि। तेन वारणम्।

२ तर्हि स्वरे दोषः [illegible]युक्तः स्वरोऽन्यः रित्प्रयुक्तश्चान्यः इति एकः। गुणरूप दोषश्च।

रामयत्न शु[illegible]ः लोकनाथ शर्मा

उभावपि समानफलभाजाविति मध्यस्थानां निर्णयः।

बालकृष्ण पंचोली	मुकुन्द शास्त्री
रा० शा० द्रा०	रामानुज ओझा
कल्पनाथ शर्मा	सुरेन्द्रनाथ शास्त्री
उपेन्द्र राजहंस	राजनारायण शुक्लः
रामप्रसाद त्रिपाठी	दुर्गादत्त वैद्यः
दुर्गादत्त वैद्य	अनन्त शास्त्री फड़के
दत्तात्रेय दीक्षित	महादेव उपाध्यायः
रामचन्द्र मण्डलीकर	पं० नी० शा० ज्यौ०

शब्देन्दु शेखरे त्रिसुत्रीपर्यन्तग्रन्थे प्रश्नः—

"स्थानिवदादेशोऽनलविधौ" इति सूत्र घटकानल् विधावित्यस्य कोऽर्थः ? अत्रत्यं प्राचीननव्यमतं च कीदृशम् ? तयोर्युक्तायुक्तत्वञ्चालोचनीयम्।

१ रामयत्न शुक्लः—

२ सियाराम द्विवेदी

१ अनल्विधावित्यस्य कोऽर्थः

२ स्थानिभूतोयोऽल् तद्वृत्तिर्यो धर्मः तन्निमित्तके विधौ आदेशो न स्थानिवत्। धिन्वन्तीत्यत्र उकार वृत्ति आर्धधातुकत्वमादाय प्राप्तस्य इटोऽभावरूपं फलम्।

१ धिनुअन्तीत्यत्र सार्वधातुकार्धधातुकयोरिति गुणे धिनवन्तीति स्यात्, नतुधिन्वन्ति इति

२ सार्वधातुकमपिदित्यनेन झि प्रत्ययस्य ङित्वे गुणाभावे धिन्वन्ति इति फलं सम्यगेव।

१ अनल्विधावित्यस्य एतावान् गुरुभूतोऽर्थः कया रीत्या लभ्यते।

२ अलो विधिः अलो विधिः, अला विधिः अलि विधिरिति चतुर्विधः समासोऽत्र वर्तते। किन्तु तत्र सिद्धान्तदृष्टया षष्ठीतत्पुरुष एव, षष्ठयर्थश्च स्थानपदार्थतावच्छेदकवृत्तित्वान्वयिनिरूप्यनिरूपकभावः।

१ रामायेत्यत्र ङेयदिशेकृते अनेन ङेवृत्ति सुप्त्वस यानतिदेशेसुपिचेति दीर्घानापत्तिः।

२ स्थानिवदादेश इत्यत्र सम्बन्धि शब्दमहिम्ना स्थानिवदित्यनेनैव आदेश लाभे आदेश पदं व्यर्थीभूय अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नत्वं स्थानितायामनुगमयति, एवं च प्रकृते स्थानिताया ङेत्वावच्छिन्नत्वेन अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नत्वाभावान्न निषेध प्रवृत्तिरितितत्वम्।

१ ङे निष्ठा स्थानिताऽपि अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नैवातो निषेधप्रवृत्तिः सुघटैव।

२ अल्वृत्तित्वे सति आलितरावृत्तित्वमल्त्वव्याप्यत्वम्, प्रकृते तु ङकारैकारोभयवृत्तिधर्मस्य तत्वं नास्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ राम ए अयेत्यत्र वाक्यसंस्कारपक्षे पुनरपि दोषः, यतो हि अय एकास्ययादेशपूर्वरूपयोः प्राप्तौ पूर्वं यादेशे कृते सति इदानीं स्थानिवत्वनिषेधप्रवृत्तिः, एकारनिष्ठाया एङ्त्वावच्छिन्नस्थानितायाः अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नत्वात् ।

२ अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नस्थानितानिरूपितादेशताश्रयधर्मिकारोपप्रकारीभूत धर्म निमित्तके विधौ आदेशो न स्थानिवदित्यर्थेनादोषात् । एङ्त्वावच्छिन्नस्थानितानिरूपितादेशताश्रयः पूर्वरूपम्, यादेशस्तु ङत्वावच्छिन्नस्थानितानिरूपिताऽदेशताश्रयः, तत्र च यादेशः सुप्त्ववानिति आरोपे निषेधस्य न प्रवृत्तिः सम्भवति —यादेशीयस्थानिताया अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नत्वाभावात् ।

१ भवत्सम्मतेऽर्थे स्वीक्रियमाणे अतिखट्व इत्यत्र सुलोपवारणाय भाष्यकृत्कृत आकार प्रश्लेषो विरुध्येत, अयं ह्रस्वादेश आप्त्ववान् भवतु इत्यारोपे अनल्विधाविति निषेधः प्रवृत्तेः । अय आकार निष्ठ स्थानिताया अल्त्वव्याप्य धर्मावच्छिन्नत्वात् ।

२ एवं तर्हि अल्त्वव्याप्य धर्मावच्छिन्न स्थानितानिरूपितादेशताश्रयधर्मिकारोपप्रकारीभूतधर्मेण साक्षादवच्छिन्नोद्देश्यताके विधौ आदेशो न स्थानिवदित्यर्थः स्वीक्रियते, ततश्च अतिखट्व इत्यत्र आरोप प्रकारीभूत धर्मेण आप्त्वेन साक्षादवच्छिन्ना उद्देश्यता नास्ति, सुत्व समानाधिकरण हल्त्वेनैव साक्षादवच्छिन्नत्वम्, लोपनिष्ठ विधेयता निरूपितोद्देश्यतायाः ।

१ एव मपि दाम्नी अयेत्यत्र श्यादेशोद्विवचनत्ववान् भवतु इत्याकारे आरोपे प्रकारीभूतो धर्मो द्विवचनत्वम्, तेन धर्मेण साक्षादवच्छिन्नोद्देश्यताके प्रगृह्य संज्ञारूपे विधौ कर्तव्येऽनेन स्थानिवत्वनिषेधे द्विवचनत्वाभावे प्रगृह्यत्वाभावाद्यणापत्तिः स्यात् ।

२ एवं तर्हि औङभिन्नस्य नपुंसकाङ्गाव्यवहितपरत्व विशिष्टस्य स्थाने श्यादेश इत्यर्थकं नपुंसकाच्चेति सूत्रं स्वीकृत्यात्र दोषो निवार्यते ।

१ अस्मिन्नर्थेऽपि फलत औत्वावच्छिन्नैव स्थानितेतिकृत्वा अल्त्वव्याप्यधर्मावच्छिन्नत्वं स्थानितायां वर्तत एवातो दोषस्तदवस्थ्य एव, किंच प्रपठ्येत्यत्वोल्यपि कृते स्थानिवृत्ति वलादित्व मानीय इडापत्तिः स्यादतोऽयमर्थोऽपूर्ण, इति प्रतीयते ।

सियाराम द्विवेदी — रामयत्न शुक्लः

द्वावपि समांश भागाविति मध्यस्थाः ।

श्री रामानुज ओझा	श्री वालकृष्ण पञ्चोली
,, दामोदर मिश्र	,, राजनारायण शुक्लः
,, दत्तात्रेय दीक्षित	,, रामप्रसाद त्रिपाठी
,, शालिग्राम ज्यौतिषी	,, महादेव उपाध्याय
,, रामदत्त शा० प०	,, कल्पनाथ शर्मा
,, उपेन्द्र राजहंस	,, दुर्गादत्त वैद्य
,, पं० नी० शा० ज्यौ०	,, सुरेन्द्रनाथ शास्त्री
,, रा० गो० मण्डळीकर	,, मन्नूलाल द्विवेदः

सिद्धान्त लक्षण जागदीश्यां प्रश्नः—

हेतुसमानाधिकरणात्यन्ताभाव प्रतियोगिता वच्छेदकतायां शुद्धसाध्यतावच्छेदककस्थले निरवच्छिन्नत्वं विशिष्टसाध्यतावच्छेदककस्थले चोभयधर्मानवच्छिन्नत्वं निवेशितं जगदीशेन । अत्रेदं जिज्ञास्यते यत् सर्वसाधारण्येनावच्छेदकतायां साध्यतावच्छेदकतानवच्छेदकानवच्छिन्नत्वमेव कथं न निवेशितमिति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ चन्द्रशेखर शुक्लः

२ गणपति ऐताळः

१ वह्निमान् धूमादित्यादौ महानसीयवन्हिवृत्तित्वविशिष्टजातिमान्नास्तीत्यभावमादाय दोषवारणाय निरवच्छिन्नत्वं प्रतियोगितावच्छेकतायां जातिमद्वान् घटत्वादित्यत्र पटसमवेतत्वविशिष्टजातिमान्नास्तीत्यादायाव्याप्तिवारणाय तादृशोभय[illegible]नवाच्छिन्नत्वं तत्र दीयते इत्युक्तं तदुभयानुरोधेन साध्यतावच्छेदकतानवच्छेदकानवच्छिन्नत्वमेव कुतो न निवेशितम्।

२ वन्हिमान् धूमादित्यादौ साध्यतावच्छेदकतावच्छेदकाप्रसिद्धथा अव्याप्तिः।

१ भवन्मतेऽपि अप्रसिद्धिरेव।

२ अस्मन्मते निरवच्छिन्नत्वं निवेशितमिति नाप्रसिद्धिः।

१ साध्यतावच्छेदकता,विशिष्टान्यावच्छेदकत्वानिरूपितत्वं प्रतियोगितायां तदर्थः इति नाप्रसिद्धिः। वै० स्वानवच्छेदकानवच्छिन्नत्व, स्वसामानाधिकरण्योभयसम्वन्धेन।

२ महानसीयवह्निवृत्तित्व विशिष्ट जातिभेदमावस्य कथं वारणम्।

१ स्वानवच्छेदकानवच्छिन्नत्वाभावात्।

२ वह्निमान् धूमादित्यादौ का विशिष्टावच्छेदकता स्वावच्छेदकाप्रसिद्धेः।

१ तादृशसम्वन्धेन स्ववृत्तित्वं सम्बन्धस्तत्स्थाने उच्यते।

२ कोऽभावः गृह्यते घटाभावो न लभ्यते।

१ घटत्ववान् नास्तीति गृह्यते।

२ कथं गृह्यते। तत्र तादृशनिरूपितत्वस्यैव सत्वात्।

१ तादृश निरूपितत्व, साध्यनिष्ठत्वोभयाभावो निवेश्यते।

२ प्रमेयवद्वान् घूमात्, अत्र स्वानवच्छेदकाप्रसिद्धिः।

१ तादृशनिरूपितत्व गगनत्वानवच्छिन्नत्वोभयाभावः दीयते सर्वत्र गगनाभावमादाय लक्षण समन्वयः।

२ गगनवान् पृथिवीत्वात् इत्यत्राभावाप्रसिद्धिः।

१ अवृत्तिमात्रवृत्तिधर्मानवच्छिन्नत्व घटितोभयाभावः निवेश्यते कालाद्यभावमादाय समन्वयः।

२ तस्याप्यभावोऽप्रसिद्धः हेत्वधिकरणे विभुत्वात्।

१ साध्यतावच्छेदकताव्यापकवच्छेदकताकत्व तादृशनिरूपितत्वोभयाभावो निवेश्यते। अधुना घटाभावः सुलभः।

२ साध्यसाधनभेदेन कार्यकारणभावभेदात् निरवच्छिन्नःसाध्यतावच्छेदकक स्थले एवं उभयाभावनिवेशः गौरवापादकः इति।

श्री गणपति ऐताळः   श्री चन्द्रशेखर शुक्लः

उत्तर वादिन एव जय इति निर्णयः

श्री रामचन्द्रशास्त्री खनङ्ग	श्री बा० कृ० पञ्चोली
,, राजेश्वरशास्त्री द्राविड	,, सुब्रह्मण्य शास्त्री
,, दुर्गादत्त वैद्य	,, ढुण्डिराज शास्त्री
,, गणेश दीक्षित	,, अवधेश प्रसाद द्विवेदी
पं० नी० शा० ज्यौ०	,, पूर्णानन्दशास्त्री जोशी
पं० शालिग्राम ज्यौतिषी	,, सुरेन्द्रनाथ शास्त्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री जयराम शुक्लः
,, उपेन्द्रराजहंस
,, रामबालकः
,, रामजी शास्त्री द्राविडः
,, रा० गो० मण्डळीकरः

,, गो० न० वैजापुरकर
,, बलिराम शास्त्री सराफ
,, ग० हेब्बार
,, ठाकुरप्रसाद द्विवेदी

व्यधिकरणजागदीश्यां प्रश्नः—

यत्समानाधिकरणाः साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नव्यापकतावच्छेदक प्रतियोगिताका यावन्तोऽभावाः प्रतियोगिसमानाधिकरणाः तत्वमिति प्रथम लक्षणे व्यापकता वच्छेदकत्वं तत्संबन्धेन स्वावच्छिन्नानधिकरण साध्यवन्निष्ठाभाव प्रतियोगितावच्छेदको योयः तदन्यत्वे सति तत्सम्बन्धावच्छिन्नाधेयतावच्छेदकत्वमिति जगदीशः। अत्रेदं जिज्ञास्यते तत्सम्बन्धेन स्वावच्छिन्नानधिकरण साध्यवत्को योयः तदन्यत्वमेव व्यापकतावच्छेदकत्वं कुतो नोक्तं लाघवादिति।

१ बळिरामशुक्लः
२ गोपालकृष्ण मूर्तिः
२ गुरुधर्मस्य प्रतियोगितानवच्छेदकत्वान्मन्मते तद्भेदो न लक्षणान्तर्गतः। भवन्मते स्वपदेन तस्यापि संग्रहात् तद्भेदोपि कूटान्तर्गतः स्यात्।
१ कम्बुग्रीवादिमत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताया अप्रसिद्धत्वान्न तद्भेदः प्रसिद्धः।
२ कम्बुग्रीवादिमत्वभेदो भवतामधिकः।
१ प्रतियोगिताविशिष्टान्यत्वं प्रतियोगितायां निवेश्यते। वै० स्वतादात्म्य, स्वावच्छिन्नानधिकरणसाध्यवत्कत्वोभयसम्बन्धेन।
२ स्वावच्छिन्नभेदोपि घटभेदापेक्षया गुरुभूत इति सम्बन्धाप्रसिद्धिः।
१ स्वपदेन घटत्वादिकमेव धर्तुं शक्यते तथाच तद्भिन्नत्वं घटाभावप्रतियोगितायामपीति घटाभावोपि लक्षणघटकः स्यादित्यव्याप्तिः।
२ स्वपदेन घटाभाव प्रतियोगिताव्यक्ति गृह्यते एवंच तद्व्यक्तिमान्नास्तीत्यभावमादाय घटाभावो न लक्षणघटकः।
१ तद्व्यक्तिमद्वान्नेतिभेदः स्वावच्छिन्नाधिकरणभेदो ग्राह्यः।
२ गुरुधर्मसाध्यतावच्छेदकक स्थले साध्यवत्वांशे गुरुत्वात् प्रतियोगिताविशिष्टभेदः अप्रसिद्धः।
१ साध्यताश्रयाश्रय वृत्तिभेद प्रतियोगिता वच्छेदकता वच्छेदको योयस्तद्भिन्नत्वं निवेश्यते।
२ व्यधिकरण धर्मावच्छिन्न भेद वारणाय तत्तद्व्यक्तिभेदकूट निवेशः कृतो जगदीशेन।

श्री बळिराम शुक्लः

श्री गोपालकृष्ण मूर्त्ति

द्वयोरपि वादिप्रतिवादिनोर्विचारधारा सभासदां,
प्रसादकरीति कृत्वा द्वयोरपि जय इति निर्णयः।

श्री रामचन्द्रशास्त्री खनङ्गः
,, रा० ना० ज्यौ०
,, पूर्णानन्दशास्त्री जोगी
,, रामबालकः
,, कल्पनाथ शर्मा

श्री बालकृष्ण पञ्चोली
,, दुर्गादत्त वैद्यः
,, सुरेन्द्रनाथ शास्त्री
,, रामचन्द्रशास्त्री पणशीकर
,, गो० न० वैजापुरकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

,, ठाकुरप्रसाद द्विवेदी
,, दामोदर मिश्रः
,, रा० गो० मण्डळीकरः

पं० नी० शा० ज्यौ०
,, बळिरामशास्त्री सराफ
,, अवधेशप्रसाद द्विवेदी

काण्व संहितायां प्रथम दशके १० अध्याये प्रश्नः देवसवितः––

पाठकः श्रीधर घुशे
प्रति पाठकः वासुदेव घुशे

आभ्यां सम्पृष्टांशे आन्तं सम्यक् पठितमत उभावपि पारितोपिकार्हाविति निश्चिनुमः ।

श्री काशीनाथ झा
,, बालादत्त झा
,, रामचन्द्र मडण्ळीकरः
,, सीतारामशास्त्री कुरुन्दकर
,, गोविन्दभट पोखरकर
,, लक्ष्मीकान्त रामाचार्यपुराणिक

श्री राजेश्वरशास्त्री द्राविडः
,, बालाजी पेठकरः
,, सोमनाथ पेठकरः
,, भोलानाथ पाण्डेयः
,, शालिग्राम ज्यौतिषी
,, कल्पनाथ शर्मा
,, मुरारीलाल मेहता (अध्यक्षः)

श्रीगुरुः शरणम्

श्री वल्लभराम शालिग्राम साङ्गवेद विद्यालयीय ३६तम वार्षिक गणेशोत्सवीय शास्त्रार्थसभा सभापतीनां वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयीय व्याकरण प्राध्यापकानां पण्डित प्रवर श्री बालकृष्ण पञ्चोली महोदयानां ससम्मानं अभिनन्दनम्––

पाणिन्यादि त्रिमुनिभणितं सम्प्रदायं प्रदाय
प्राज्ञान् शिष्यान् दिशि दिशि विशिष्योदितान् सम्प्रणेतुम् ।
वद्धश्रद्धः सदसि विबुधैः पर्षदाध्यक्ष राद्धो
वाभात्यार्यो वुध कुल वृतो वालकृष्णो नु साक्षात् ॥ १ ॥

उपाध्यायानां सत्फलितकृपया पण्डित सभा––
पतीनां, निष्णातः सपदिपदशास्त्रे च गणितः ।
क्रमेणोपाध्यायः स्वत इह सभाया अपि पतिः
भवान् सद्योजातो वररुचि रथो पाणिनिरतः ॥ २ ॥

भवता सम्यगलङ्कृतवताऽवदातां सभापतेः पदवीम् ।
सुतरामितरेभ्योऽधिकमुपकार भरैर्वयं कृता ऋणितः ॥ ३ ॥

किंवा प्रत्युपकुर्मः प्रत्युपकर्तुं किमस्ति वास्मासु ।
"व्याकरणालङ्कारः श्रीमानिति मानपदमिदं ब्रूमः ॥ ४ ॥

व्याकरणालङ्कारो घोषित एवं विभूषितश्च भवान्
श्री विश्वेश्वरकृपया रञ्जयतु बुधांश्चिरं जयतु ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्रिमहायने निम्नलिखितेषु ग्रन्थेषु तत्तच्छास्त्रीयविद्यार्थिनां कृते विचारो भवत्विति सभ्यैर्निर्णीतम् ।

ऋग्वेद संहिता अष्टमाष्टक । शुक्लयजुर्वेद संहिता आदितः १८ अध्याय समाप्तिपर्यन्तम् । आपस्तम्ब ब्राह्मण १ अष्टक । काण्वसंहिता १९ अध्यायतः समाप्तिपर्यन्तम् सामवेद ऊह्यगानं सम्पूर्णम् । अथर्ववेदे–१२, १३ काण्डयोः ।

वेदान्ते—सिद्धान्तबिन्दुः न्यायरत्नावली टीकासहितः । मीमांसायां—भाट्टदीपिका १ अध्याय । ज्योतिषे–मूहुर्त-चिन्तामणौ विवाहप्रकरणतः द्विरागमनपर्यन्तम्, सिद्धान्तशिरोमणिः । धर्मशास्त्रे–निर्णयसिन्धुः २ परिच्छेदः । अर्थशास्त्रे–कामन्दकीयनीतिसारः सम्पूर्णः । व्याकरणे–सिद्धान्तकौमुद्यां रामशब्दतः स्त्रीप्रत्ययान्तपर्यन्तम्, शब्देन्दुशेखरे त्रिसूत्रीतः अजन्त-पुलिङ्गपर्यन्तम् । न्यायशास्त्रे—जागदीशी सिद्धान्तलक्षणम्, पक्षता जागदीशी । आयुर्वेदे–माधवनिदानम् आदितः प्रमेहनिदानान्तं मधुकोषव्याख्यासहितम् । कविसम्मेलनम् । उपरिलिखितेषु ग्रन्थेषु प्रतियोगितापरीक्षायां प्रविविक्षूणां छात्राणामावेदनपत्रं नागप चम्याः पूर्वमेव गणेशोत्सवसमित्यां प्रेषितं भवेत्, तत्र च एका आदौ प्रवेशपरीक्षापि गृहीता स्यात् तस्यामुत्तीर्णेन गणेशोत्सवशास्त्रार्थपरीक्षायामपि यद्युत्तीर्णता प्राप्ता स्यात् तर्हि विशिष्टं पारितोषिकमपि दास्यते ।

इस वर्ष अध्यापकों एवं छात्रों ने निम्नलिखित संकल्प ग्रहण किया है।

देशकालौ संकीर्त्य धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं "कुलं शीलं दया दानं धर्मः सत्यं कृतज्ञता । अलोभ इति येष्वेते तानार्यान्सम्प्रचक्षते" । इत्यादिवचनलक्षितार्यत्वसंरक्षणकामः इदं प्रजप्तं इत्यादिश्लोकोक्तप्रजपाद्यन्यत-मान्तर्गतं अमुकं कर्म सांगवेदविद्यालये क्रियमाणगणेशसहस्रनामानुष्ठानान्तर्गतं करिष्ये ।

चतुर्वेदपारायण

विद्यालय में भाद्रपद शु. ११ सं० २००९ से प्रति एकादशी विद्यादेवता के समक्ष वेदपारायण कोल्हापुर-निवासी रसवद्य पं० वामनाचार्य महोदय चला रहे हैं। क्रमशः चारों वेदों के पारायण का आपने संकल्प किया है। इस प्रकार अनेक देशों में आपके द्वारा पारायण चलाया जा रहा है।

इस कार्य के विषय में आपने जो इतिहास भेजा है वह निम्न प्रकार है। रसवैद्यजी ने सन् १९४३ से गायत्री पुरश्चरण किया। सन् १९४५ को दिन में ४ वजे आप विश्रान्ति ले रहे थे उसी समय आपके सम्मुख दो हाथ ऊँची अजामुख पीतवर्ण पिंगलनेत्र मूर्ति आयी। उसने आपको वेदपारायणकेन्द्र का उद्घाटन करने की आज्ञा दी। तीन मिनिट यह साक्षात्कार उन्हें होता रहा। इसके प्रायः ६ महीने के अनन्तर आपको स्वप्न में उसी मूर्ति का साक्षात्कार हुआ, एवं उसने पूर्वोक्त आज्ञा पुनः प्रदान की। दो तीन मास के अन्तर से उसी प्रकार साक्षात्कार हुआ। अन्त में मूर्ति ने कहा कि घबड़ाओ मत, शीघ्र कार्य प्रारम्भ करो। अनन्तर विद्वानों के विचार से आश्विन शु० १० (५–६–४६) को आपने समारम्भ के साथ चतुर्वेदपारायण मन्दिर की स्थापना की। इस आदेश के अनुसार ही आपने भारत में अनेक केन्द्र स्थापित किये। अभी प्रायः १६ केन्द्रों में यह वेदपारायण आप चला रहे हैं। गत वर्ष काण्ववेद का पारायण समाप्त होकर अब सामवेद का होने जा रहा है।

श्री सरस्वती उपासना

आश्विन नवरात्र में सरस्वतीजी का उत्सव प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी तीन दिन तक बड़े समारोह से विद्यालय में हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिदिन पूजन वेदघोष व्याख्यान आदि कार्यों से माता सरस्वती की आराधना तथा हरिकीर्तन एवं अनेक कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुए।

श्री धन्वन्तरि उपासना

कार्तिक कृष्ण १३ रविवार को भगवान् धन्वन्तरि का उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातःकाल भगवान् का पूजन एवं श्री पं० प्र० दुर्गादत्तजी वैद्य महोदय के सभापतित्व में अनेक वक्ताओं के भाषण हुए। समारोपात्मक भाषण में सभापति महोदय ने कहा कि इस पुण्यतमा काशी नगरी में साङ्गवेदविद्यालय ही एक ऐसी संस्था है जो सनातन धर्म के अभ्युत्थान के लिये सतत चेष्टा कर रही है और यहाँ प्रतिवर्ष लोकोपकार-बुद्धि से अनेक स्थायी कार्य किये जा रहे हैं, जिसमें एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद तथा सूतिकागृहादि कार्य बड़े जोर से चल रहे हैं। हमारा सञ्चालकों से निवेदन है कि इन विभागों के अभ्युत्थान के लिये तो अनेक दातागण सचेष्ट हैं, लेकिन आयुर्वेद विभाग के अन्वेषण में कोई भी प्रवृत्त नहीं है अतः हम लोग आशा लगाये बैठे हैं कि इस संस्था द्वारा ही इसके अभ्युत्थान के लिये प्रयत्न हो। हम सब लोग सर्व रीति से साहाय्य के लिए कटिवद्ध हैं।

श्री १०८ स्वामी जयदेवाश्रमस्मृति सभा

प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी कैवल्यप्राप्त परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ जयदेवाश्रम स्वामी महोदय के स्मृति रूप में माघ शुक्ला ५ को "स्मृतिसभा" मनायी गयी।

इसमें प्रातःकाल पूजनादि कार्य तथा काशी के सुप्रसिद्ध विद्वानों की सभा हुई। एवं सभी वेदों का वेदघोष हुआ। एवं भक्ति-विषय को लेकर शास्त्रार्थ हुआ।

राजनीति शिक्षा विभाग

इस विभाग में प्रति सप्ताह दो दिन भारतीय राजनीति के अनेक गूढ़-विषयों पर विचार किया जाता है। एवं पाश्चात्य राजनीति की तुलनात्मक दृष्टि से भी विचार किये जाते हैं। सभा में निम्नलिखित निर्णय किये गये। वर्तमान समय में वर्णाश्रम सिद्धान्त के आधार पर आधारित राज्यव्यवस्था ही भारतीयों के लिये योग्य है। इस उद्देश्य की सिद्धि यावत्पर्यन्त भारतीयों का वहुमत इस विषय में नहीं होगा तावत्पर्यन्त अशक्य है। अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि वर्णाश्रम धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर आधारित विद्या एवं कलाओं की श्रेष्ठता, लोकोपकारकता, सुन्दरता प्रत्यक्ष रूप से समाज के सम्मुख प्रदर्शित की जाय।

इसी प्रकार लोक-संग्रह के लिये आवश्यक वाक्सूनृता, दया, दान, दीनोपगतरक्षण एवं सत्सङ्ग, इन गुणों का विशेष रूप से अनुष्ठान भारतीयों में अपेक्षित है।

वर्तमान समय में प्रयोगात्मक रूप से साम उपायों का अर्थात् मधुर वाक्यों के द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार, तथा विपरीत बुद्धि वालों की विद्याओं की कनिष्ठता का प्रकाशन बराबर उनके साथ मधुरता से प्रकाशन कर उनकी विद्या के विषय में शंकाओं का उत्पादन जिसे हमारे यहाँ भेद उपाय कहा जाता है उसको करना भी आवश्यक है।

"संवासिभ्यो वलं सत्त्वं आरोग्यं शीलमेव च" इस नीतिवचन के अनुसार संवासिद्वारा वरण उसी व्यक्ति का होगा जिसमें सत्त्व की सम्पत्ति हो, सत्त्व को व्यसन एवं अभ्युदय की अवस्था में निर्विकारता कहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसी प्रकार लुब्ध, क्रूर, भीत, अपमानित ये चार प्रकार के लोग भेदनीय कहे गये हैं। उनका साम आदि उपायों द्वारा शमन करना यह भी वर्तमान समय में कर्तव्य है।

पूर्वोक्त विद्याप्रचार एवं लोकसंग्राहक गुणों का अनुष्ठान प्रधान कर्तव्य है यह बात निर्विवाद होने से इसकी सिद्धि के लिए अपेक्षित समय अनिवार्य ही है। इस विद्याप्रचार-कार्य में विद्याप्रेमियों द्वारा साहाय्य होना आवश्यक है।

बाल पाठशाला

इस विद्यालय के अन्तर्गत जो बालपाठशाला है उसमें बालकों को काशी म्युनिसिपल्टी द्वारा मान्य अपर प्राइमरी के अनुसार बेसिक प्रणाली के आधार पर शिक्षण दिया जाता है। इसमें इस वर्ष सं० २०१४ में १४१ छात्र अध्ययन कर रहे हैं। १ कक्षा से ५ कक्षा तक अध्यापन सम्प्रति किया जाता है। इस विभाग में तीन अध्यापक हैं। १—पं० काशीनाथ बापट, २—पं० वैद्यनाथ विश्वनाथ पुणताम्बेकर, ३—पं० विष्णुशास्त्री चितले। आप लोग बड़े उत्साह एवं तत्परता से अध्यापन-कार्य कर रहे हैं।

धर्मप्राण लक्ष्मण पुस्तकालय

इस विद्यालय के साथ आदर्श पुस्तकालय भी है। जिसमें वेद-वेदाङ्ग, दर्शन, नीति, धर्मशास्त्र, पुराण इत्यादि विषयों के सात हजार ग्रन्थ हैं।

वाचनालय

वाचनालय शीतकाल में—प्रातःकाल ८ बजे से ११ बजे तक, अपराह्ण में ३॥ से ७ बजे तक। ग्रीष्मकाल में—प्रातः ७॥ से १० तक, अपराह्ण में ४ से ७॥ तक खुला रहता है।

वाचनालय में आनेवाले पत्र एवं पत्रिकायें

दैनिक

सन्मार्ग—	हिन्दी	काशी
आज—	,,	,,
भारत	,,	,,
हिन्दुस्तान—	,,	दिल्ली
स्टेट्समैन—	इंग्लिश	कलकत्ता
हिन्दुस्तान टाईम्स—	,,	दिल्ली

साप्ताहिक

संस्कृतम्—	संस्कृत		अयोध्या
केसरी—	महाराष्ट्र		पूना
अखण्डभारत—	,,		,,
अमेरिकन रिपोर्टर—	हिन्दी		दिल्ली
सिद्धान्त	,,	(पाक्षिक)	काशी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मासिक

मधुरवाणी—	संस्कृत	उडुपी
भारतीयवाङमाला—	महाराष्ट्र	पूना
वैजयन्ती—	संस्कृत	बेलगाँव
सूर्योदय—	,,	काशी
आपका स्वास्थ्य—	हिन्दी	,,
कल्याण—	,,	गोरखपुर
आयुर्वेद—	,,	कलकत्ता
धन्वन्तरि—	हिन्दी	विजयगढ़

सूर्योदय, अमेरिकन रिपोर्टर, भारतीय वाङमाला तथा संस्कृतरत्नाकर, वाचनालय को निःशुल्क प्रदान करते हैं तदर्थ सम्पादकों को अनेक हार्दिक धन्यवाद प्रदान किये जाते हैं।

श्री गीर्वाण वाग्वर्धिनी सभा

निःस्वार्थ भाव से यह सभा धर्मशास्त्रीय एवं सामाजिक तथा राजनैतिक प्रश्नों पर अपने शास्त्रीय मत का अविच्छिन्न दान करती है। सभा की कार्यवाही निम्नलिखित शास्त्रीय नियमों के अनुसार होती है।

इस वर्ष आश्विन कृष्ण २ से कार्त्तिक कृष्ण १२ तक सभा का विशिष्टाधिवेशन हुआ है जिसमें सनातनधर्म प्रदीप नामक श्री कुकुरमुण्डा संस्थानाधिपति ह० भ० प० सन्तोजी महाराज के ग्रन्थ के आवश्यक टिप्पणी आदि के साथ अवशिष्ट भाग का संशोधन किया गया।

सभा के साथ विचार विनिमय करने के लिये महाराष्ट्र के ज्यौतिषी श्री० पं० प्र० र० भी० गुलवणी महोदय, श्री पं० प्र० पाण्डुरङ्गशास्त्री आठले एवं श्री पं० प्र० रघुनाथशास्त्री खाम्बेटे महोदय काशी आये थे। आप लोगों के साथ सामञ्जस्य पूर्ण विचार सभा में किया गया एवं वाणवृद्धि रसक्षय पक्षको सभा के द्वारा व्यवस्था प्रदान कर समर्थन किया गया। हर्ष का विषय है कि काशी के अन्य विद्वानों का भी आप को समर्थन प्राप्त हो गया है।

श्री गीर्वाणवाग्वर्धिनीसभाया उद्देश्यानि नियमाश्च।

यद्यपि विद्वज्जनाः एकाकिरूपेण तेषु २ विषयेषु विचारं कुर्वन्त्येव, तथापि सभायां सम्भूय क्रियमाणो, विचारः अत्यन्तं महत्त्वपूर्णो विशेषतो दोषसम्भावनारहितश्च भवतीति मनसि निधायैव अस्या उपयोगित्वमनुभूतम्। मनुयाज्ञवल्क्यादिभिरपि—

रागद्वेषविहीनास्तु पञ्च सप्त त्रयोपि वा । यत्र स्युर्मिलिता विप्राः सा यज्ञसदृशी सभा ॥
त्रैविद्यो हैतुकस्तर्की नैरुक्तो धर्मपाठकः । त्रयश्चाश्रमिणः पूर्वे परिपत्स्याद्दशावरा ॥

धार्मिकाणां राजनैतिकानां सामाजिकानां अन्येषाञ्च तेषु तेषु समयेषु उपस्थितानां प्रश्नानां सम्यग्विचारविमर्शपूर्वकं समाधानान्वेषणं, अन्विष्टसमाधानानां यथासाधनं प्रचारणम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्यग् विचारक्षमाणां विदुषां निर्माणम् । एतदुपयुक्तकार्यकरणञ्च अस्याः सभाया उद्देश्यम् ॥
काशीस्थाः स्थानान्तरस्थिताश्च सर्वे विद्वांसः सभाया माननीयसदस्यत्वयोग्याः भविष्यन्ति ।
आर्थिकसहायताप्रदातारोऽस्याः सहायकसदस्यत्वेन स्वीकृता भविष्यन्ति ।
अस्या निर्वाचनं वार्षिकाधिवेशने पूर्वकार्यकारिण्या करिष्यते ।

अत्र संरक्षकः, सभापतिः, उपसभापतिः, मन्त्री, उपमन्त्री, विशिष्टमध्यस्थः, मध्यस्थः, लेखकः, आयव्ययनिरीक्षकः, कोषाध्यक्षः, अन्ये च साधारणसदस्याः, भविष्यन्ति ।

कार्यकारिणी सदस्यानामुपस्थितिः तेषु तेषु सभाधिवेशनेषु भविष्यति । विशिष्टमध्यस्थस्योपस्थितिस्तु सत्यामावश्यकतायां मन्त्रिसूचनानुसारेण अवश्यमभिप्रेता भवेत् ।

तत्त्वनिर्णयमात्रमुद्दिश्यात्र विचाराणां क्रियमाणत्वात् निम्नलिखिताः विचारनियमाः सर्वैरेव विचारकैः परिपालनीया भविष्यन्ति ।

१ शास्त्रपरिनिष्ठिताः त्रयः पञ्च सप्त वा मध्यस्था भविष्यन्ति ।
२ सुयोग्यः कश्चन नियामकोऽपि भविष्यति, यस्याज्ञया प्रश्नकरणे उत्तरकरणे वा निर्दिष्टानामेवाधिकारः ।
३ प्रश्नोत्तरयोरुभयोरपि लिखितबद्धयोः सङ्कलनं भविष्यति ।
४ निर्वाचितवादिव्यतिरेकेण कस्यापि भाषणे नाधिकारः ।
५ वादिप्रतिवादिनां मध्ये एकस्यैव यस्य कस्यापि भाषणेऽधिकारः, अनेन साकमस्यैवेति तु न व्यवस्था ।
६ वादिप्रतिवादिव्यतिरेकेण तत्तन्मतावलम्बिनां दर्शकरूपेणैव प्रतिनिधीनामपि सतां निर्दिष्टस्थान एवोपवेशः ।
७ वैषयिकदर्शिनां तु पृथक् स्थानप्रबन्धः ।
८ निबन्धपर्यन्तधर्मग्रन्थप्रामाण्योरीकारेण मीमांसादृतपद्धत्यैव विचारो भवितुमर्हति ।
९ मीमांसापद्धतिसमादरोत्पादनाय प्रमाणशास्त्रोक्तपद्धत्यापि विचारोऽवलम्बितः स्यात् ।
१० प्रश्नोत्तरप्रणाल्येव विचारावसरेऽवलम्बनीया, न व्याख्यानप्रणाली ।*

इसके पदाधिकारी निम्नलिखित हैं—

संरक्षक—पण्डितराज	श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़
सभापति—अध्यापकरत्न	श्री० पं० हरिराम शास्त्री शुक्ल
कार्याध्यक्ष—	श्री पं० बालकृष्ण शास्त्री पञ्चोली

सह	,,	विद्याभूषण	श्री० पं० रामचन्द्रशास्त्री खनङ्ग
,,	,,	अध्यापकभूषण	श्री० वे० गणेश दीक्षितजी
,,	,,	अध्यापकभूषण	श्री० वे० रामाचार्यजी
,,	,,	रसायनविशारद	श्री० पं० दुर्गादत्तजी वैद्य
,,	,,		श्री० पं० नीलकण्ठ शास्त्री ज्योतिषी
उपमन्त्री		विद्याभूषण	श्री पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार
,,	,,		श्री पं० रामचन्द्र शास्त्री होसमने
,,	,,	विद्याभूषण	श्री पं० जयराम शास्त्री शुक्ल
विशिष्ट मध्यस्थ			श्री पं० पद्मप्रसाद न्यायाचार्य

*भारतवर्षीयाणामिव जिज्ञासूनां देशान्तरस्थितविदुषामपि यथासाध्यं विचारविमर्शप्रदानं सत्यामुपयुक्तपरिस्थितौ पूर्वोक्तेषु विषयेषु पूर्वोक्तरीतिमनुसृत्य सभया सङ्कल्पितमस्ति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

,, ,, श्री पं० ठाकुर प्रसाद शास्त्री
म० म० ,, श्री नारायण शास्त्री खिस्ते
मध्यस्थ श्री पं० अनन्तराम भट पटवर्धन
,, ,, श्री पं० रामचन्द्र शर्मा घनपाठी
,, ,, श्री पं० रामचन्द्रशास्त्री मण्डलीकर

कोषाध्यक्ष—श्री पं० गोपालरामजी नागर

विशिष्ट सदस्य—धर्मरत्न मिताक्षराविशेषज्ञ प्रो० वि० वि० देशपांडे एम० ए०, एल० एल० एम०

सदस्य ,, ठाकुरप्रसादजी
,, ,, रामनाथजी ज्यौतिषी
,, ,, कृष्णशास्त्री मोकाटे व्याकरणाचार्य
,, ,, उदयकृष्ण नागर
,, ,, दिवाकर शास्त्री जोशी

सदस्य पं० विश्वनाथ पाण्डेय
,, ,, वैजनाथ विश्वनाथ पुणताम्वेकर
,, ,, काशीनाथ बापट
,, ,, विष्णु शास्त्री चितळे
,, ,, गोविन्द शास्त्री वैजापुरकर
,, ,, गोपालकृष्ण मूर्ति
,, ,, भैरवनाथ पाण्डेय
,, ,, रामदत्त शास्त्री पर्वतीय

लेखक—विद्याभूषण श्री पं० गणपति शास्त्री हेब्बार
,, मुकुन्द शास्त्री पायगुण्डे
व्यवस्थापक श्री पं० जनार्दन शास्त्री ज्योतिषाचार्य
आयव्यय निरीक्षक—श्री बाबू धन्नूलाल जी।

सभा का अधिवेशन प्रति शनिवार, एवं रविवार को अपराह्न में होता है। सभा का कार्य प्रतिवर्ष के अनुसार सम्पन्न होकर यहाँ तक अग्रसर हुआ है। इसके सामने देश के विभिन्न-विभिन्न सुदूर प्रान्तों से भी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, जटिल प्रश्न विचारार्थ आते रहते हैं और उनका यथोचित निर्णय किया जाता है। तदनुसार अनेक विषयों के निर्णय सभा द्वारा भेजे गये।

'शान्ति का अग्रदूत' पुस्तक के सम्बन्ध में विद्वानों के अभिप्राय

श्रीमत् पूज्यपाद माननीय पण्डितराज श्रीराजेश्वरशास्त्री याँचे सेवेसी श्रीसंतोजी महाराजांचा कृ० सा० नमस्कार।

श्रीगुरु कृपेने आनन्दात आपण आश्विन मासांत उत्सवास आले होते ते वेली आपण 'शान्ति का अग्रदूत' (भारतीय राजनीति शास्त्र का दिग्दर्शन) नावांचे अप्रतिम पुस्तक समर्पण केले ते मनन पूर्वक वाचून पाहिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्यावरुन मला असे दिसून आले की भारतीय राजनीतिचा आपण जो खोल आणि सूक्ष्म अभ्यास केलेला आहे असा पण्डित या भारतवर्षात अजून जन्माला आलेला नाही यात काहि शंका नाहीं आणि या पुस्तकावरुन श्रीमर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रा पासून तो श्रीकृष्णचन्द्र आणि श्रीशिवाजी महाराजां पर्यन्त भारतवर्षात जे अनेक राजे होऊन गेले त्यांची राज्य घटना कोणत्या प्रकारची होती त्याची कल्पना या पुस्तकावरुन स्पष्ट होत आहे, या पुस्तकात (१) संधि इत्यादि विषयाचा फार सूक्ष्म विचार केला आहे आणि स्थिर संधि [illegible]ल संधि याचा विचार केला असतांना चल संधि मातीच्या घटा प्रमाणे आहे आणि स्थिर संधि कनक घटा सारखी आहे, याचे प्रतिपादन करीत असता शपथ विधीच्या विचारात ब्राह्मणादि वर्णाच्या उपनयनाच्यावेली जो शपथ विधि केला जातो या विषयाचा ऊहापोह फार आकर्षक झाला आहे प्रत्येक मुद्याचे विवेचन करीत असताना ठिक ठिकाणी पाश्चात्य राजनीतिच्या गुणदोषांचा ही विचार केला आहे, त्याच प्रमाणे प्राचीन कालात निर्वाचनाची पद्धत कोणत्या पद्धतीची होती याचे विवेचन हल्लीच्या चालु परिस्थितीत सर्व विद्वानांनी व पुढार्‍यानी विचारात घेण्या सारखी आहे इत्यादि आवश्यक विचारांचा खुलासा करणारा असा नीति शास्त्राचा अप्रतिम ग्रन्थ शंभर दोनशे वर्षात कोणी लिहिलाच नाहीं आणि प्रचलित कालात अश्या ग्रंथाची फार आवश्यकता आहे आपण कृपाकरून हा ग्रंथ प्रसिद्ध केला या बद्दल भारतवर्षा-तील सर्वपक्षाचे विद्वान, विचारी, सुशील, आपले कायमचे ऋणी आहेत हा आपण फार मोठा मानव समाजावर उपकारच केला आहे यात शंका नाहीं।

हे आपले पुस्तक वाचून मला असे वाटू लागले आहे की अखिल भारतवर्षीय वर्णाश्रम स्वराज्य संघाचे अधिवेशन भरवून त्यात भारतीय सनातन्यांची राज्य घटना ह्मणून पास करून घ्यावी आणि ही राज्य घटना पास झाल्यावर ती माननीय श्रीराजेन्द्रप्रसाद व श्री० पं० जवाहरलाल नेहरू यांचे कडे पुस्तक नह्वे तर वर्णाश्रम स्वराज्य संघाची राज्य घटना या नावांने त्यांचे कडे पाठवावी असे मला वाटते ज्याप्रमाणे जलगाँव येथे कै० श्री लक्ष्मण शास्त्री द्राविड यांनी व० स्व० अधिवेशन भरविले होते तशी विराट सभा भरवून त्यात हे पुस्तक ठराव रूपाने पास करून घ्यावे ह्मणजे याचा प्रचार फार चांगला होईल। कै० पूज्यपाद श्री० लक्ष्मण शास्त्री द्राविड आणीक प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद श्रीवामाचरण भट्टाचार्यांनी ग्रंथ निर्माण करण्याच्या बाबतीत मला आज्ञा दिली होती की सनातनधर्म प्रदीप ग्रन्थानन्तर त्या ग्रन्थाचे जे संशोधन करावयाचे आहे ते संशोधन श्री राजेश्वर शास्त्री कडून च करून घ्यावे या ग्रन्थावरुन आपण त्या ऋणातून मुक्त झाले आहांत व माझी जी फार दिवसा पासून ग्रन्थ निर्माण करण्याची इच्छा होती ती या पुस्तका वरुन पूर्ण झाली आहे या बद्दल मी आपला पूर्ण ऋणी आहे।

मी आपल्या निरन्तर आशीर्वादाची अपेक्षा करीत आहे कलावे ही विनन्ती। **सन्तोजी महराज**

राजनैतिक दास्य से मुक्ति के पश्चात् राष्ट्र के नवनिर्माण एवं जागरण की इस बेला में राष्ट्रभाषा के साहित्य में भारतीय राजनीति के दिग्दर्शक ग्रन्थ का अभाव अत्यन्त खटक रहा था.......

"शान्ति का अग्रदूत" नामक ग्रन्थ की रचना इस अभाव को ही दूर नहीं करती प्रत्युत राजनीति विषयक भारत की अपनी मौलिकता को भी प्रस्थापित करती है। अथच विश्व प्राङ्गण में पुनः डिमडिम घोषपूर्वक 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः' इस ऐतिह्य को न केवल सिद्ध ही किया अपितु शान्ति के उपासक सभी राष्ट्रों को राजनीति विषयक उनकी अपूर्णता को द्योतित करते हुए पूर्णता की ओर अग्रसर होने के हेतु पुनः मार्ग दर्शन भी किया है।

श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड महोदय का राजनीतिशास्त्र के गम्भीर व्यासङ्ग एवं राष्ट्रीय सेवा भाव के परिचायक अनेक व्याख्यानों का अनुवाद कर अनुवादक महोदय ने हिन्दी जगत पर अनुपम उपकार किया है इसी प्रकार अन्यान्य भाषाओं में भी अनुवाद होकर प्रचार होने की नितान्त आवश्यकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"उत्पत्स्यते तु मम कोऽपि समानधर्मा कालोऽह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी" के दृढ़ विश्वासी श्रीशास्त्रीजी ने समस्त सांसारिक सुखों से मुख मोड़कर विद्या की आराधना चला रखी है (जब कि समस्त संसार सुख लोलुप बेतहाशा दौड़ रहा है) यह देश का परम सौभाग्य है कि ऐसे त्यागी पुरुष इस समय यहाँ विद्यमान हैं और निरन्तर देशसेवा में अविरत संलग्न हैं।

ऐसे महापुरुषों के प्रयास निश्चय ही सफल ही है। मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है कि—

भक्ति के क्षेत्र में संत तुलसीजी ने रामचरितमानस की रचना कर असंस्कृतज्ञ पामर जनता पर जो उपकार किया है वही राजनीति के जिज्ञासुओं पर संस्कृत राजनीति वाङमय का प्रदीर्घ अध्यवसाय, मनन, चिन्तन, पूर्वक किये हुए मंथन के परिणाम स्वरूप आज हिन्दी जगत् के समक्ष शान्ति का अग्रदूत उपस्थित कर दिया है।

राजनीति के विद्यार्थियों प्राध्यापकों चिन्तकों एवं विचारकों को तथा विश्वविद्यालयों जैसी शिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों को और ज्ञानदानार्थ सञ्चालित व्याख्यानमालाओं के प्रबन्धकों को सानुरोध निवेदन है कि श्री० शास्त्रीजी के प्रकाण्ड पाण्डित्य का लोहा आसेतु हिमाचल विद्वन्मान्य है, आपकी विद्वत्ता के विषय में लिखने का अर्थ सूर्य को दीपक बताना है।

किसी कारणवश प्रत्यक्ष प्रवचन सुनने का अवसर प्राप्त न कर सकनेवाले वर्तमान राजनीति के अखाड़े के मल्लों को देश के जागरूक प्रहरी पत्रकारों को, नेताओं को, तथा भावी राष्ट्र के आधार स्तम्भ विद्यार्थियों को राजनीति के यथार्थ मर्म को समझने के लिए इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ना ही चाहिये विना इसके अनुशीलन किये राजनीति विषयक ज्ञान अधूरा रहेगा 'गागर में सागर' वाली कहावत इस ग्रन्थ में पूर्णरूप से चरितार्थ हुयी है।

राजनीति जैसे रूखे विषय को भी श्री शास्त्री जी ने अतीव सुबोध बना दिया है। पाश्चात्य राजनीति से तुलना कर भारत की एतद्विषयक मौलिकता सिद्ध करते हुए पाश्चात्यों की त्रुटियों को उद्घाटित कर त्रुटिजन्य दुष्परिणामों से समाज को बचाने के हेतु साथ-साथ उपाय भी बता दिये हैं। इस प्रकार यह ग्रन्थ शान्ति स्थापन की ओर अग्रसर होनेवाला यथार्थ अग्रदूत ही है।

भवदीय,

सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर

भू० पू० प्रिंसिपल गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, ग्वालियर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० राजेश्वर शास्त्री द्राविड भारतीय राजशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों का गम्भीर मनन कर रहे हैं। वस्तुतः इस साहित्य की सरल सामयिक व्याख्या अत्यन्त आवश्यक है। प्राचीन राजशास्त्र में धर्म और राष्ट्रनीति के जो मूल्यवान् तत्त्व हैं उनकी आज भी हमारे लिये आवश्यकता है। "भारतीय राजनीति शास्त्र का दिग्दर्शन" शीर्षक निबन्ध में शास्त्रीजी ने प्राचीन प्रमाणों के आधार पर राज-शास्त्र के सम्बन्ध में जो विचारोत्तेजक सामग्री रक्खी है वह नवीन कर्त्तव्य के लिये प्रेरित करती है। शास्त्रीजी ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र और कामन्दक के नीतिशास्त्र पर मर्मस्पर्शी विचार किया है और वे अपने समय का सदुपयोग आजकल इन्हीं के अध्यापन में करते हैं यह जानकर मुझे आश्चर्ययुक्त संतोष हुआ।

वासुदेवशरण अग्रवाल

काशी विश्वविद्यालय

भगवान् की कृपा तथा देश के सहस्रों नरनारियों के महान् बलिदानों से पराधीनता की घोर तमिस्रा का भेदन कर अब हमारा देश स्वतन्त्रता के स्वच्छ प्रकाश में अपने सर्वतोमुख अभ्युदय के लिये प्रयत्नशील है। अतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह अत्यन्त स्वाभाविक और आवश्यक है कि हम मानवजीवन के मौलिक लक्ष्य और उसकी साधना के लिये अपने पूर्वजों द्वारा स्वीकृत समाज व्यवस्था तथा राजनीति का भी आकलन कर लें, यह बड़े हर्ष का विषय है कि पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्राविड ने विज्ञजनों को इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर उन्मुख करने के लिये भारतीय राजनीति के अनुशीलन का उपक्रम किया है। श्रीशास्त्रीजी संस्कृतवाङ्मय के आप्त पण्डित हैं। आपकी प्रज्ञा और प्रतिभा बहुमुखी है और भारत के नवीनजीवन की गतिविधि का आ[illegible]न करने तथा उसे अपेक्षित प्रकाशदान करने के निमित्त निरन्तर चिन्तनशील रहा करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक "शान्ति का अग्रदूत" उनकी उसी चिन्तनशीलता की एक सुन्दर सूचना है।

आशा है यह सूचना विद्वानों को प्रिय लगेगी और उन्हें अध्ययन की इस उपेक्षितदिशा में प्रवृत्त करेगी। जिसके फलस्वरूप भारतीय राजनीति का निखरा हुआ रूप हमारे लोकनायकों के समक्ष उपस्थित होगा और उससे उनकी योजनाओं को अधिकाधिक सजीवता एवं सफलता प्राप्त होगी।

बदरीनाथ शुक्ल (प्रधान अध्यापक)
गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज वाराणसी
दिनांक २८-१-५७

कर किसलय सङ्गी यस्य पीयूष कुम्भः
परममरवधूनां भूयसे मङ्गलाय ।
स खलु निखिल दुग्धाम्भोधिरत्नेषु रत्नम्
हरतु दुरितराशीनाशु धन्वतरिर्वः ॥
त्रिभुवनजनरोगग्रामसंग्रामजेताऽनृतमृतघृतकुम्भोद्‌गूर्णहस्तायुधश्रीः ।
अमरमथितदुग्धाम्भोधिलब्धोदयोऽसौ दलयतु दुरितौघानाद्यवैद्याधिपो वः ॥

श्रीयुत् मान्यवर पं० राजेश्वरशास्त्री महोदय! आपके भेजे हुए "शान्ति का अग्रदूत" पुस्तक का अध्ययन किया, पढ़ने में अत्यन्त सन्तोष हो रहा है। राज्य के मूल आधार सत्वगुण का विवेचन इतने सुन्दर रूप से हुआ है कि जिसका मूर्त्त स्वरूप अनायास समझ सकते हैं। सर्वत्र देशों में स्थायी शान्ति के लिये उद्योग हो रहे हैं। परन्तु समन्जस मार्ग अन्धकार में ही था। इस पुस्तक में उसी का विवेचन अर्थशास्त्र के एवं प्रत्यक्ष तथा तर्कों के आधार पर हुआ है। साथ ही हम लोगों के उपनयन आदि संस्कार इसी लक्ष्य पर हो रहे हैं, ऐसे सदाचार भी इस ग्रन्थ में स्थिर सन्धि के प्रकार हैं,; जिस प्रकार वेद और आयुर्वेद में है। क्योंकि रोग पापनिवृत्ति के वास्ते श्री० १०८ पू० पा० सुप्रसिद्ध वैद्यरत्न त्र्यम्बकशास्त्री महाराजजी ने इन्कमटैक्स आफिसर श्री खेर महोदय के कल्प करते समय प्रायश्चित कराकर औषध का प्रयोग किया था इस तरह वेद का प्रामाण्य आयुर्वेद म है। भारतीय राजनीति की पद्धति में किसी के साथ विनय तथा मान आदि के विषयों में विषमता का भाव न रखते हुए मर्यादा पालन के विषय को भी देखने से अनेक शङ्काओं का समाधान हो रहा है। सर्व राज्यों में होनेवाले चुनाव में जाति संस्था की तरफ से भी मत (वोट) स्वतन्त्ररूप में न होना राज्य का विनाश करना है। यह भी विषय विशेषतः नीतिपण्डितों को प्रकाश दे रहा है। यह ध्रुव सत्य है कि नीतिसागर में गोते लगाकर अति परिश्रम से ऐसे-ऐसे रत्न उपलब्ध हैं जिनका प्रकाश शान्ति का अग्रदूत पुस्तक प्रधान व्याख्याता श्री पं० विद्यारत्न राजेश्वरशास्त्री द्राविड महोदय से है। आज हम लोगों को यह नवरत्न ग्रन्थ दिया है। ऐसे महात्मा त्यागी पुरुष को जगत्पिता धन्वन्तरि चिरायु रखे। और यह ग्रन्थ भगवद्‌गीता समान अभ्यास कर ऐसे तपस्वी के दिये हुए उपदेशों का फल लोगों को अवश्य प्राप्त करना चाहिये यह मेरी नम्र विनती है।

रसविशारद पं० दुर्गादत्त वैद्यशास्त्री
दिनाङ्कः, २-२-१९५७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाराणसेय राजकीय संस्कृत महाविद्यालयाध्यक्षाणां सम्मतिः

श्री पण्डितराज राजेश्वरशास्त्री द्राविड संस्कृतव्याख्यानसङ्कलनसम्पादितो हिन्दी भाषायां निबद्धः शान्तेरग्रदूतः सादरं मया दृष्टः।

अत्र च ग्रन्थे भारते भारतीय नीतिः भारतीया च निर्वाचन पद्धतिः समाश्रयणीयेति साधु वर्णितम्। यतो-मनुनाऽपि ७।२०२, देशधर्मानुसारेणैव शासनं कार्यमित्युपदिष्टम्। महाभारते च धर्मनीतिः कूटनीतिश्चेति नीतिद्वयं शान्तिपर्वणि राजधर्मप्रकरणे दर्शितम्। उद्योगपर्वणि च धृतराष्ट्रं प्रति कणिकस्य कूटनीतेरुपदेशः। तत्र स्वराष्ट्रे धर्मनीतेर्व्यवहारः, परराष्ट्रे तु यथाकालमुभयोरित्युक्तम्। भारतीया नीतिश्च विद्यात्रय परिपोषितैव बलवती फलवती चेति कामन्दकीयेऽप्युक्तम् :—

"आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती।
विद्या ह्येताश्चतस्रस्तु लोकसंस्थिति हेतवः॥" इति।

नीतौ दण्डस्य प्राधान्यं चोक्तमभियुक्तैः।

"दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥' इति।

नीतौ दण्डस्य प्राधान्येऽपि सर्वोपायपरिक्षय एव दण्डः प्रयोक्तव्यः। दण्डो हि चरम उपायः शास्त्रेषूदाहृतः।

"साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुं प्रयतेतारीन्न युद्धेन कदाचन" इति।
"चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया।"

इति च चतुर्थोपायत्वं तस्यानुष्ठानक्रमेणोक्तम्। भारतीया निर्वाचनपद्धतिस्तु महाभारते शान्तिपर्वणि राजधर्मप्रकरणे ब्राह्मणादिवर्णक्रमेणोक्ता। देशकालानुसारिण्येव नीतिर्बलवती फलवती चेति देशानुसारेण भारतीया नीतिः, कालानुसारेण च भारतीयनीत्यङ्गतया पाश्चात्यनीतिरपि समादर्तव्या। पाश्चात्यनीतिरपि पर्यालोचने भारतीयनीतिशास्त्र संनिविष्टा समुपलभ्यते समुपलप्स्यते चावश्यमिति श्रीराजेश्वरशास्त्रिमहोदयानां साधुराशयः एतद्ग्रन्थसमीक्षातः संलक्ष्यते इति भारतीयनीतिपरम्परादिशमावेदयन्नयं ग्रन्थः सर्वथा समुपादेयो नीतिविदां विशेषतश्च भारतीयानामिति सम्मन्यते——

कुबेरनाथ शुक्लः,
प्रधानाचार्यः, वाराणसेय राजकीय संस्कृत महाविद्यालयस्य

छात्रावास

म० म० पं० कैलाशचन्द्र शिरोमणि महाशय भवन तथा म० म० पं० श्री सुब्रह्मण्य शास्त्रिभवन नाम के दोनों छात्रावासों में विद्यार्थीगण निवास करते हैं, सञ्चालकों के द्वारा अन्नसत्र भी चल रहा है। यह अन्नसत्र कै० मेहता श्री हजारीलाल जी की स्मृति में "श्री हजारीलाल अन्नसत्र" के नाम से चल रहा है। अन्नसत्र में छात्रों को भोजन देने के अतिरिक्त १६ संन्यासियों की भिक्षा भी नियमानुसार चल रही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यालयीयाध्ययनक्रम का शास्त्रीय स्वरूप

(सं० २००८ के गणेशोत्सव विद्वत्परिषद् में स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार)

विद्याध्ययनक्रमो भारतीयराजनीत्यनुसारी कीदृश इति प्रश्ने प्रत्यक्षपरोक्षानुमानलक्षणप्रमाणत्रयनिर्णीतायां फलसिद्धौ देशकालानुकूल्ये सति यथासाध्यमुपायानुष्ठानलक्षणा क्रिया नीतिर्नय इतिलक्षणानुसारेण निर्णयः समुचितः।तत्र उत्पत्तिविनियोग-विधिनिष्पन्नानां प्रयोगविधिना क्रमो निर्णेय इति सिद्धान्तात् अष्टादश विद्याः चतुष्षष्टिकलाश्च इति उत्पत्त्या निर्णीतानां विद्यानां तत्तद्विद्याफलेषु विनियोगः, तत्तद्विद्यास्थितेन अनुबन्धचतुष्टयेनैव सम्यक् ज्ञायते यद्यपि, तथापि सर्वासां विद्यानामुप-संहारेण प्रयोगविधानं कौटिलीयेऽर्थशास्त्रे, श्री महामीमांसकश्रीमद्भास्कररायविरचिते नित्याषोडशिकार्णवसेतुबन्धव्याख्याने च एवमुपलभ्यते। तथाहि–वृत्तचौलकर्मा लिपि सङ्ख्यानं चोपयुञ्जीत, वृत्तोपनयनस्त्रयीमान्वीक्षिकीञ्च शिष्टेभ्यः,वार्तामध्यक्षेभ्यो दण्डनीतिं वक्तृप्रयोक्तृभ्यः। (कौटलीयेऽर्थशास्त्रे अ० ५ प्र० २)। एवं "ततश्च जगदाप्तपरमशिवप्रणीतत्वाविशेषेण सर्वासां विद्यानामधिकारिभेदेन प्रामाण्यमेवेति स्पष्टं सूतसंहितादौ। अधिकारश्च यथा नास्तिकानामेवार्हतादिदर्शनेषु,त्रैवर्णिका-देरेव वैदिकमार्गेषु इति पुरुषभेदेनैव व्यवस्थितस्तथैकस्यापि पुरुषस्य चित्तशुद्धितारतम्यादपि कश्चिद्व्यवस्थितः। वर्णभेदेनेव आश्रमभेदेनापि धर्मव्यवस्थादर्शनात्। एवञ्च यानि तत्तद्विद्याप्रशंसकानि वचनानि तानि तत्तदधिकारिणं प्रत्येव प्रवर्त्तकानि। यानि च तन्निन्दकानि तानि तत्तदनधिकारिणं प्रति निवर्तकानि न पुनर्न हि निन्दान्यायेन विधेयस्तावकानि, अतिवाल्यदशायां वालक्रीडनके प्रवर्तयतामेव पित्रादीनां तस्यैवाध्ययनाधिकारे तादृशक्रीडायां ताडनकर्तृत्वदर्शनात्।

तदयं मथितोऽर्थः, जातमात्रस्य त्रैवर्णिकस्य क्रीडाधिकारे निवृत्ते अक्षराभ्यासः, ततश्छन्दोभाषाज्ञानार्थं काव्याध्ययने प्रवर्तकान्यदोषं गुणवत्काव्यमित्यादीन्यग्निपुराणवचनानि। व्युत्पन्नस्य काव्यालापांश्च वर्जयेदिति निषेधः। काव्याध्ययनजन्य-प्रयोजनस्य जातत्वेनोत्तरभूमिकायामेवावतारात्तां विहाय पूर्व भूमिकायामेवायुः क्षपयतोऽनिष्टं भवतीति तदर्थः। ततो देहाद्यति-रिक्तत्वेनात्मनो ज्ञानार्थं न्यायशास्त्राध्ययने विधिः शुष्केनात्मानमन्विच्छेत्यादिः, शुष्कं हेतुः, अवयवसमुदायात्मकन्याय इति यावत्। देहादिभिन्नत्वेनामुष्मिकयातायातक्षमतया आत्मनि ज्ञाते तु तादृशफलककर्मस्वधिकारादान्वीक्षिकीं तर्कविद्यामनुरक्तो निरर्थिकामित्यादयो निषेधाः पूर्वभूमिकां निषेधन्ति। धर्ममेवाचरेत्प्राज्ञ इत्यादि विधय उत्तरभूमिकायां प्रवर्तयन्ति। यदुपयो-गित्वेन पूर्वमीमांसाया वेदे कर्मकाण्डस्य चाध्ययनम् तेन धर्मार्थकामेषु साधितेषु चतुर्थपुरुषार्थलिप्सया पूर्वभूमिकात्यागाय "नास्त्यकृतः कृतेनेति कर्मनिन्दा।" (सेतुबन्धव्याख्या)।

"वेदाःप्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं धर्मार्थयुक्तं वचनं प्रमाण" मिति स्मृत्यनुसारेण धर्मार्थयुक्तं—धर्मतत्त्वविचारकं सन्निबन्ध-वाक्यमिति रघुनन्दनव्याख्यानुसारेण च निश्चितप्रामाण्यकस्य उक्तनिरूपणानुसारेणावगतस्याचारस्याविगीतशिष्टाचारतया परिगणितुमर्हत्वेन, आदौ क्रीडाधिकारः पश्चात् लिपिसङ्ख्याज्ञानयोः तदनन्तरं छन्दोभाषाज्ञानाय काव्याध्ययने, तदनु देहाति-रिक्तात्मनिश्चयाय न्यायशास्त्रे, तस्मिन्दृढे तत्पश्चात् धर्मशास्त्ररूपेषु षडङ्गवेदाध्ययनादिषु अधिकारसिद्धिरितीदृशेन क्रमेण अध्ययने क्रियमाणे न कोपि दृष्टादृष्टविरोधः।

एतदतिक्रमेण क्रियमाणन्त्वध्ययनं अनधिकारिणा कृतमकृतं भवतीति न्यायात्, यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते। अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्! इति वचनानुसारेण दृष्टादृष्टसमस्तफलशून्यमेव च भवति इति प्रोक्तक्रम एवादरणीयो देशोन्नतिकामैरिति विद्वत्परिषदो मतम्।

प्रस्ताव का अनुवाद

प्रश्न है कि भारतीय राजनीति के अनुसार विद्याध्ययन का क्रम कैसा होना चाहिये? इसका उत्तर भारतीय राजनीति के लक्षणानुसार ही करना उचित है। नीति का लक्षण, जिन उपायों के अनुष्ठान से फल की सिद्धि प्रत्यक्ष, अनुमान (युक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तर्क) एवं शास्त्र तीनों प्रमाणों से निश्चित है, योग्य देश और काल में उन फलसाधक उपायों का अनुष्ठान कहा है अतः शास्त्र की भी सहायता से क्रम निश्चय करना होगा। शास्त्रों में उन फलों को सिद्ध करने के लिये उनकी प्रधान कर्त्तव्य क्रिया (उत्पत्ति विधि) एवं उस क्रिया के अङ्गों (विनियोग विधि) का विधान किया रहता है। जिसमें विहित प्रधान और अङ्गों के क्रमको तदनंतर प्रयोग के विधानार्थ निश्चित करने का सिद्धान्त है। अठारह विद्यायें एवं चौसठ कलायें कही गई हैं जिनका विनियोग यद्यपि शास्त्रारम्भ में उस विद्या के अधिकार, प्रयोजन, विषय, सम्बन्ध (अनुबन्धचतुष्टय) के विचार में उस विद्या के फल निर्दिष्ट हैं, अतः उसी से सुज्ञेय है। तथापि सब विद्याओं के समन्वय से प्रयोगार्थ क्रमविधान कौटिलीय अर्थशास्त्र एवं महामीमांसक श्री भास्करराय विरचित नित्याषोडशिकार्णव के सेतुवन्ध व्याख्या में इस प्रकार उपलव्ध होता है।

आचार्य कौटिल्य कहते हैं कि बालक का चूड़ा संस्कार होते ही लिखना पढ़ना और गणित शुरू करना चाहिए। अनन्तर उपनयन संस्कार करके शिष्ट विद्वानों से वेद एवं तर्क विद्या सिखानी चाहिये तदनुसार तत्तद्व्यवसाय के अध्यक्षों से वार्ता (कृषि, पशुपालन, वाणिज्य) एवं राजनीति के शास्त्र तथा प्रयोग कर्ताओं से राजनीति सिखानी चाहिये। (कौ० अ० ५५–२)।

महामीमांसक श्रीभास्कर राय लिखते हैं कि:—सभी विद्याओं के उपदेष्टा श्रीजगदीश परमशिव हैं। अतः भिन्न-भिन्न अधिकारी के लिये यथाधिकार सभी प्रमाण है। सूतसंहिता आदि ग्रन्थों में यह वात स्पष्ट है। नास्तिकों के लिये ही आर्हतादि नास्तिक दर्शनों में अधिकार है त्रैवर्णिको को वैदिक मार्ग ही में है। यह पुरुष-भेद से व्यवस्था है। इसी प्रकार एक ही पुरुष के लिये भी चित्तशुद्धि के तारतम्य से अधिकार भेद व्यवस्थित है। दृष्टान्त के लिये जैसा वर्णभेद के समान आश्रमभेद से धर्मव्यवस्था देखी जाती है। तदनुसार उस विद्या के प्रशंसावचन उस उस अधिकारी के लिये प्रवर्तक हैं। वाद उसी २ विद्या का निन्दावचन अनधिकारी के लिये निवारक हैं। न कि "नहि निन्दा" के न्याय से विधेय के स्तावक हैं।

अतिबाल्यावस्था में माता-पिता बालकों को बालक्रीड़ाओं में प्रवृत्त करते हैं बाद पढ़ने योग्य अवस्था होने पर क्रीड़ा पर ताड़न करते हैं। अतः सबका मथितार्थ है कि त्रैवर्णिक बालक को क्रीड़ाधिकार निवृत्त होते ही अक्षराभ्यास कराना चाहिये। तदनन्तर छन्द और भाषा के ज्ञानार्थ काव्य का अध्ययन कराना होगा तब बालक को काव्याध्ययन में प्रवर्तन करने के लिये "अदोषं गुणवत् काव्यम्" इत्यादि काव्यप्रशंसा वचन अग्नि-पुराणोक्त हैं। उसी बालक की काव्यव्युत्पत्ति होने पर "काव्यालापांश्च वर्जयेत्" यह निषेध लगता है, क्योंकि काव्याध्ययन का प्रयोजन सिद्ध होने के पश्चात् भी उसी भूमिका में आयुःक्षपण करनेवाले को यह वचन अनिष्ट बताता है।

काव्याध्ययन के अनन्तर देहातिरिक्त आत्मज्ञान के लिये न्यायशास्त्र का अध्ययनाधिकार है। इसके लिये "शुङ्गेनात्मानमन्विच्छ" विधि है शुङ्ग अर्थात् न्याय से देहातिरिक्त आत्मा का ज्ञान प्राप्त करो, इसका अर्थ है। परलोकयातायात करने में समर्थ देहभिन्न आत्मस्वरूप को जानने पर वह विद्यार्थी पारलौकिक कर्माधिकारी बन जाता है जब "आन्वीक्षिकीं तर्कविद्यामनुरक्तो निरर्थिकाम्" इत्यादि निन्दावाक्य पूर्वभूमिका से निवर्तक हैं। "धर्ममेवाचरेत् प्राज्ञः" इत्यादि उत्तरभूमिका के लिये प्रशंसा, तव धर्मोपयोगि पूर्वमीमांसा एवं वैदिक कर्मकाण्ड का अध्ययन का अधिकारी वह बन जाता है। इस भूमिका में जब वह धर्मार्थिकाम साधन कर लेता है तब चतुर्थ पुरुपार्थ की प्रवृत्ति कराने के लिये कर्म भूमिका की निन्दा "नास्त्यकृतः कृतेन" इत्यादि है।

इस प्रकार आचार्य कौटिल्य एवं श्री भास्करराय विद्याध्ययन-क्रम का निरूपण करते हैं। स्मृति कहती है वेद, स्मृति, एवं धर्मार्थियुक्त वचन प्रमाण है। रघुनन्दन भट्टाचार्य ने "धर्मार्थियुक्तवचन" का अर्थ धर्मतत्त्वविचारक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निबन्धवाक्य किया है। तदनुसार उक्त ग्रन्थकारों के निरूपण प्रमाण हैं। अविगीतशिष्टाचार के रूप में यही क्रम परिगणित करने योग्य है।

अतः बालक को प्रथम क्रीडाधिकार अनन्तर छन्दोभाषागणितज्ञानार्थ काव्याधिकार तत्पश्चात् देहातिरिक्त आत्मज्ञान के लिये न्यायशास्त्राधिकार, उसकी दृढ़ता होने पर ही धर्मशास्त्ररूपी षडङ्ग वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त होता है। अतः इस क्रम से विद्याध्ययन करें तो कोई दृष्टादृष्टविरोध हो नहीं सकता।

इसके विरुद्ध क्रम से अध्ययन करने पर अनधिकारी का किया कर्म अकृत हो जाता है। "यदधीत . . इत्यादि वचनानुसार वैसा किया अध्ययन न्यायानुसार दृष्टादृष्ट सभी फलों से शून्य रह जाता है। अतः विद्वत्परिषद का मत है कि उपर्युक्त क्रम ही देशोन्नति के लिये आदरणीय है।

श्रीमान् माधव श्रीहरि अणे महोदय का अभिप्राय

श्री काशी क्षेत्र का साङ्गवेद विद्यालय एक अद्वितीय संस्था है। गुरुमुख से पाठ लेकर सम्पूर्ण वेद एवं विकृति को कण्ठस्थ कर सुरक्षित रखना, एवं तदङ्गभूत सभी विद्याओं का अध्ययन अध्यापन कर उनकी उन्नति तथा प्रसार करना। इन कार्यों को सञ्चालित कर इस विद्यालय ने प्राचीन परम्परागत शिक्षणपद्धति का संरक्षण जिस प्रकार चलाया है इस प्रकार का कार्य करनेवाला एक भी विद्यालय अथवा पाठशाला उत्तर हिन्दुस्तान में वर्तमान समय में नहीं है।

वैदिक एवं शास्त्री पण्डितों की परम्परा का अक्षुण्णरूप से संरक्षण के बिना वैदिक धर्म सभ्यता एवं संस्कृति का टिकना शक्य नहीं है। वैदिक विद्वानों ने ही आज तक स्वरों में भी सर्वथा एकरूपता रखकर वेदों के अक्षराक्षर एक रूप में ही रखे हैं। एवं शास्त्री पण्डितों ने भारतीय संस्कृति व उसके ध्येय तथा रहस्य का सर्व समाज को परिचय कराया है। वैदिक एवं पण्डितों के द्वारा इसके लिये किये गये अत्यन्त परिश्रम तथा एकान्तिक त्याग से ही आज सहस्रावधि वर्ष हमारे इस भारतवर्ष के समाज का सम्पूर्ण जीवनक्रम भारतीय धार्मिक संस्कृत्यनुकूल विचारों से एवं ध्येयवाद तथा कर्म से अन्तर्बाह्य ओतप्रोत हो गया है तथा उसका परिणाम यह है कि केवल अलौकिक ऐसे दिव्य जीवन का प्रवाह समाजान्तर्गत सभी जाति के व्यक्तियों में बाह्य परिस्थिति भिन्न-भिन्न प्रकार की होने पर भी आजतक सतत रूप से बह रहा है। अतः इन प्राचीन पद्धति के पण्डितों की परम्परा का रक्षण करना समाज का प्रथम कर्तव्य है।

वेद एवं दर्शनशास्त्रों की शिक्षा के साथ आयुर्वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र इत्यादि विषयों का शिक्षण भी साङ्गवेद विद्यालय में दिया जाता है। राजनीति, समाजशास्त्र, इत्यादि विषय में भी प्राचीन एवं अर्वाचीनकालीन विकास के अनुसार तौलनिक अध्ययन कर सिद्धान्त तक पहुँचाने वाले शिक्षण की व्यवस्था भी विद्यालय द्वारा तत्काल ही की गयी है। इस विशेषता को देखने से मूल भारतीय संस्कृति का अविकृतरूप से संरक्षण तथा वर्तमान युग में भी उस संस्कृति का कार्यकारित्व सिद्ध होना आवश्यक है ऐसी जिन सज्जनों की उत्कट इच्छा है उनके द्वारा इस संस्था को पूर्ण आर्थिक एवं इतर साहाय्य होना आवश्यक है।

हमारी प्राचीन विद्या एवं संस्कृति के सम्बन्ध में नवीन संशोधन करनेवाले आधुनिक विद्वानों को प्राचीन साहित्य एवं उन ग्रन्थों का यथार्थ अर्थज्ञान के लिये प्राचीन पद्धति के द्वारा शिक्षित विद्वानों की सहायता बारम्बार लेनी पड़ती है, यह बात पुरातत्त्वकोविदों को अवगत ही है। शास्त्री पण्डितों के साहाय्य के बिना दर्शन शास्त्रों के ग्रन्थ एवं उनके भाष्य टीका आदि में आनेवाले न्यायमीमांसाघटितविवेचन का रहस्य आधुनिक पद्धति से शिक्षितों को यथावत् अवगत होना कठिन है। उसको यथार्थतः समझने की योग्यता पदवाक्यप्रमाणज्ञ को ही हो सकती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतः हमारी संस्कृति एवं विद्याओं का आधुनिक ऐतिहासिक पद्धति से अध्ययन करने वाले एवं आधुनिक शिक्षण-पद्धति की उन्नति की अभिलाषा करने वालों को भी इन प्राचीन पण्डितों का एवं ऐसे पण्डितों का निष्पादन करने वाले साङ्गवेदविद्यालय जैसी पाठशाला का संरक्षण एवं सम्वर्धन अवश्य करना चाहिये। पण्डितों के संरक्षण से इनका भी उपकार ही होनवाला है।

इस साङ्गवेदविद्यालय में अनेक श्रेष्ठ पण्डित एवं अध्यापक वेतन रूप से अथवा दक्षिणा रूप से कुछ द्रव्य न लेते हुए केवल धर्मबुद्धि से अध्यापन कार्य करते हैं। परन्तु कार्य का विस्तार दिनोंदिन बढ़ते रहने से द्रव्यसंग्रह की आवश्यकता संस्था के है। पर्याप्ति धन संग्रह के बिना संस्था के कार्य को स्थैर्य एवं दृढ़ता प्राप्त होना कठिन है। अतः मुझे दृढ़ आशा है कि हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं विद्या की उन्नति के लिए जो दान-शील राजा महाराजा एवं अन्य धनिक प्रयत्न कर रहे हैं। एवं इस कार्य के लिये अपने धन का ट्रस्ट आदि करने का विचार कर रहे हैं। वे अपने दान का ओघ पर्याप्ति अंश से श्री काशी के साङ्गवेदविद्यालय की ओर यदि लगावेंगे तो विद्यालय ने चलाये हुए इस पुण्यकार्य में अंशतः सहभागी होकर देवी श्री सरस्वती एवं श्री भारतमाता का परम मङ्गलप्रद आशीर्वाद प्राप्ति के स्वयं पात्र होंगे।

इस प्रकार राज्यपाल अणे महोदय ने विद्यालय के गौरव को प्रकट किया है। इसके लिये मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री मुन्शी महोदय के भाषण का सारांश

आपने कहा कि "वेद हमारी संस्कृति के आधार शिला है। हमें सदैव उनसे प्रेरणा मिलती रही है। भारत का यह एक महान् उद्योग है कि वह वैदिक संहिताओं का संरक्षण करता आ रहा है और वर्तमान पीढ़ी से आशा है कि वह उसकी उपेक्षा न करेगी और वैदिक ज्ञान के प्रकाश को जीवित रखेगी।

यूरोप के अनेक देशों में वैदिक ज्ञान की शिक्षा के लिये बृहत् संस्थाएँ हैं। प्रसन्नता का विषय है कि यह संस्था इस शिक्षा द्वारा लोगों को विशेष योग्यता प्रदान करती है। आशा है निकट भविष्य में यहाँ अनुसन्धान कार्य भी प्रारम्भ हो जायगा।

मुझे प्रसन्नता है कि इस संस्था द्वारा अस्पताल का विस्तार हो रहा है। इस अस्पताल में सभी पद्धतियों पर चिकित्सा होती है, इससे हमें विशेष हर्ष है। ज्ञान और चिकित्सा किसी भी क्षेत्र से प्राप्त किया जा सकता है। धन से धर्म अवश्य हो, तब सुख यही हमारा आदर्श है।

संस्कृत कमिशन के सदस्यों का अभिप्राय

विद्वद्वरेण्यानां श्रीमतां राजेश्वरशास्त्रिणामाध्यक्ष्ये प्रचलन्तं साङ्गवेदविद्यालयमागत्य वयं सर्वे भारतीयाधि-शासनायोजितसंस्कृतायोगसदस्याः परं प्रमुदिताः स्मः। भारतीय-राजनीतिशास्त्रस्यात्र अनितरपाठशालासाधारणतया बोध्यमानस्य समधिकतया छात्रावर्जकत्वं भवतीति सन्तोषास्पदोऽयं विषयः सर्वेषामेव। वेदपाठप्राधान्येन छात्र संख्यया च अयं विद्यालयः काशीस्थविद्यालयेषु अग्रिमां श्रेणिमधितिष्ठति। इतः परमपि शास्त्रान्तराणां आधुनिकविषयाणां च बोधन-प्रचारणेन इतोऽपि महतीं प्रतिष्ठामयं विद्यालयः समधिगमिष्यतीति विश्वसिमः।

२२-३-५७

इत्थंसंस्कृतायोगसदस्याः
वे० राघवः
संस्कृत प्राध्यापकाः मद्रास विश्वविद्यालयः
श्री सुशीलकुमार दे
श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे, विश्वबन्धु,
रामचन्द्र नारायण दाण्डेकर सदस्य सचिवः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष महोदय का अभिप्राय

सर्वाङ्गश्रुताध्यापनोद्दिष्टां स्फुटोत्साहशिष्टामिमां श्री० व० शा० साङ्गवेद विद्यालयेति यथार्थनाम्नीं संस्थां दृष्टवान् धन्यमहमात्मानं मन्ये। तदर्थं मामामन्त्रितवत्सु प्रकाण्डविदग्धेषु श्रीराजेश्वरशास्त्रिमहोदयेषु हार्दिकान् धन्यवादाँश्च वितरामि। येषामौदार्यसपर्यायासाच्चिरस्य लब्धप्रतिष्ठमिदं विद्यापीठं तैर्महाभागैस्तत्रैव संजग्मुषो मे भाग्यविशेषः समजनि। ईदृक्षानामेकतो विदुषामभिनिवेशादपरतो वदान्यानां समवेक्षणादेवाकुण्ठितोऽस्मत्प्राचीनसंस्कृतेरोघः प्रवहत्यमरसरित इव प्रवाहः। यत्संचालकप्रवरैस्तस्य प्रवाहस्य विघिकालोद्भूतान्प्रत्यूहानपोहितुं सम्यग्विचिन्त्य पर्यकल्पयन्त विविधा उपाया इत्यत्र सविशेषं ममाह्लादं जनयति। विद्यालयस्य वर्धिष्णुमुत्कर्षमाशासे।

वाराणसी
१९-३-१९५७

चिं० द्वा० देशमुख
विश्वविद्यालयीयानुदानायोगाध्यक्षः।

वेदविद्या के रक्षण का महत्व

वेदरक्षा का यह कार्य इतना महत्त्व रखता है, जिसको यदि कहा जाय कि धर्मरक्षा के लिये यह एक ही साधन है—तो अतिशयोक्ति न होगी। आज तक हम लोग धर्मस्वरूप को जो निस्सन्दिग्धता से समझ रहे हैं, उसका सारा श्रेय इसी पर निर्भर है कि ईश्वरमुखोद्गत अनादिसिद्ध वेदों को हमारे पूर्वजों ने अब तक एक रूप से सुरक्षित रखा है। यदि वे भ्रम प्रमाद दौर्बल्य आदि दोषों में पड़कर वेदों का यथावत् अभ्यास न किये होते तो हमारे प्राणभूत वेद इस रूप में हमारे सामने कैसे आते? वेदों के सम्बन्ध में आज भी दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारे वेदों में किसी प्रकार का प्रक्षेप तथा पाठभेद आप न पायेंगे। आज भी रामेश्वर से लेकर हिमालय तक अगणित पीढ़ियों से, विभिन्न प्रदेशों में किसी प्रकार के सम्बन्ध न रख कर निवास करने वाले वैदिक लोग समान रूप से ही वेद पाठ करते हुए प्राप्त होते हैं। जब कि एक साधारण, रजिस्टरी-बयनामा, आदि लेखों में भी एक अक्षर मात्र भी पाठ भेद हो जाने पर बड़े-बड़े न्यायाधीशों को भी उस पर से कोई निर्णय करना असम्भव हो जाता है और वह लेख निरर्थक हो जाता है, किम्बहुना, हस्ताक्षर के विषय में देखा जाता है कि एक मात्रा का फरक हो जाने से वह अविश्वसनीय हो जाता है, तो यह बात सहज ही कल्पना में आने लायक है कि, केवल इहलोक ही नहीं किन्तु, परलोक से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले दुर्ज्ञेय धर्म तत्त्व का प्रतिपादन करनेवाले वेदों में कहीं अणुमात्र भी हेर-फेर हुआ तो, फिर सनातन धर्म का अस्तित्व रखना असम्भव हो जायगा। पाठभेद हो जाने पर कैसा पाठ यथार्थ है इस बात को समझने का हमारे पास कोई भी उपाय नहीं रह जायगा।

इस प्रकार धर्मप्रेमी आप महानुभावों का यह विद्यालय जिस वेदरक्षा के कार्य को लेकर चल रहा है उसका महत्त्व आवश्यकता और चमत्कारपूर्णता, अब आप लोगों के सामने स्पष्ट की गयी है।

वेदापौरुषेयत्वसाधकानुमानवाक्यम्

"स्वाध्यायोऽध्येतव्य" इत्यध्यनविधिवाक्यप्रयोज्यशाब्दभावनाहेतुकेष्टसाधनत्वानुमितिरद्ययावद्धर्मानुष्ठातृनिष्ठा, स्वसजातीयोच्चारणसापेक्षोच्चारणकानुपूर्वीक शब्दवृत्ति शाब्दभावना हेतुका, प्रभुशक्तिसमृद्धपुरुषसमवेतशाब्दभावनाहेतुज्ञानाजन्यत्वे सति, शब्दाजन्ययथार्थज्ञानवत्पुरुषसमवेतप्रकृतेष्टसाधनताविषयकज्ञानजन्यशब्दवृत्तिशाब्दभावना हेतुज्ञानाजन्यत्वे सति, शाब्दभावनाहेतुज्ञानजन्यत्वात्। आयुर्वेदीयरसायनाद्यनुष्ठानगतप्रायश्चित्ताधीनपापनाशे इष्टसाधनत्वानुमितिरेतावत्कालपर्यन्तं बौद्धादिष्वपि समवेता, शाब्दभावनाज्ञानमात्रजन्या, न स्वविषयक यथार्थज्ञानवत्पुरुषसमवेत यथार्थ ज्ञानजन्य शाब्दभावना ज्ञानजन्या, अलौकिकार्थत्वे सति यथार्थ प्रवृत्तिजनकत्वात्। न प्रभुशक्ति समृद्धनिष्ठशाब्दभावना ज्ञानजन्या स्वेच्छाधीनप्रवृत्तिजनकत्वात्। एतेन एतावत्कालपर्यन्तं पूर्वं जायमानायामनुमितौ स्वसजातीयोच्चारणसापेक्षोच्चारणकानुपूर्वीकशब्दवृत्तिभावनाज्ञानजन्यत्वं सिद्धम्। इदानींतनानामनुमित्यभावेऽपि न क्षतिः। इदानींतनोच्चारणस्य स्वसजातीयोच्चारणसापेक्षतायाः प्रत्यक्षसिद्धत्वादिति निष्कर्षः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट

वेदों का अपौरुषेयत्व

(लेखक––पण्डितराज श्री राजेश्वर शास्त्री द्राविड़)

सर्वज्ञ आदि-पुरुष मनु से मानव-समाज के विस्तार की हमारी मान्यता विश्व विख्यात है और यह वात निर्विवाद सिद्ध है कि मानव समाज के जो भी इतिहास प्राप्य हैं उनमें वैदिक समाज ही प्राचीनतम है। इस प्रकरण के विवेचन में जो भी तर्कनाएँ आती हैं उनसे यही निश्चित होता है कि वैदिक समाज से पूर्व अन्य कोई समाज या समुदाय संघटित न था।

मानव 'समाज' संघटन के प्रश्न पर विचार करने में नाटचशास्त्र संवंधी निम्नलिखित श्लोक सर्वप्रथम विचारणीय है। कहा है कि––

'कामुकैश्च विदग्धैश्च, श्रेष्ठिभिश्च विरागिभिः।
शूरैर्ज्ञानिवयोवृद्धै, रसभाव विवेचकैः॥
वालमूर्खाऽवलाभिश्च, सेव्यन्तन्नाटचमुच्यते।

(अर्थात्)––नाटक के प्रति कामी, विद्वान, धनिक, विरागी, वीर, ज्ञानी, वृद्ध और रसज्ञ, बालक, मूर्ख और स्त्रियों का सहज अनुराग होता है।

इस कथन से यह प्रकट है कि साहित्य मर्मज्ञों की दृष्टि में मुख्यतः समाज के ये ही आठ अंग माने गये हैं। 'समाज के ऐसे प्रत्येक अंग का मनोरंजन अलग-अलग ढंग से होता है। कहा है कि––

'तुष्यन्ति तरुणाः कामे, विदग्धाः समयाश्रिते।
अर्थेष्वर्थपराश्चैव, मोक्षे त्वथ विरागिणः॥
शूरा वीभत्सरौद्रेषु, नियुद्धेष्वाहवेषु च।
धर्माख्यान पुराणेषु, वृद्धास्तुष्यन्ति नित्यशः॥
सत्त्वभावेषु सर्वेषु, वुधास्तुष्यन्ति सर्वदा।
वाला मूर्खाः स्त्रियश्चैव, हास्य नेपथ्ययोः सदा॥'

(अर्थात्)––श्रृंगारिक वातों से तरुण वर्ग, शास्त्र-सम्मत वातों से विद्वज्जन, आर्थिक चर्चाओं से धनिक-जन, मोक्ष चर्चा से विरागीजन, रौद्र-वीभत्स एवं संघर्षात्मक चर्चाओं से वीरजन, धर्म और पुराण चर्चा से वृद्धजन, सात्विक भावों से साहित्यिक-जन और हास-परिहास एवं तड़क-भड़क से बालक, मूर्ख तथा महिलाओं का मनोरंजन होता है।

इससे स्पष्ट है कि उक्त समस्त लोगों के मनोरंजन के वैसे संपूर्ण कार्यक्रम जिनमें चलते रहें, वही योजना 'समाज संघटन' का भी मूलाधार वनती है। यह कार्यक्रम 'नीति का भी तत्वरूप' है। कारण, प्रत्यक्ष, परोक्ष और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुमान इन तीनों ही 'प्रमाण-साधनों' द्वारा उसकी 'हितसाधकता' प्रकट है। प्रत्येक व्यक्ति की 'हित-साधना' ही दृष्टि में रख नाटकों में आदर्शभूत ऐतिहासिक ख्याति के राजचरित्रों का ही अभिनय चलता है, जिसमें समाज के आठों अंग अपना मनोरंजन पा लेते हैं। मतलब यह कि 'आदर्श' ही वह प्रेरक तत्व है जो समाज-संघटन का आधार बनता है। अतएव, सृष्टि के आदिकाल में वैदिक समाज जिस 'आदर्श' पर संघटित रहा, वह सिवा 'कल्पनातीत परम्परा' का होने के अन्य होगा भी क्या? इससे स्वयं सिद्ध है कि वैदिक समाज को कल्पनातीत परम्परा के आदर्श की दृष्टि देनेवाला वेद अपौरुषेय एवं ईश्वरप्रोक्त है।

धार्मिक आदर्शों एवं नैतिक चरित्रों की ऐसी शास्त्रमूलकता के ही कारण शास्त्र के विधि–निषेध वाक्यों में मनस्तोषपूर्ण स्वानुराग बना हुआ था। समाज के उपर्युक्त आठों अंगी वृद्धजन धर्म में, महाजन धन में, युवकजन काम में और विरागीजन मोक्ष में पूर्ण मानसिक सन्तोष के साथ अनुराग रखते थे। यही बात अभिनय, काव्य आदि के साधनों से समाज के अन्य अंगी बालक, मूर्ख, महिला आदि वर्ग में भी पायी जाती थी। इसी प्रकार, शूर-वीरजन वीभत्स और रौद्र कार्यों में, रसिकजन सात्विक भावनाओं में और विद्वज्जन शास्त्र मर्यादा में आत्मतोष प्राप्त करते हुए समाज में जमे थे। अभिनयों में ९ रसों का सन्निवेश इसीलिए आवश्यक कहा है जिससे समाज के आठो वर्ग का यथायोग्य मनस्तोष संभव हो सके। श्लोक में काम शब्द से श्रृंगार रस का, धर्म शब्द से वीर रस का और मोक्ष शब्द से शान्त रस का ही संकेत किया गया है। वीभत्स, रौद्र, हास्य रस के तो नाम स्पष्ट ही दे दिये गये हैं। इसी प्रकार, नेपथ्य (अभिनय) शब्द से बालक, मूर्ख, महिलाओं आदि के लिए प्रयोजनीय करुण, अद्भुत, भयानक रसों का संकेत किया गया है। इस प्रकार, समाज के जीवन में उपर्युक्त आठो वर्ग के लिए ९ रसों की साधना बनी हुई थी। श्रुति के शब्दों में भी यही आशय यों ध्वनित है—'रसो वै सः रस ँ ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनंदी भवति; को ह्येवान्यत्कः प्राण्यात् यदेष आकाश आनंदो न स्यात्।' (अर्थात्) 'रस तो स्वयं वह साक्षी चेतन (परमात्मा) ही है। आनन्द उसी की उपलब्धि का द्योतक है। यदि वह न रहता तो कौन जीवित रह सकता था? मतलब यह कि इन ९ रसों का संबंध प्रत्येक वैदिक विधान में पूर्णतया सन्निहित प्रकट होता है।

इस विवेचन में आठो वर्ग के 'मनस्तोष' मानने की जो बात आयी है उसका स्वरूप भी वैदिक आदेशों के विधि-निषेधात्मक प्रकरणों में समझ लेना चाहिये। वैशेषिक न्यायकारों का मत है कि विद्या, शान्ति, सन्तोष प्रयुक्त सुख विद्वानों के लिए उपादेय होता है। महर्षि पातंजलि भी 'सन्तोषादनुत्तमः सुखलाभः' कहकर 'संतोष' को ही सर्वश्रेष्ठ सुख ठहराते हैं। टीकाकारों ने भी 'ब्रह्मरंध्रस्थितो देवः सुधया संप्लुतो यथा। तुष्टो गीतादि कार्याणि संप्रकर्षाणि कारयेत्॥' की व्याख्या में 'तुष्टः निरभिलाषः' कहकर 'सन्तोष' अर्थात् अभिलाषाशून्य अवस्था को ही परम सुख माना है। (इस श्लोक में कहा है कि अमृत में निमग्न और तुष्ट ब्रह्मरंध्रस्थ देवता ही गायनादि की प्रेरणा करते हैं।) शास्त्र-ग्रंथों में इस पर अनेक निर्वचन मिलते हैं। कहा है—

यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखं।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम्॥

(अर्थात्)—'लोक में जो भी कामात्मक और महान् दिव्य सुख हैं वे सभी 'तृष्णा त्याग' सुख के षोडशांश भी नहीं ठहर सकते। 'तृष्णा त्याग या निराकांक्षा का' मतलब अपनी आकांक्षाएँ 'अपने स्वत्व की वस्तुओं तक ही सीमित रखने के धैर्य' का है। ऐसे 'धैर्य' का ही पर्यायवाची शब्द 'संतोष' है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गंगालहरी में भी इसी आकांक्षा और तृष्णा त्याग रूप 'संतोष' की श्रेष्ठता निम्नलिखित श्लोक में व्यक्त है–

सुधातः स्वादीयः सलिलभरमातृप्ति पिवतां,
जनानामानंदः परिहसति निर्वाणपदवीम्।
यदन्तः खेलंतो वहुलतरसंतोपनिभृताः,
न काका नाकाधीश्वरनगरसाकांक्षमनसः॥

(अर्थात्)—'अमृत से भी बढ़ स्वादिष्ट गंगाजल यथेच्छ पीनेवाले का आनन्द निर्वाणपद को भी तुच्छ मानता है। गंगातटवासी संतोषधन कौवा तक इन्द्रपुरी का वैभव नहीं चाहता।' यहाँ लक्ष्य में लेने की महत्वपूर्ण वात यही है कि शब्द, प्रवंध, काव्यादि में वह शक्ति निहित है जो भावना को पक्की तरह मन में जमा देती है। निराकांक्षा की जो भावना यहाँ व्यक्त की गयी है उसे गीता में कथित 'यं लव्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः' (जिसे पाकर अन्य कुछ प्राप्तव्य नहीं रह जाता) के मर्म का ही निदर्शन कह सकते हैं।

निराकांक्षा अर्थात् सन्तोषमूलक धैर्य 'शुचिता' से उत्पन्न होता है। पातञ्जल सूत्र में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान आदि नियम कहे हैं। इनमें शौच क्या है, इसे वेद-वाक्यों द्वारा ही जाना जा सकता है। भारवि ने भी——

'शुचि भूषयति श्रुतं वपुः, प्रशमस्तस्य भवत्यलंक्रिया।
प्रशमाभरणं पराक्रमः, स नयापादितसिद्धिभूषणः॥'

इस श्लोक में 'शुचिता' को मूल और मानव शरीर की प्रतिष्ठा का आधार माना है। शुचिता सम्पन्न मानव शरीर का अलंकार शान्ति अर्थात् सन्तोष को वतलाया गया है। इस शान्ति और सन्तोष की शोभा क्रियाशीलता अर्थात् 'पराक्रम' में कही गयी है। यह पराक्रम अत्याचारमय नहीं वरन् नयपरक (नीतिसंगत) होकर शोभास्पद होता है जहाँ नीतिपरायणता रहती है वही 'सिद्धि'-प्रद वन जाती है।

मतलब यह कि एकमात्र वेद वाक्यों द्वारा ही ज्ञात हो सकनेवाली 'शुचिता' से उत्पन्न 'सन्तोष' ही उन ९ रसों की आत्मा है जिससे वैदिक समाज के आठो अंगों का अनुरंजन होता है। काव्य की ध्वनियों में, लावण्य में, सौभाग्य में, उत्कर्ष आदि में 'सन्तोष' रूप आनन्द ही तो मनुष्य को आत्मविभोर करता है। भोजराजकृत निम्नलिखित श्लोक में भी यही बात कही गयी देखें——

'तात्पर्यमेव वचसि, ध्वनिरेव काव्ये,
सौभाग्यमेव गुणसंपदि वल्लभस्य।
लावण्यमेव वपुषि स्वदतेंगनायाः,
श्रृंगार एव हृदि मानवतो जनस्य॥'

इन उपादानों में उपलब्ध 'आनन्द' परमात्मा की देन ही होता है। यह 'आनन्द' यदि भगवदीय 'ज्ञान'-प्रभा से संयुक्त हो सके तो उसे ही 'सत्व-गुण का उदय' कह सकते हैं। भावप्रकाश में कहा है—

'परस्मादात्मनो भांति ज्ञानानंदक्रियाप्रभाः।
ज्ञानप्रभा च सानंदा तस्याः सत्वं प्रजायते॥'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(अर्थात्)—परमात्मा के द्वारा ही ज्ञान, आनन्द और क्रिया की छटा जीव में प्रकट होती है। इस 'ज्ञान' की छटा और 'आनंद' की छटा का जब एक साथ संयोग बन जाता है तब जीव में 'सत्व'-गुण का उदय हो चलता है।

इस प्रसंग में, ज्ञान की 'छटा या प्रभा' क्या है? इसे समझने के लिए पहले 'यथार्थ' शब्द का मर्म हृदयंगम कर लेने की आवश्यकता है। इस बारे में शास्त्रकारों का मत है कि जो तथ्य जिस भाव में भगवान् को भासित होता है वह ठीक उसी भाव में जीव को भी भासित हो, उसके विपरीत न हो, अर्थात् जीव एवं ईश्वर की अनुभूति एक समान बन जाय, यही 'यथार्थता' है। मतलब यह कि 'यथार्थ बोध' वही 'ज्ञान' कहा जा सकता है जिसके आगे किसी वस्तु की जानकारी की कोई बात शेष रहती नहीं। अर्थात्, 'तत्वज्ञता' ही 'यथार्थता' है। इसे ही नैयायिक भाषा में 'नित्यज्ञानावृत्तिविषयिताशून्यज्ञानत्वं प्रमात्वम्' कहा गया है। उसी यथार्थ 'ज्ञान' की छटा से यह संपूर्ण जगत भासित हो रहा है। यही मर्म वेदान्तियों के मत 'तस्य भाषा सर्वमिदं विभाति' में व्यक्त है।

ज्ञान एवं आनन्दप्रभा जनित 'सत्व' पूर्णतया ईश्वर के ही ज्ञान पर आधारित होने के कारण वह पूर्ण-कोटि के अक्षुण्ण पारंपरीण उपदेशों के सहारे समझ में आ सकता है और उस संबंध की यथार्थ प्रेरणा भी तभी मिल सकती है। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो गया कि समाज के आठो वर्गों को जिस 'प्रेरणा' से आत्म-संतोष प्राप्त था वह उन्हें वैदिक समाज संघटन की अक्षुण्ण परंपरा से उपलब्ध थी। ज्ञानानंद की जिस संयुक्त प्रभा से उदित सत्वगुण की महिमा ऊपर कही जा चुकी है उसको ही तो वैदिकों ने समाज संघटन का मूल बतलाया है।

महर्षि वात्स्यायन ने भी इसी तथ्य को ध्यान में रख 'नगरे पत्तने खर्वटे वा महति सज्जनाश्रये स्थाने' के द्वारा नगर, कसबों और ग्रामों में ज्ञानप्रभायुक्त सज्जनों के बीच निवास को अन्य लोगों के लिए 'आश्रय-प्रद' बतलाया है। ऐसे पड़ोसियों के अभाव में सर्वत्र जंगल-सी अरक्षा तो स्पष्ट ही है। इसी दृष्टि से, 'संवासिभ्यो बलं सत्वमारोग्यं शीलमेव च' के द्वारा नीतिसारकर्ता ने भी बल, सत्व, आरोग्य और शील इन चार गुणों के परिचय का साधन पड़ोसियों को ही माना है।

जिन सात्विक प्रेरणाओं द्वारा इस समाज संघटन के भीतर आठो वर्गों का चित्त-संतोष होता रहा है उन्हीं के एक-एक अंश द्वारा, अन्यत्र भी समाज संघटित कर, अष्टवर्ग के चित्त-संतोष का साधन प्रयत्न चलता है। अतएव, इस विवेचन से स्पष्ट हो गया कि ईश्वरीय ज्ञानप्रभा से संयुक्त आनन्दप्रभा का परिचय एकमात्र 'शब्द' (वेद) द्वारा ही अक्षुण्ण परम्परा से हो सकता है। वेद के विधिभाग का वह कौन-सा अर्थ होगा जो अष्टांग समाज के अंगभूत विद्वानों का मनस्तोषकर हो, इसके मापदण्ड तो स्वयं विद्वान् ही होंगे। विधिभाग के अर्थ के बारे में भी हम यहाँ विचार करते हैं।

'वैदिक विधि'—भाग के विचार में उतरने से पूर्व, यह देख लें कि 'लौकिक विधि' में अर्थ किस प्रकार ग्रहण करते हैं। वही पद्धति 'वैदिक विधि'–भाग के अर्थ करने में भी उपयोगी हो सकेगी।

लोकविधि में देखते हैं कि 'तृप्तिकामः पचेत' (तृप्ति पाने के लिए भोजन पकायें) वाक्य में 'पचेत' क्रिया मुख्य है जो 'लिङ' (आदेश) सूचक है। इसी प्रकार, वेद वाक्यों में भी 'लिङ' का अर्थ ऐसा ही होना चाहिये जो समाज के अष्टांग का यथायोग्य चित्त-संतोष विधायक हो सके। तभी कहा जा सकेगा कि 'लिङ' का अर्थ ठीक हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर, जो व्यक्ति अनुभव एवं अनुमान के आधार पर, सब समझ-बूझकर भोजन पकाने के कार्य में स्वयं लगा हो उसे 'भोजन पकाओ' ऐसा आदेश देना कैसा होगा? यह तो हास्यजनक ही ठहरेगा। कारण, यहाँ आदेशात्मक अर्थ तो संगत बैठता नहीं। किन्तु, 'हास्य' में ही चित्त संतोष पानेवाले स्त्री-बालक-मूर्ख के लिए ऐसा अर्थ ही उपयोगी होगा और स्पष्टतः असंगत होते भी हास्य में उसकी 'संगति' रहेगी।

कुछ लोगों का मत है कि 'लिङ' (आदेश) का मतलब 'हितसाधक' होना चाहिये और 'पचेत' क्रिया का अर्थ 'पकाना हितसाधक है' ऐसा हो। विचार कर देखें कि क्या ऐसा अर्थ ठीक होगा?

स्पष्ट है कि 'पकाना हितसाधक है' ऐसा अर्थ उस व्यक्ति के समक्ष 'हास्य' की संभावना से मुक्त होगा जो स्वयं समझ-बूझकर पाचन कार्य में संलग्न है। हास्य पैदा ही तब होता है जब किसी भ्रामक प्रयोग के कारण वक्ता या श्रोता को लज्जा से सिर झुका लेने का अवसर आ जाय। उपर्युक्त अर्थ में ऐसे किसी भ्रम का कारण नहीं रहता, यह ठीक है। पर, इस अर्थ में एक यह त्रुटि तो खड़ी ही हो जाती है कि बालक-स्त्री-मूर्ख का चित्त-संतोषकर 'हास्य-तत्व' विलीन हो जाता है।

यहीं यह बात भी देख लेना उपयोगी होगा कि विधि का 'लिङ' (आदेश) अर्थ 'हास्य' एवं 'भ्रम' जनक रहते भी किस प्रकार यथार्थ है।

'विधि'-वचनों के अर्थ करने में मीमांसकों और नैयायिक श्री उदयनाचार्य प्रभृति का मत है कि 'लौकिक-विधि' वचनों में 'वक्ता की मंशा' ही उसका 'ग्राह्य-अर्थ' होगा। 'मंशा' का वही गौरवपूर्ण स्थान 'वैदिक विधि' वचनों के अर्थ करने में 'आदेश' को प्राप्त होता है। 'आदेश' के इसी स्वरूप का संकेत मीमांसकगण अपनी परि-भाषा में 'भावना' शब्द से कराते हैं। स्पष्ट है कि 'भावना' ही प्रवृत्तियों को अपने प्रभाव से जकड़े रहती है। इसलिए, किसी कार्य में प्रवृत्ति का मतलब ही यह है कि उस कार्य के प्रति तर्क द्वारा 'हित साधकता' समझ में आ गयी है। तात्पर्य यह कि 'लिङ' (आदेश) अर्थ में 'तर्क सिद्ध हितसाधकता' मीमांसक दृष्टि से स्वयं ही सन्निहित है।

यह तथ्य सामने रख 'पचेत' इस 'लौकिक आदेश' शब्द के अर्थ पर विचार करें। इससे स्पष्ट हो जायगा कि भोजन पकाने के 'आदेश' में वक्ता के हृदय की 'तर्कसिद्धहितसाधकता' की मंशा अन्तर्ध्वनित है और, वक्ता के उस 'आदेश' पर यदि किसीको 'हास्य' या 'लज्जा' का अनुभव होता है तो इसका हेतु उसका 'भ्रम' ही है। 'भ्रम' उत्पन्न होने का प्रत्यक्ष कारण यह है कि पकानेवाले व्यक्ति ने वक्ता के 'पचेत' आदेश में अन्तर्निहित 'हितसाधकता' की मंशा समझकर तो भोजन-परिपाक आरंभ किया नहीं, वरन्, स्वयं किन्हीं अन्य साधनों से 'हितसाधकता' समझ-बूझकर रसोई पकाने में व्यस्त है। इस पर, यदि स्त्री-बालक-मूर्ख आदि हँसते हैं तो इसी लिए कि वक्ता अपने आदेश के इस अंश की निरर्थकता को समझ नहीं सका और वक्ता को भी यदि 'लज्जा' की अनुभूति होती है तो केवल इसी दृष्टि से। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो गया कि विधि के अर्थ के संबंध में मीमांसकों का मत ही यथार्थ है।

इस विवेचन का सारांश यही है कि 'विधि' का 'आदेश'-मूलक अर्थ तभी सार्थक है जब उस 'आदेश' के पीछे 'अन्तर्निहित भाव में तर्कसिद्ध रूप से पूर्ण सन्तोष के साथ चित्त की प्रवृत्ति हो।' हित का ज्ञान अन्य प्रणालियों से होने की दशा में तो 'आदेश' का कोई मूल्य ही न रह जायगा। वह आदेशकर्ता के लिए 'लज्जा'' एवं मूर्ख श्रोताओं के लिए परिहास का कारण ही ठहरेगा। इससे स्पष्ट है कि 'हितसाधकता' और 'चित्तसन्तोष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की भावनाएँ 'आदेश' के आधार पर ही आनी चाहिये और 'हितसाधकता' समझने का एकमात्र आधार 'आदेश' को ही मानने की स्थिति दृढ़ होनी चाहिये।

इस प्रकार, यह बात अब सुस्पष्ट हो जाती है कि अति प्राचीन काल में वैदिक समाज जो सुसंघटित था और उसके अष्टांग में जो चित्तसंतोष परिव्याप्त था उनके मूल में 'वैदिक आदेश' और उसीके आधार पर 'हितसाधकता का तर्कसिद्धभाव' जमा हुआ था। इसका अपलाप कोई भी विवेकी कर नहीं सकता। महाकवि भारवि का भी कहना है—

अभिवर्षति योऽनुपालयन्विधिबीजानि विवेकवारिणा।
स सदा फलशालिनीं क्रियां शरदं लोक इवाधितिष्ठति ॥
चतसृष्वपि ते विवेकिनीं नृपविद्यासु निरूढ़िमागता।
कथमेत्यमतिर्विपर्ययं करिणी पङ्कमिवावसीदति ॥

(अर्थात्, कहते हैं—वैदिक विधियाँ ही बीज हैं। उनको विवेक जल से जो सींचता रहता है वह शरद की प्राप्ति से जगत के समान ही सफल होता है। तुम्हारी विवेकशालिनी बुद्धि आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति इन चारो विद्याओं में दृढ़ होते भी आज कीचड़ में हस्तिनी के समान क्यों फँस रही है?)

भारवि का यह वाक्य उपर्युक्त आशय में ही मननीय है।

इस प्रकार, उपर्युक्त विवेचन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन वैदिक समाज अपने को वैदिक मानने के साथ ही 'स्वाध्यायोध्येतव्यः' आदेश के अनुसार, अपनी शाखा के वेद के स्वाध्याय में कटिबद्ध था और इस 'आदेश' के आधार पर वह इसमें अपनी परम हितसाधना को तर्कसिद्ध मानता था।

यह कदाचित संभव है कि स्त्री-बालक-मूर्ख वर्ग समाज के भय से भी नियंत्रित रखा जा सके। पर, समाज के अंगभूत शेष अन्य ७ घटकों का नियंत्रण तो तब तक संभव नहीं जब तक उनके समक्ष सात्विक प्रेरणा न हो। कारण, उनका चित्त-संतोष तभी संभव हो सकता है। सात्विक प्रेरणा वैदिक समाज में सर्वथा विवेक-परायण थी जिसमें भय या आतंक की कहीं कोई बात ही नहीं। इसमें अन्ध विश्वास की कहीं गंध भी नहीं। सात्विक प्रेरणाएँ सत्व के ही आश्रित होने के कारण 'ज्ञानप्रभा च सानंदा तस्याः सत्वं प्रजायते' के अनुसार, ज्ञानप्रभा और आनन्दप्रभा का परस्पर संगम रहने से, भय-आतंक आदि का यहाँ प्रश्न आता ही नहीं।

अब यह विचार कर लेना शेष है कि चित्तसंतोष में आनंदप्रभा के साथ ज्ञानप्रभा का भी जो योग कहा गया है, इसमें यह 'ज्ञानप्रभा' कैसे आ जाती है? क्या वह वेद के शब्दों के आधार पर आती है अथवा प्रत्यक्ष आदि कोई अन्य सूत्र उसके आगमन का कारण बनता है?

इस बारे में, श्री वाचस्पति मिश्र ने न्यायवार्तिक तात्पर्य टीका में 'मंत्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्त-प्रामाण्यात्' सूत्र पर जो विचार किया है उसे देखें। उनका कहना है—'स्वयं भी शास्त्रकार होने का दावा करने वाले वेद-विरोधी बौद्ध आदि शास्त्रोक्त 'आयुर्वेद' के रसायनों का निर्माण करते थे। उन्हींके इतिहासों से यह प्रकट है कि वे निर्माण प्रसंग में आयुर्वेद में निर्दिष्ट प्रायश्चित्त आदि स्वेच्छया ही कर लेते थे। पाप न तो अपनी बुद्धि से समझ में आने की चीज है और पाप का नाश तो प्रत्यक्ष या अनुमान की भी तर्कना के बाहर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। ऐसी दशा में, बौद्धों में यह देखी गयी 'प्रायश्चित्त की भावना' आयुर्वेद के आदेशों के प्रति पारंपरिक सात्विक प्रेरणा पर ही आधारित कही जायगी।'

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आयुर्वेद के प्रायश्चित्त आदि आदेशों के प्रति वैदिक एवं बौद्ध-प्रभृति अवैदिक इन दोनों की पूर्ण संतोषयुक्त जो प्रवृत्ति देखी जाती है उसमें वैदिक आदेशगत सात्विक प्रेरणा' ही आधार है; किसी प्रकार का भय अथवा आतंक की कल्पना नहीं। आयुर्वेद के आदेशों के प्रति आज वह 'चित्त संतोषपूर्ण प्रवृत्ति' देखने में नहीं आती। तथापि, इतिहास से निःसंदेह प्रकट है कि वैदिकों-अवैदिकों में वैसी चित्तसंतोषपूर्ण प्रवृत्ति पहले थी और उस प्रवृत्ति की 'प्रेरकधारा' 'चित्त-संतोषपूर्णभावना' थी। वह 'चित्त-संतोषपूर्ण भावना' मयी प्रेरक धारा 'वैदिक आदेशों' से ही समाज के लोगों में उत्पन्न होती थी और प्रत्यक्ष एवं अनुमान द्वारा भी मंगलमय ठहरनेवाला 'जीवन दान' देती रही है।

इस प्रकार, यह सिद्ध हो गया कि जहाँ वैदिक समाज को चित्तसंतोषपूर्ण सात्विक प्रेरणा देनेवाला वैदिक आदेश ही समाज-संघटन का मूल था, वहीं यह भी सिद्ध हो गया कि उस आदि समाज-संघटन का नियामक वेद भी अपौरुषेय है।

इतना विवेचन कर लेने के अनन्तर उस मर्म को ध्यान में लेना उपयोगी होगा जिसके आधार पर उक्त तर्कना आधारित है।

'स्वाध्यायोध्येतव्यः' एवं 'धर्म चर' (अर्थात् स्वाध्याय चलाते रहो और धर्म के आचरण में लगे रहो) इन वैदिक अनुशासनों के पालन द्वारा धर्मानुष्ठानीजन सात्विक प्रेरणाएँ प्राप्त करते रहे और उन्हें आत्म-सन्तोष भी मिलता रहा। वे स्वाध्याय, तपस्या, ईश्वर-चिन्तन आदि कार्य सानन्द चलाते रहे और एकांततः 'वेदनिर्दिष्ट कर्त्तव्य' मान परंपरया उस आत्म-सन्तोष का निष्ठापूर्वक लाभ उठाते रहे। 'राजकीय आज्ञा' मानकर उन कर्त्तव्यों के पालन जैसी कोई बात इसमें न थी और न यही था कि प्रत्यक्षवादी तर्कनाओं द्वारा हिताहित समझ उनका व्यवहार चलता रहा हो। सारांश यह कि कर्त्तव्य पालन का उक्त क्रम एकांततः 'वैदिक आदेश' होने के ही कारण पूर्ण सात्विक सन्तोषपूर्वक चलता रहा।

आयुर्वेदिक रसायनादि औषधियाँ सफल कोटि की बना पाने के लिए बौद्धों तक ने अपने प्रभुत्वकाल में 'पापनाशक अनुष्ठानों' की आवश्यकता सन्तोषपूर्वक स्वीकार की। उनके ऐसे सन्तोष और स्वीकृति से वेदवाक्यों की परंपरागत मान्यता स्पष्ट होती है। कारण, 'अदृष्ट पाप और उनको नाश करने की विधियों' का उपयोग या प्रयोजन प्रत्यक्ष या अनुमान से विदित हो सकने की चीज नहीं। उसे तो औषध के गुणाधान से ही जाना जा सकता है। बौद्धों के प्रभुत्वकाल में उन्हें वैसी मान्यता के लिए वाध्य करनेवाले किसी 'शासन भय' की भी वात न थी। मतलब यह कि धर्मनिष्ठ जन और बौद्ध यह दोनों ही वेदों के प्रति मान्यता की पारंपरिक भावना से उन कर्तव्यों के पालन में आत्म-सन्तोष प्राप्त करते रहे हैं।

'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' (अपनी शाखा के वेद का स्वाध्याय करें) इस वैदिक वाक्य की प्रेरणाशक्ति के आधार पर धर्मानुष्ठानी मनु आदि उस कार्य में अपनी हितसाधना तर्कसिद्ध मानते थे। मनु आदि की ऐसी मान्यता का एकमात्र हेतु पूर्व परम्परा से उसी रूप में प्रचलित वेद के आदेश की विलक्षण प्रेरणाशक्ति ही थी। उनकी मान्यता में हेतु किसी शासन का आदेश अथवा प्रत्यक्ष-अनुमान आदि की तर्कता न थी। इससे स्पष्ट है कि वेदों के आदेश की सात्विक प्रेरणा में ही उन्हें अपनी हितसाधकता का बोध प्राप्त था। बौद्धादि वेदविरोधी भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयुर्वेद के रसायनों के निर्माण के संबंध में प्रायश्चित्तादि का पालन शास्त्र-आदेश की सात्विक प्रेरणा से ही करते थे। अपनी तर्कना से उद्भूत उनकी वैसी प्रेरणा न थी। कारण, पाप-नाश का प्रकरण बुद्धि से समझ में आने की चीज नहीं और पापनाशार्थ की गयी क्रिया के फलस्वरूप औषध में उत्पन्न लाभकारी गुण प्रत्यक्ष देखने में आता है।

अतः यह सिद्ध हो गया कि वैदिक और अवैदिक इन सभी के बीच परंपरया वैदिक आदेशों में सात्विक प्रेरणा की धारा चली आ रही है। आज भले ही वेद के शब्दों और आदेशों में 'हितसाधकता' के बोध की वह धारा हमें मिलती या न मिलती हो, पर, वेदों के शब्दों के उच्चारण की विधि में तो परंपरा की वह धारा आज भी अक्षुण्ण चली ही आ रही है और इसमें किसीको क्या सन्देह हो सकता है।

प्रकाशन विभाग

इस विभाग द्वारा पुस्तकों का प्रकाशन समय समय पर किया जाता है। निम्नलिखित पुस्तकें इस विभाग द्वारा अभी तक प्रकाशित हुई हैं—

१ शास्त्रार्थविचारपद्धति

२ अवच्छेदकत्वविमर्श

३ विद्वत्परिषदः कर्माङ्गत्वविचारः

उक्त पुस्तकें एवं म० म० पञ्चानन तर्करत्न द्वारा निर्मित सर्वमङ्गलोदय नाटक योग्य व्यक्तियों को विना मूल्य वितरित की जाती हैं।

भारतीय समाज शास्त्र अथवा सनातन धर्मतत्त्वप्रणाली मू० १।।) (गणेशोत्सव समिति द्वारा प्रकाशित)
शान्ति का अग्रदूत (भारतीय राजनीति का दिग्दर्शन)
श्री पं० प्र० राजेश्वर शास्त्री द्राविड महोदय के व्याख्यान का संकलन हिन्दी में मू० ३)
श्रीगणेशसहस्रनाम मू० ।) (वि० सं० वि० विद्यालय ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित)।

काशी से अन्यत्र निवासियों को पोस्टेज खर्च देना पड़ेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वल्लभराम शालिग्राम साङ्गवेद विद्यालय

संचालक मण्डल

श्री मुरारीलाल मेहता (अध्यक्ष)

श्री गिरधारीलाल मेहता

श्री मनोहरलाल मेहता

श्री गोविन्दलाल मेहता

श्री हरिलाल मेहता

कार्यकारिणी समिति

श्री पं० राजेश्वर शास्त्री द्राविड़ (अध्यक्ष)

श्री पं० हरिराम शास्त्री शुक्ल

श्री डा० कौशलपति त्रिपाठी

श्री दामोदर दास खन्ना

श्री पं० वैकुण्ठराम झा

श्री पं० उदयकृष्ण नागर (मंत्री)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक–श्री मुरारिलाल मेहता, श्री गिरधारीलाल मेहता, रामघाट, वाराणसी ।
मुद्रक–पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu